Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

कुल पृष्ठ-14

K. L. Anand
~~TECHNICAL DIRECTOR~~

united oil mill machinery & spares private Ltd.

OFFICE : D-298, DEFENCE COLONY, NEW DELHI-24 (INDIA)
Telephone : 623809 & 621201
Cable : "CLAPRAN"

ॐ

25-8-58
श्रावन शुक्ल दशमी-२०१५
रविवार

"पुण: दर्शन"

ले. कस्तूरीलाल आनन्द

१९४४ की बात है - लिख रहा हूं १९५८ में। इस बीच के कुछ संस्मरण जो याद हैं, उनको लिखता हूं। अबतक जब भी उन १९४४-४५ के दिनों की याद आती है, विशेष आनन्द का अनुभव होता है, इसी कारण तो यह लिखता हूं।

स्यालकोट शहर में हर रविवार मन्दिर श्री राम तलाई में भगवान श्री कृष्ण मन्दिर के सामने वाले हाल में कथा-कीर्तन का प्रोग्राम होता था। वहां मैं भी श्री गीता भवन के अन्य प्रेमियों के साथ जाता था। सतसंग के फल मिलने का दिन ही समझो आ गया। एक ऐसे ही रविवार को (1955 के अश्विन नवरात्र हो चुके थे) मन्दिर में श्री सरदारी लाल जी के साथ जाते हुए मन्दिर में ही एक कमरे में ठहरे हुए एक महात्मा जी के दर्शन हो गये। जाते जाते साधारण प्रणाम कर कीर्तन में चला गया। उनकी नज़र पड़ जावे, यही बड़ा सौभाग्य है, बस ऐसी ही कृपा दृष्टि उनकी पड़ने से कीर्तन में उनका ख्याल आता रहा। कीर्तन के बाद कुछ उपदेश का प्रोग्राम होता था। उसके लिये मैं ही सौभाग्यवश उन महात्मा जी के पास उपदेश देने की प्रार्थना करने को गया। उन्होंने बड़े ही मीठे शब्दों में वहां आने से इन्कार कर दिया। बाकी प्रोग्राम समाप्त कर मैं और भी कई सतसंगी भाईयों के साथ फिर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ - वहां उनके पास एक और महात्मा जो प्राय: कम बोलते थे और अवधूत सी अवस्था में थे - जो उनके विराजमान थे। पीछे पता चला कि वह श्री राम सिंह जी थे - ~~जो भरतपुर निवासी थे~~। वहां बात-चीत में उन महात्मा जी ने (जिनको मैं मिलने की चाह से ही घूम रहे थे)। (तबसे 'श्री स्वामी जी' कहने लगा - ~~और आगे भी उनके लिये 'श्री स्वामी जी' या 'श्री जी' का ही प्रयोग करूंगा~~) श्री गीता जी के 11 अध्याय के 54 श्लोक का अर्थ समझाते हुए 'ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप' का बड़े ही प्रेम से और विद्वत्ता पूर्ण अर्थ किया, जिसका प्रभाव वहां सभी उपस्थित गीता प्रेमियों पर पड़ा। मैं तो अब समझता हूं कि उनका स्यालकोट में आना शायद मेरे ही लिये हुआ हो। इस बार उनके उसी दिन के तीसरे दर्शन थे, और अब की बार तो उनके पास ही बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैं अर्थ सुनता था, उनकी तरफ देखता था,

Works : 24th Milestone Delhi Mathura Road, Ballabgarh (Haryana) Tele : 88450 & 88475

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

और उसके साथ साथ खिड़कीसे बाहरके पीपल वृक्षको देखता था। उस समय मेरे मनकी अवस्था मुझे तबसे आजतक याद ही नहीं आती - हो सकता है मनकी कोई अवस्था ही नहीं हो तो यह शांत ही थी, इस लीये कुछ याद नहीं।

श्री स्वामी जी का तबका रूप बड़ा ही आकर्षक था। हलके गेरुवे रंग के उनके वस्त्र थे, पासमें ही एक चिप्पी तथा एक बड़ा सा सोटा पड़ा था। साधारण वस्त्र का बिछा हूआ उनका आसन था, उसपर वह दृढ़ आसन से बैठे थे। उनका विशाल मस्तक, बड़े बड़े कान, शांत मुख मुद्रा और सबसे बढ़कर उनका देखना बस यह उनही जैसा है एक कविने ठीक ही लिखा है

— न देखने की नज़र में कुव्वत न दूर रहनेका दिलपे काबु —

थोड़ा समय वहां उस शान्तिका लाभलेहम सब अपने अपने घरों को चलेगये। खाना खानेके बाद हम लोग फिर गीता भवन में सतसंग कीर्तन के लीये आते ही थे। वहां जब सब आ गये तो सबने यही रायदीकि उन स्वामीजी को यहां आने की प्रार्थना करें। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनके दर्शन करनेके बादसे तबतक सब उनको ही सोचते रहे हैं। तब उसी समय सब गीता प्रेमियों के साथ मैं फिर उनकी सेवा में हाज़िर हुआ। उनसे गीता-भवन आनेकी प्रार्थना की। श्री स्वामी जी किसीके घर में रहना नचाहते थे। उनसे बताया कि वहां सतसंग के लीये २ कमरे-रसोई का मकान कराये पर लिया है, वहां एकांत होहै, तब उन्होंने चलकर देख आनेको मान लीया। सबको बड़ी प्रसन्नता हूई। उनका सामान क्या था— एक छोटा सा आसन या बिस्तर जो बग़ल में आजाता था, एक झोला, एक चिप्पी तथा सोटा। इस तरहसे उस रविवार को उनके चौथी बार दर्शनकर हम उनको गीता भवनमें ले आये।

रातको रोज़ गीता भवन में सतसंग कीर्तन होताथा, वहां उस दिन श्री स्वामी जी को प्रार्थना की कि आप कुछ उपदेश देवें, पर उन्होंने कहा कि आपलोग जो करते हो करें और श्री स्वामी जी छत पर विश्रामके लीये चले गये। इसी तरह आप २-३ दिन वहां रहकर वहां के कार्यक्रम को देखते रहे, हम रोज़ उनसे कुछ कहने को कहते थे, पर आप बड़े प्रेमसे ना कर देते थे। सो एक दिन उन्होंने बड़ी कृपा कर हमारी प्रार्थना स्वीकार कर सतसंग में आ गये।

मैं ने प्रार्थना की कि महाराज कुछ उपदेश देवें — तब उन्होंने कहा कि कुछ उपदेश का क्या अर्थ होता है, उपदेश तो जिज्ञासुकी जिज्ञासा पर ही होना चाहीये, जैसे औषधी का निर्णय तो रोगीके रोगके अनुसार ही होगा। बात बड़ी ठीक कही उन्होंने। तब मैं ने गीताजी के किसी श्लोक की व्याख्या करनेकी प्रार्थना की। उसका उत्तर उन्होंने दिया कि आप किस अध्यायका कौन सा श्लोक सुनना चाहते हैं, तब मैं ने कहा कि १५ अध्याय का पांचवां श्लोक। तब उन्होंने कहा कि मैं श्लोक पढ़कर सुनाऊं — मैं ने श्लोक सुनाया, तब आप फिर कहने लगे कि इसका जैसा भी अर्थ मुझे आता है— मैं कहूं — तब मैं ने उसका अर्थ किया — इस प्रश्नोत्तर में मैं उनके कितना नज़दीक आ रहा हूं, इस बातको अनुभव अब होता है। उस वक्त तो आपजैसा कहतेगये मैं करता गया। तब आपने बड़ी कृपा कर उस गुह्य शास्त्र (१५ अध्याय) के ५वें श्लोक का बड़े ही विस्तारसे अर्थ समझाया। वहां हम रोज़ ही गीता पर कोई न कोई टीका

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सकते थे, वहां आये कई महात्माओं से गीता जी के अर्थ भी सुनते थे, पर वैसा अनुभव पूर्ण अर्थ हमारे को सुनने का न मिला था। हम सब प्रसन्न थे — इसी बात पर कि इस से हमें रोज कितना अच्छा अच्छा उपदेश सुनने को मिलेगा। सतसंग समाप्त हो सब लोग अपने घरों को चले गये। श्री स्वामी जी के साथ अपने श्री सरदारीलाल जी वहां ही रहते थे।

दूसरे दिन फिर रात को हम सब बड़े चाव तथा उत्साह से सतसंग के लिये इकट्ठे हुए कि देखें आज कैसी अमृत वर्षा होती है। श्री गीता जी के पाठ के बाद फिर स्वामी जी को उपदेश की प्रार्थना की गई। उसका उत्तर जो उन्होंने दिया वह आजतक हृदय में है, और तब से किसी से कुछ पूछने की विशेष प्रवृत्ति ही नहीं होती। (हां अब उनसे पूछने में ज्यादा संकोच नहीं, पर आप कृपा कर स्वयं ही इतना बता देते हैं, और उनके इन १४ वर्ष के परिचय से कुछ पूछना बाकी नहीं रहा — कमी है तो अपने करने में ही — उसकी जब जैसी पूर्ति होनी है, वह भी आप ही जानते हैं। बच्चा मां की गोद में चला जावे यही उसका सौभाग्य है, फिर और चिंता उसको क्या करनी है — अब भी जब जो चिंता मैं कभी करता भी हूं वह सब पहले स्वभाव दोषसे ही है — उनके उपदेश — सतसंग के थोड़े विचार से निश्चिंतता प्राप्त होती है — अस्तु)

आप ने उस समय जो कुछ फरमाया वह इस प्रकार है "कई आदमीयों को उपदेश सुनने का रोग सा होता है। उसी तरह कई महात्माओं को भी उपदेश देने का भी रोग सा ही होता है। मैं उनमें नहीं जो उपदेश देते ही रहते हैं। हां किसी का सतसंग सम्बन्धी कोई <u>अपना</u> प्रश्न हो, वह पूछे, उसमें कुछ कहने की ज़रूरत हो तो मैं कह सकता हूं। कल आपको एक ही श्लोक से उस अव्यय पद को प्राप्ति का मार्ग बताया था। क्या आप सबने उस पर कुछ विशेष मनन किया — क्या कुछ अनुभव किया — अगर नहीं तो और कहने का क्या लाभ होगा। फिर भी आप सब की इच्छा है तो फिर उसी श्लोक के पहले दो ही गुणों का वर्णन आज फिर किया जाता है — वह हैं — निर्मान मोहः — मान और मोह रहित होना। इस पर कल सारा दिन विचार कर जो आप में से आकर कह देगा कि मैं आज सारा दिन अपने व्यवहार काल में मान और मोह से रहित रह सका हूं, उसी को आगे उपदेश होगा — वैसे नहीं होगा"

तब उन्होंने बड़े ही विस्तार से मान और मोह से रहित जीवन पर व्याख्या की। उन्होंने उसे हर एक कैसे अपने जीवन में ला सकता है, वह व्यवहारिक ढंग भी बताए। बड़ी सुन्दर व्याख्या थी (~~तबसे आजतक न तो हमने छाती पर हाथ रखकर कहा कि हम मान और मोह से रहित हो गये और नाही आगे उस तरह के उपदेश सुने — वैसे~~ उनकी कृपा से कई कई तरह जीवन को उच्च ज्ञानमय बनाने के साधन उनसे सुनने को प्राप्त होते रहे ~~और भी हैं~~) उसके बाद हम में से किसी ने यह दावा नहीं किया कि महाराज मैं मान और मोह से रहित हो गया हूं, मुझे आगे का बतायें।

इसी तरह रोज़ सत्संग होता था। उनकी हर बात — चीत से उपदेश ही मिलता था, पर जल्दी ही कार्तिक मास आ गया और श्री स्वामी जी ने कार्तिक का सारा महीना ही मौन धारण कर रखा। आप सतसंग में बैठते थे — सतसंग पहले की तरह चलता था, उनके वहां रहने से भी हम सब को विशेष उत्साह रहने लगा।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

श्री स्वामी जी का शरीर ज्यादा सुदृढ़ नहीं था, लेकिन चेहरे पर एक विशेष ही चैतन्य था। अपने को तो पता नहीं क्या बात थी कि श्री स्वामी जी के सिवा कुछ अच्छा ही नहीं लगता था। उस वक्त हम सब किसी विशेष कारण से उनकी तरफ खिंचे जा रहे थे। यह उनकी अपनी कृपा ही थी। हम वहां सब आने वाले महात्माओं का आदर सत्कार तो करते ही थे, पर कई एक ऐसी घटनाऐं घट चुकी थी जिनसे हम सतर्क से रहते थे. इसीसे कुछ कुछ आलोचनात्मक स्वभाव भी सबका बन ही गया था। पर श्री स्वामी जी के लीये किसी को कभी कुछ कहने का मौका न मिला। सभी उनसे प्रेम आदर करते थे। इस बारे में मुझे याद आता है कि एक बार दो व्यक्तियोंने उनके बारे में कुछ कहा था, पर उसका कुछ बना नहीं, फिर भी मैं आगे उसका उल्लेख करुंगा। मौनमें एक बार स्वामी जी के कमर में दर्द हुई थी, तब माता जीने उनके लीये कमरकस (एक औशधी) की खीर खाने को दी थी। इसी मौन अवस्थामें उनके हाथका एक कागज़ पर कुछ लिखा हुआ अभी तक मेरे मेरे पास है (~~अब पता नहीं यह कागज कहां है उसकी Photostat साथ भेज रहा हूं~~)। श्री स्वामी जी के खाने पानका हम विशेष
१ ध्यान न रख सके, जो घरमें बनता था, वही आप ले लेते थे। आपको लाल मिर्च अच्छी न लगती थी, आप खानेसे मिर्चोंके बीज चुनकर निकाल दिया करते थे। भोजन आप एक समय ही करते थे। आपको आमले विशेष प्रिय थे। इसी पर याद आता है कि हमारे पूछने पर कि महाराज आपका नाम क्या है या हम किस नामसे आपको याद रखेंगे तो आपने कहा था कि मुझे "आंवलेवाला महात्मा" इस नामसे याद कर लेना। भोजन वगैरह का विशेष प्रबंध न होने पर भी उनको स्यालकोट का जल वायु अनुकूल ही आया, इसी लीये और अब ख्याल आता है कि हम पर विशेष कृपा से आप लगभग ६ मास वहां रह गये। ~~उस वक्त की सब बातें न तो याद रही हैं, फिर भी सोचकर लिखा जावे तो बड़ा बिस्तार हो जावेगा~~।

मौन के बाद हमारे सतसंग का और ही रूप हो गया था। श्री गीता पाठके बाद बहुतसा समय श्री स्वामी जी की बातें सुनने में ही बीतता था। बातें सभी को प्यारी लगती थी। सब इस तरह सुनते थे कि छोटे बच्चे अपने मां बाप से कहानीयां सुन रहे हों। कहानियों में कशमीरका काफी ज़िकर आता था। वहां के कई सिद्ध महापुरुषों के जीवनकी बड़ी अच्छी अच्छी बातें सुनने को मिलीं। आप कई बार अपने बारे में हुई घटनाओं का भी ज़िकर करते थे, पर हम एक बात नोट करते थे कि आपने कभी किसी व्यक्ति या शहर का नाम ऐसे नहीं लीया जिससे उनके बारेमें पता चल सके कि आप कौन हैं, कहां से आये हैं, कहां रहते हैं, इत्यादि कई बार पूछने पर उन्होंने यही उपदेश दिया कि महात्माओं को यह पूछना नहीं चाहीये, तबसे हम ने पूछना छोड़ ही दिया।

मेरा घर सतसंग के नजदीक था, और जहां मैं काम करता था, वह जगह भी दूर न थी। सवेरे उठकर नहाने इत्यादिके लीये गीता भवन ही चला जाता था, और वहां से ऐसे समय घर आता था कि कपड़े बदल, नाश्ता कर, कार खाने ~~को~~ वक्त पर पहुंच जाऊं, और यह सब काम मैं कोई १५-२० मिन्ट में ही कर लेता था। दोपहर की खाने की छुट्टी में भी जल्दी ही खाना खाकर श्री स्वामी जी के पास आ जाता था ~~(बातें होती थी, प्राय: इस समय बातें ही होती थी)~~। शाम को छुट्टी के बाद फिर उनके दर्शन होते थे और रात को खाना खाने

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

आध्यात्मिक

के बाद सतसंग में उनके पास बैठ कर बातें सुनते थे। रात १० बजे (आरती कर सतसंग समाप्त होता था। उसके बाद भी प्रायः रोज़ ही ११—११½ और कभी कभी १२ बजे तक चर्चाएं होती रहती थीं। (इन वक्त की बातों से पता नहीं क्यों एक बार दो व्यक्तियों को अच्छा नहीं लगा, इन्होंने विरोध किया कि अब सतसंग तो कुछ होता नहीं, बस बातें ही बातें होती हैं। इसका विशेष असर हुआ नहीं, बातें वैसी ही चलती रहीं।)

श्री स्वामी जी विशेष विद्वान हैं—यह तो यथार्थ विद्वान ही जान सकते हैं, परफिर भी हमने तबतक जो कुछ सुना, देखा, उसके आधार पर कह सकते थे कि आप उच्च कोटि के विद्वान हैं। श्री सरदारी लाल जी संस्कृत पढ़ते थे, एक बार श्री स्वामी जी के कहने पर उनके लिये संस्कृत व्याकरण का अमर कोश लाया था। श्री स्वामी जी को सब कंठस्थ था। वैसे विद्वान होते हुए भी श्री स्वामी जी सरल स्वभाव के थे। आप हर बात सच्ची सच्ची कहते थे किसी तरह से बढ़ा चढ़ाकर बात करना, यह उनका स्वभाव न था—~~यह हमको तभी पता चल गया था~~। आप की बातों से पता चलता था कि आपका लालन, पालन किसी विशेष सम्पन्न और अच्छे पंडितों के घर में हुआ है। आपने अपने जीवन की कई घटनाएँ बड़े ही सरल भाव से सुनाई थी, पर किसी से उनका परिचय न मिलता था, हमने इस की जिज्ञासा भी छोड़ दी थी।

मैं तो हिन्दी भी अभी तक शुद्ध नहीं लिख सकता—विद्वानों की बात क्या जानूं। मुझे तो उनसे मिलने से एक विशेष ही आनन्द मिलता था, यह मैं अब जानता हूं। उस वक्त तो आनन्द आता है या नहीं आता है—यह भी सोचने की गुन्जाएश न थी, बस यही प्रयत्न होता था कि उनके पास रहें—उनकी बातें सुनें। अच्छे गुणों से सभी प्यार करते हैं, और दोष निकालनेवाले तो गुणों [redacted] में भी दोष निकाल सकते हैं। अपना स्वभाव भी कुछ छान बीन करने का था, पर श्री स्वामी जी के लिये दूसरी ही बात थी। मुझे तो उनके पास रहना है, बातें सुननी हैं, और उनके पास न रहनेपर सुनी हुई बातें याद करनी है, बस यही मानों मेरा काम था। इससे घर वालों को कुछ चिंता भी हो गई थी कि मैं शायद कहीं भाग न जाऊं और एक बार यही चिंता बड़ा भयानक रूप धारणकर सामने भी आई, जिससे श्री स्वामी जी पर वृथा ही माता जी ने रोष दिखाया था, पर इसका कोई असर न हुआ। मेरे दिलमें उनका प्यार बढ़ता गया (~~मैं आज २४ वर्ष बाद जब यह लिख रहा हूं, साथ साथ सोचता हूं, कि इसका कारण क्या था। कुछ समझ न आते हुए भी कुछ कुछ समझ आता है।~~) श्री स्वामी जी आत्मरूपसे सभी के अपने ही हैं, इस लिये उनसे प्रेम बढ़ता था। संसार के प्रेममें स्वार्थ भरा है, इसका अनुभव मुझे अपने जीवनसे हो गया था। श्री स्वामी जी भी मुझे प्रेम करते थे, यह भी मैं सुनता था। मुझे ~~इन दिनों कारखाने के काम से कई बार लाहौर जाना पड़ता था, तब श्री तिलकराज जी के साथ सैर करते स्वामी जी सैर को भी याद करते थे~~, इससे मेरा प्यार बढ़ता था। मुझे पहली बार ही निस्वार्थ प्रेम की कुछ प्राप्ति हुई। मेरा स्वभाव कुछ भावुकता का था, इसलिये भी मैं उनसे प्यार करता था। श्री स्वामी जी ऐसे ही थे कि उनसे प्यार किया जावे, तभी मैं भी करता था। वैसे मैं क्या करता था, यथार्थ तो यह कि वही करते थे। कुछ कर तो स्वतंत्र ही सकता है, परतंत्र भला क्या करेगा। इन २४ वर्षों पर फिर से

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

विचार करने पर पता चलता है कि स्वामी जी मेरे सभी कुछ थे। गुरु, सज्जन, मित्र, भाई, बाल, माँ सभी तरह का प्रेम था मैं ने उनके साथ रह कर अनुभव किया। पिछले जन्म को मैं मानता हूं और सुना भी है कि कई बार पिछले सम्बंध के कारण भी प्रेम होता है। सो ऐसा भी लगता है कि पिछले जन्म में उनके साथ सम्बंध रहा हो। इससे कोई यह न समझे कि मुझे पिछले जन्म की याद है। भगवान यह याद भुला देते हैं, यही उनकी कृपा है। इसी जन्म की बुरी घटनाएँ याद कर जब सुखी दुःखी होना पड़ता है, तब तो यह भगवान की सब पर कृपा ही है कि पिछले जन्मों की याद नहीं। कुछ भी हो श्री स्वामी जी ने मुझे अपनाया, इसकी याद कर मेरा मन अब भी प्रसन्न हो जाता है।

उन दिनों श्री स्वामी जी से कई एक नये ग्रन्थों के नाम सुने। उनके कहने से एक बार "विज्ञान भैरव" लाहौर से लाया था। बड़ी अच्छी अच्छी धारणाएं उसमें दी थी। श्री स्वामी जी से उनका विस्तार से अर्थ सुनने को मिला। श्री स्वामी जी संस्कृत के कई सुन्दर सुन्दर श्लोक सुनाते थे, फिर उनका अर्थ कर समझाते थे (आप जब श्रीमद् भागवत के

सतां प्रसंगान्मम वीर्यसंविदो भवन्ति हृत्कर्णरसायनाः कथाः। या रहूगणैतत्तपसा न याति न चेज्यया निर्वपणाद् गृहाद्वा।

श्लोक सुनाते थे तो उनकी मुख मुद्रा देखने योग्य ही होती थी। महत्पादरजोभिषेकम् का सही अनुभव उन्हों ने किया है, यह उनकी तरफ देखने से पता चल जाता था। एक और श्लोक ~~सुनाते [illegible] कहते थे कि एक पुस्तक के चौथे अध्याय का श्लोक है — यह श्लोक~~ इतनी बार सुना कि याद ही हो गया। वह था —

यामामनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं विद्येति यां श्रुतिरहस्यविदो वदन्ति।
तामर्धपल्लवितशंकररूपमुद्रां देवीमनन्यशरणः शरणं प्रपद्ये॥

इसी पुस्तक का एक और श्लोक जब आप सुनाते थे, तो ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे कोई अपनी देखी बात कह रहा हो। इस श्लोक का विशेष भाव तो न तब समझ आया और न अब ही, पर यह श्लोक उनको बड़ा प्यारा था, यह तब भी पता चलता था और अब भी। वह था —

कल्पद्रुमप्रसवकल्पितचित्रपूजामुद्दीपितप्रियतमामदरक्तगीतिम्।
नित्यं भवानि! भवतीमुपवीणयन्ति विद्याधराः कनकशैलगुहागृहेषु॥

इसी तरह रोज नये नये भाव पूर्ण श्लोक, महात्माओं के जीवन चरित्र, कई पुराने इतिहास, कई नई नई हुई आध्यात्मिक घटनाएं. यह सब उनसे सुनने को मिलता था। आप स्वतंत्र विचार ही प्रगट करते थे, वह हमें जंच जाते थे, यह उनकी कृपा ही थी। अद्वैत सिद्धांत को समझाने का उनका ढंग शास्त्र सम्मत होने पर भी निराला ही होता था। जब कभी वह अपने ही जीवन की कोई घटना बताते थे, तो पता चल जाता था कि आप हर बात को बिना ही बढ़ाए, घटाए बता रहे हों। क्योंकि उनने कई बार ऐसे भी वृतांत प्रसंग से बताए, जो प्रायः जिनको कोई मान आदर करे — वह नहीं बताते।

[illegible]

इन सब बातों से हमें विश्वास पक्का होता जाता था कि आप यथार्थ सच्ची ही बात करते हैं। आपने अपने जीवन के कई एक दिव्य घटनाएं जब बताई, तो उन पर भी स्वभाविक ही सुनने वाले का विश्वास होता था। उनमें कई बातें तो ऐसी हैं कि जब कोई विद्वान उनको

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

चरित्र लिखे, तो उनको ठीक ढंगसे लिख सकता है, इसीलीये मैं उनका उल्लेख नहीं कर रहा, ~~सिर्फ~~ ~~नोट करनेके लीये ही मैं उर्दू में यहां कुछ लिख रहा हूं ताकि हर कोई इसे न पढ़ सके। (Note अब प्रायः सब बातें उनकी अपनी लिखी पुस्तकमें आ गई हैं — 7/85)~~

اپنے ہر روز جنم کی باتیں - 3 جنم کی یادداشت - دل مٹ کے درشن - پانچ گرنتھوں کے درشن - بھگوان کرشن سے گیتا پڑھنا - [illegible]

[illegible] سے گیا پرشن (دروساتی) نے آ کر آسن لگا - [illegible] کا ابھیاس کرانا - [illegible] کا ہونا -

اپنے ہر روز آپ [illegible] - [illegible] کے پاس ایک خاص بات - [illegible] منتر کے بارے میں ایک [illegible] کے درشن [illegible]

ایک بار [illegible] منتر کا [illegible] کرنے میں انکی دو [illegible] وغیرہ وغیرہ۔

जहां आप मन और आत्मा की पवित्रताका पूर्ण ध्यान रखते थे, वहां बाहर की सफाईका भी विशेष ही ध्यान रखते थे। कपड़े, कमरा, हाथ, पाऊं व जो कुछ भी उनके नजदीक चीज़ आती थी उसकी स्वच्छताका आप ख्याल रखते थे। एक बार आप गीता भवन पर ठहरे हुए थे, तब आपने वहां की सीढ़ियोंको स्वयं ही जलसे ऐसा साफ धो दिया कि सभी दंग रह गये। हम तो कभी कभी वैसे ही झाड़से सफा कर देते थे, पर तबसे हम वहांकी हर चीज़की सफाई का ध्यान रखने लग गये

उनके आनेसे पहले हम गीता ज्यन्ति पर रथ निकालना, श्री कृष्ण तथा श्री राम जन्मोत्सव मनाना, श्री गीताजी के प्रचारके लीये हिन्दी तथा गीता जी की क्लासें लेना, राम तलाई मन्दिरमें गीता जी की कथा कहना, इत्यादि बहुतसे प्रोग्राम ऐसे करते थे, जिनसे लोगों का कल्याण होगा, प्रचार होगा, इत्यादि भावनाएं थीं। इस सबके लीये अर्थ संचयमें विशेष ध्यान रखते थे कि अपने ही परिचित, तथा गीता प्रेमियोंसे ही कुछ लीया जाता था। हमारा सब कार्य बड़ी ही अच्छी तरह चल जाता था। हम दूसरी सभा सुसाईटियों की तरह चुनाव वगैरह के हकमें न थे ~~इसी कारण बन गया जिस से श्री विद्यानन्द जी (वहां के एक महात्मा) व उनकी शिष्य मंडली हमसे नाराज़ हो गई। वह लोग यह भी कहते थे कि कस्तूरीलाल व श्री सरदारी लाल की तो एक ही राय होती है, वह जो चाहते हैं होता है- इसलीये वह लोग तबदीली चाहते थे। इन सब बातों से~~ हमें बाहरी प्रचारसे कुछ उदासीनता सी रहती थी। रही सही कसर श्री स्वामी जी के आनेसे पूरी होगई। अन्धा अन्धेको रास्ता दिखाए, तो दोनों ही अन्धेरे कुंएमें गिरें। इस बातकी तरफ ध्यान होने लगा। 'श्री' जी के आनेसे बाहरी दिखावेके कामसे हमें छुट्टी मिलगई।

सरदी ज़ोर की हो गई थी। एक दिन 'श्री' जी १५-२० दिनके लीये श्री वैष्णवी देवी की यात्रा का विचार किया और चलगये। यात्रा कर वहां देवी मंदिर से ऊपर एक महात्मा की कुटीयामें चन्द दिन रह कर वापिस आ गये। फिर सतसंग उसी तरह चालू होगया। तरह तरह की बातें होती थीं, जब महापुरुषों की वाणी ही वेद है, तो वह बातें कैसी भी हों, उनसे लाभ ही होता था।

आप बहुत कम सोते थे। एक बारमैं ने पूछा कि मेरे जैसे जोकि महनत का कार्य करता हूं-८ घंटे नींद की ज़रूरत तो है ही, तब आपने बताया कि ठीक नींद लेने का ढंग आ जावे तो २ घंटे भी काफी हैं। उनके पास रहने से नींदमें कमी का अनुभव किया। उससे कोई नुकसान न हुआ। आप बातों ही बातों मे उपदेश देते थे। गुरु शिष्य बनाना उनको अच्छा नहीं लगता था। आप कहते थे कि दूध भी गंदे बर्तनमें नहीं डालते, तो यह ब्रह्मविद्या क्या ऐसे ही हर एक को दी जा सकती है।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

एक बार जब मैं ने कुछ विशेष जानकारी की इच्छा प्रकट की तो आपने ४ महीने ब्रह्मचर्य से रहो तब बतायेंगे, ऐसा कहा। मेरा वैसा करने पर आपने कुछ बताया था। थोड़े रोज़ उसका अनुभव किया फिर प्रमादवश वह छूट सा गया। अब भी जब आप (श्री) मिलते हैं उसीको करने का कहते हैं—वैसे वह करना क्या है— कुछ न करना ही है—जो करनेसे भी कठिन है— न किंचिदपि चिंतयेत् - इतना ही यहां लिखना है।

इसी तरह सतसंग करते, स्वामी जी के उपदेश सुनते समय बीत रहा था। एक दिन अध्यात्मिक पुस्तकोंकी बातोंमें आपने लाहौर से 'आत्मविलास' पुस्तक लानेको कहा। मैं लाहौर से वह पुस्तक जिस दुकानसे लाने को कहा था—ले आया। पुस्तक निराले ही ढंगसे लिखी थी। भाषा अनुवाद भी था, फिर भी समझनेमें कठिन सी लगी। हमारे प्रार्थना करने पर आपने हमें सतसंगमें समझाना शुरू किया। हममें से कोई पुस्तक पढ़ता था, और आप उसका अर्थ समझा देते थे। इस तरह उसमें पहले तीन प्रकरण सतसंग में पढ़े। एक दिन किसी ने पूछा कि स्वामी जी आप इस पुस्तकके लेखक को जानते हैं, तब आपने कहा था कि हां जानते हैं। इससे आगे कोई बात न हुई। एक बार एक सज्जन सं० २००१ या २००२ का एक पञ्चांग ले आये, उसमें एक जगह महात्माओं की जन्म पत्रियां दी थी। उनमें एक पत्री आत्मविलास के लेखक—'आचार्य श्रीमद्मृतवाग्भव' जी की भी थी। इससे यह तो अनुमान हुआ कि पुस्तक किसी विद्वान् (रचा) महापुरुषकी लिखी है। हम प्रेमसे उसका पाठ करते थे और स्वामी जी उसका अर्थ कह देते थे। उनकी कृपा से कुछ बातें, अपनी योग्यताके अनुसार बुद्धिगत हुईं। इस तरह सरदियों का मौसम खतम होने को आया। हम सुनते थे कि आप गरमीयोंमें यहां न रहेंगे। हम चाहते तो थे कि आप हमारे पास रहें, पर उनके तकरीबन ६ महीने यहां रहनेसे हमें पता चल गया था कि उनकी इच्छाके विरुद्ध हम कुछ नहीं कर सकते—हम करना भी न चाहते थे। एक बार आपने यह भी कह दिया था कि जब मुझे जाना होता है, मैं चला जाता हूं और जाने से थोड़े समय पहले ही बताता हूं कि मैं जा रहा हूं।

उन दिनों मेरेको लाहौर कारखानेके काम से जाना होता था, वहांसे वापसी पर पहले यह पता करना होता था कि स्वामी जी यहां ही हैं। उनके चले जानेकी आशंका मनमें खटकती रहती थी। एक बार की बात है कि मुझे ३-४ दिनके लीये लाहौर जाना था—मैं बिस्तर वगैरह साथ लेकर गया। वहां लाहौर पहुंचा तो ३-४ दिन का काम मानो एक ही दिनमें खत्म हो जावेगा, ऐसा प्रतीत होने लगा और शाम तक यह निश्चय हो गया कि कल कुछ सामान ~~[illegible]~~ खरीदकर वापिस स्यालकोट चले जाना है। मैं एक होटलमें चला गया। मैं ने एक दो प्रतियां आत्मविलास दूसरे प्रेमियोंके लिये मोल ली थीं। मैं कमरे की बिजली बंदकर लेटा था, साथ के कमरे में राजस्थानसे पंजाब मैट्रिक की परीक्षा देने केलीये आये कुछ विद्यार्थी बातें कर रहे थे। वहां लेटे लेटे मुझे पता चलता है कि जो आत्मविलास की पुस्तक तुम पढ़ते हो, यह तो उन्हीं महात्मा जी की लिखी है जो हमारे गीता भवनमें ठहरे हैं। इस बात का पता मुझे ऐसा हुआ कि उस पर पूर्ण विश्वास हो गया। मैं ने निश्चय किया कि मैं एकांतमें यह बात श्री स्वामी जी से कह दूंगा। दूसरे दिन सारा दिन वहां काम कर रात को स्यालकोट चला गया। घरसे सीधा सतसंग में गया। आरती के बाद मैं ने श्री स्वामी जीको प्रणाम कर घर जाने की अनुमति मांगी ~~क्योंकि थकावट से सुस्ती~~ आलस्य आ रही थी।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

वैसे और दिनमें आरती के बाद १-२ घंटा बात-चीत होती थी। पर स्वामी जीने कहा कि बैठो, बैठो। तब मैं थोड़ी देरके लीये वहां रुक गया। श्री स्वामी जीने कुछ सिद्धांत की बातें कहीं, बात बड़ी उत्तम थी, बड़े उत्तम ढंगसे समझाई भी गयी थी, पर शरीर व मनकी थकावट के कारण मैं उसे ग्रहण न कर रहा था। इस बातको स्वामी जी जान गये और कहा कि अच्छा, तुम्हारा मन नहीं लग रहा, सो जाओ आराम करो। मैं प्रणाम कर घर चला गया और सो गया। अभी मेरी नींद भी न खुली थी कि श्री सरदारी लाल जी ने मेरे घर के नीचे मुझे आवाज दी। मैं घबरा कर नीचे चला गया, और वह घबराहट सच्ची निकली, क्योंकि मुझे बताया गया कि श्री स्वामी जी तो जाने को त्यार खड़े हैं और वह सतसंग से नीचे सड़क पर भी आ गये हैं। उस वक्त क्या करना चाहीये यह सोचना मुशकिल होगया। पर स्वामीजी के स्वभाव की थोड़ी जानकारी के कारण, यह तो निश्चय होगया कि अब रुकनेसे रुकेंगे नहीं, सो उनकी राज़ीमें ही अपनी भलाई समझ मैं उनको बसके अड्डे तक छोड़ आनेको त्यार होगया। सतसंग की सीढ़ियोंके नीचे ही खड़े खड़े, जब सरदारी लालजी ऊपर कमरा बन्द करने गये, मैं ने श्री स्वामी जी को बताया कि आपका ही नाम श्री अमृतवागभव जी है। इतनेमें ही श्री सरदारी लालजी नीचे आ गये, तब श्री स्वामी जी ने श्री सरदारीलाल जीकी तरफ मुहंकर कहा कि देखो यह कस्तूरी लाल क्या कहता है कि मैं ही अमृतवागभव आचार्य हूं। इसके बाद इस बारेमें फिर कोई बात न हुई। एक तरहसे बात उन्होंने काट दी, और एक तरहसे स्वीकार करलीया, पर इसका पता उसके बाद ही चला कि उन्होंने एक तरह से अपने आप ही कह दिया कि मैं ही अमृतवागभव आचार्य हूं। हम उनको बस पर चढाकर चले आये, जैसे कोई अपनी पूंजी ही गवांकर वापिस चला आवे। श्री तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा कि

एक मिलत दारुण दुःख देहीं
बिछुड़त एक प्राण हर लेहीं ॥

वापिस आने पर कई सतसंगी वहां नित्य की तरह आ चुके थे, और जब जब जिसको पता चला कि स्वामीजी चले गये हैं, वह शीघ्र ही सतसंगमें आ गया। सब हैरान थे कि रात १० बजे तक तो इस बातका ख्याल भी न था और अभी प्रातः ५ बजे सुन रहे हैं कि स्वामीजी चले गये। श्री सरदारीलाल जी ने बताया कि स्वामीजी नित्यकी भांति सुबह जलदी उठकर पाठ पूरा कर, कपड़े लगा, हाथमें लोटा ले खड़े होकर कहने लगे कि मैं जा रहा हूं, कस्तूरी लाल को पता देदो (चिट्ठि वह मेरे लीचे छोड़ गये थे, पर पाकिस्तान बनते पर वह नहीं रही) अपने प्रमादकी बात याद कर मैं दुःखी हो रहा था कि देखो श्री स्वामी जी किस प्रेमसे रातको कुछ बताना चाहते थे, पर मेरे तमोगुणने ऐसा न होने दिया। इस तरह हम उस दिन और उसके बाद रोज़ ही तरह तरहसे उनको याद करते थे। मुझे लाहौर कमसे जाना होता था, सो सभी प्रेमियों ने कहा कि मैं ही उन्हे छोड़ने गया था, इसलीये मैं ही उनको तलाश करके लाऊं। पर तलाश कहां करुं, कोई नाम पता नहीं, किसी ठिकाने का पता नहीं, कभी किसी जगह उन्होंने पत्र लिखा नहीं, न ही कहींसे उनका कभी कोई पत्र आया। मुझे एक ख्याल था कि आत्म विलास के लेखक आप ही हैं, पर सभी

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

इससे सहमत न थे, क्योंकि प्राय: लेखक अपने आपको जताते रहते हैं, पर इस तरह अपनेको छिपाने वाला हमें कोई न मिला था। जिस बससे श्री स्वामी जी लाहौर गये थे, मैं प्राय: उसी पहली बससे लाहौर जाता था। वह बस लाहौरी गेट के बाहर रुकती थी। वहां उतरने पर मैं वहां खड़ा हो अनुमान लगाता था कि यहां उतर कर श्री स्वामी जी किधर गये, पर कुछ समझ नहीं पड़ता था। एक बार याद आया कि आपने एक श्री सीतला जी के मन्दिर की कोई बात की थी, सो मैं वहां गया, पर मेरे मन का देवता मुझे वहां न मिला।

मैं अपने घर गृहस्थी के सब काम करता था, पर उनकी याद बनी थी। यही एक सहारा था, उसकी याद कर, उनकी बातों की याद कर, उनके आंवले के मुरब्बे की याद कर, उनकी पढ़ाई पुस्तक आत्मविलास को पढ़ कर, हर वहां आने वाले को उनके बारे में बता बता कर हम उनकी याद करते रहते थे। वहां आने वाले साधु महात्माओं से पता करते, पर कुछ पता न चला। एक बार एक ब्रह्मचारी 'श्री दूरगामी' जी जो वहां प्राय: आते थे, उनके सामने उनकी चर्चा की, उनके स्वभाव, उनकी रूप रेखा का वर्णन किया। वह चन्द दिन रह कर अपने किसी मित्र को मिलने जम्मु चले गये। वहां जा कर उन्होंने मुझे पत्र लिखा कि उनके मित्र का एक मित्र जम्मु में है, वह ऐसे ही एक महात्मा जी को जानता है, पर वह महात्मा कई बरसों से उसे मिले नहीं। पत्र मिलते ही मैं जम्मु चला गया और उस व्यक्ति को मिले जो उनको जानता था, उनका नाम 'श्री बलजिन्नाथ' था, वहां एम॰ ए कर अध्यापक की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उनसे थोड़ी देर ही बातें करनेसे पता चल गया कि उन्होंने उन स्वामी जी को बचपन में देखा है, जब वह उनके घर कशमीर में उनके पिताजी के पास आते थे। वहां सारा दिन उन स्वामी जी के स्वभाव की चर्चा करते दिन बड़ा अच्छा गुज़रा। वह बलजिन्नाथ जी स्वयं उन स्वामी जी के दर्शन करना चाहते थे, सो यह निश्चय हुआ कि हममें से जिसको वह मिलें—वह दूसरे को ज़रूर पता देवे। इस मिलन से यही फल निकला, बाकी उनके नाम ठिकाने का कुछ पता न चला। चलो, उनसे मिले हुए और उनके लिये आदर प्रेम रखने वाले एक और व्यक्ति से परिचय तो हुआ। इसी तरह उनकी चर्चा करते, दिल में उनके मिलन की चाह बढ़ाते समय बीतने लगा—१९४५ बीता, १९४६ आ गया, गरमीयां बीत गईं, वर्षा बीत गई, फिर सरदियां आ गईं—श्री स्वामी जी को गये तकरीबन २ वर्ष होने को आये, पर उनका कुछ पता न चला

पढ़ा और सुना भी था कि जिसके मिलने की चाह हो वह जरूर मिल जाता है, पर यहां तो दो वर्ष होने को आये, (~~सिवाये उन बलजिन्नाथ के कोई भी ऐसा आदमी नहीं मिला जो उनको मिला हो, जो उनका पता बता सके~~)। शक होता था अपने मिलने की चाह भी कहीं पर- क्या कोई भूल हो गई, ~~क्या नाराज़ हो गये हैं~~, या क्या कारण है उनका पता नहीं चलता। ~~पता निकालने का कोई सहारा भी तो न था~~। हां दिल में चाह थी और उसी का भरोसा था, पर अबतक तो इससे कुछ बनता नजर न आ रहा था। इसके सिवा और चारा भी क्या था कि उनके मिलने की चाह और तीव्र की जाये। एक बार श्री स्वामी जी ने टैलीफ़ून एकसचैंज का दृष्टान्त देकर समझाया था कि उस विभु (आत्मा) ईश्वर के सम्बन्ध से हम सभी जीव एक दूसरे से जुड़े हैं। जिसको उस Exchange को बुलाना आता है, और वह दूसरे का नम्बर जानता हो तो इसी एकसचैंज से उससे मिल सकता है, चाहे

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

वह कितनी दूर ही क्यों न हो — चाहे किसी दूसरे लोकमें भी क्यों न हो। पर हमें तो वह युक्ति आती नहीं। जैसे कैसे बन सकता था, उनसे मिलने की चाह बढ़ाता था और उनके दर्शन न होने से अपनी ही कमी को कोसता था। इतना सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ — अपने प्रमादके कारण उसका पूरा लाभ न उठा सका। फिर भी दिलमें एक हलकी सी रोशनी कभी कभी दौड़ जाती थी, और यह विश्वास बनता था कि श्री स्वामी जी दर्शन जरूर देवेंगे — पर वह समय कब आवेगा, इसका कुछ पता न चलता था। श्री स्वामी जी से एक बार सुना था कि एक जगह वह १२ वर्ष होगये, फिर नहीं गये, इससे बढ़ता होसला गिरता था। फिर अपने मिलने की चाह आशा दिलाती कि आप जरूर मिलेंगे। इसी उधेड़ बुन करते १९४६ की सरदीयां शुरू हो गईं।

इन्ही सरदीयों में मैं एक बार लाहौर गया था, तो विचार आया कि क्यों न जिस दुकान से आत्मविलास लाता हूं, उसी से पता करूं, शायद कुछ पता चले। मैं उस दुकान पर गया। दुकानदार कुछ पुस्तकें बेचने अपने ग्राहकों से बात चीत कर रहा था। मैं प्रतीक्षा करने लगा कि थोड़ा एकांत हो तब बात करूं। उचित समय पर मैं ने विनीत भावसे आत्मविलास के लेखकके बारेमें पूछा - उसी वक्त एक सज्जन उनसे बात चीत कर दुकानसे नीचे उतर रहे थे। उस दुकानदार ने कहा कि लेखक एक बड़े विद्वान महात्मा हैं, उनके कई राजे भी शिष्य हैं और तभी उनने कहा कि वह जो पंडित अभी अभी दुकानसे नीचे उतरे हैं, वह उन महात्मा को विशेष रूप से जानते हैं। मैं उन पंडित जी का नाम पता पूछ जल्दी से दुकानसे उनको खोजने चल पड़ा, पर वह नहीं मिले। एक आशा लगी थी, पर काम न बना। चलो एक तो और आदमी का पता लगा जो आत्मविलास के लेखक को जानता है। मैं चाहता था कि स्वयं मिलकर पता करूं कि वह महात्मा वही है जो हमारे पास ठहरे थे। यह सब बाते पत्र से नहीं जान सकता था। उनके घर कुराली का पता मेरे पास था, पर वह तो लाहौर आये थे, पता नहीं कब वापिस जावेंगे। ऐसा विचारकर मैं वापिस स्यालकोट चला गया

चन्द दिनों बाद मेरा फिर लाहौर आना हुआ। मैं स्टेशनके सामनेसे जा रहा था कि अकस्मात स्यालकोट के दो सज्जन मिले ~~(एकका नाम काकाराम था, जो स्यालकोट सनातन मन्दिरमें भजन कीर्तन करते थे)~~। वह दोनों करांची से अपने गुरुदेव को मिलकर आ रहे थे ~~(उनके गुरुका नाम बंगाली महात्मा था, वह स्यालकोट आए थे, तब गीता भवन भी पधारे थे)~~. मैं ने जब सुना कि वह स्यालकोट से करांची अपने गुरु दर्शन को गये थे, तो मेरे दिलमे अपने 'श्री स्वामी' जी को मिलने की इच्छा तीव्र रूपसे जाग उठी। मैं ने वहीं निश्चय कीया कि आज स्यालकोट न जाकर मैं कुराली जाऊंगा (~~मेरे साथ एक और आदमी बिहारीलाल था, मैं ने उसके हाथ घर तथा कारखाने संदेश दे दिया कि मैं चन्द रोज बाद वापिस आऊंगा, कोई फिकर न करें~~) मेरे पास कोई सामान न था, वही कपड़े थे जो बदन पर थे। वह दिन २४ या २५ दिसम्बर का था, सरदी खूब थी, मैं गरम सूट पहने था और मेरे पास एक गरम ओवर कोट भी था। मैं उसी रात की गाड़ी स्वार हो, सरहंद से गाड़ी बदल सुबह कुराली पहुंच गया। पता करते करते उन पंडित जी के घर आ गया। वह समय उनके नाशते का था - मेरे मना करने पर भी मुझे एक कटोरी हलवा खाने को दिया। उस दिन मंगलवार था, मैं व्रत करता था, पर उनके प्रेमसे मैं ने वह खा लीया। बात चीत होने पर जब उनको पता चला कि मैं उन महात्मा जी के दर्शन करना चाहता हूं, तो उनने मुझे पं० हरदेव शर्मा

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सोलन वालों से मिलना चाहीये। उन्होंने यह भी कहा पहले वह महात्मा उनसे मिला करते थे, पर अब नहीं मिलते और शायद न ही मिलें। उनने एक बात और भी कही कि अगर मुझे उन महात्मा जी के मिलने का प्रेम है, तो मुझे (उन पंडित जी को) कभी भी न मिलना चाहीये, न ही उनके साथ किसी तरह का पत्र व्यवहार करना चाहीये। मैं ने उनकी सब बात मान ली और इसीलीये कभी किसी को यह नहीं बताया कि मैं उनको मिला हूं। तबसे मैं ने उनके साथ किसी तरह का भी सम्बन्ध नहीं रक्खा। यह आखिर वाली बात उन्होंने क्यों कही मुझे इस का कारण अब तक पता नहीं।)

मैं उसी वक्त बस से कालका के लीये रवाना हो पड़ा। यह सब स्थान मेरे पहले देखे न थे। वहां कोई परिचित भी न था। ~~रास्ते में पता चला कि कालका पहुंचते रात पड़ जावेगी। मुझे रात कालका रह सुबह ही सोलन के लीये गाड़ी मिलनी था। बस में बैठे कालका निवासीयों को बात चीत में यह बताया कि~~ मेरे पास बिस्तर वगैरह कुछ नहीं और रात कालका ठहरणा है, ~~क्या यह सब ऐसे हो~~गा था। मैं ने ~~स्पष्ट मैं रात भर का आसरा मांगा नहीं। किसी ने कुछ राय दी नहीं~~ सोचा, चलो जो होगा देखा जावेगा। बस कालका पहुंचे ~~(लोग उतर उतर कर अपने अपने स्थान को जाने लगे, मुझे कहां जाना है, यह मैं न सोच सका)~~ मैं स्टेशन की तरफ गया, मुसाफर खाना खचा खच भरा था, बाजार आया। सारा दिन बिना भोजन हो गया था, एक हलवाई से मिठाई और दूध लीया, एक धर्मशाला का पता कर ~~जो कि बाजार में बाईं तरफ पड़ती है~~ - वहां ~~चला~~ गया। रात काफी हो चली थी, धर्मशाला के पंडित जी ने उपर की एक कमरा मुझे बता दिया। वहां एक खाट थी, उसपर लेट गया। दिसम्बर के आखरी दिन, कालका पहाड़ी स्थान, २० घंटे से ज्यादा समय की यात्रा की थकावट और सारा दिन भोजन न मिलने से शरीर थक गया था। इसी सरदी और थकावट से मैं खाट पर लेटा, बिस्तर पास नहीं था, तकीये की जगह पगड़ी को रखा, आधा ओवर कोट नीचे बिछा, आधा ऊपर लेकर लेटा, तो टांगे कोट से बाहर और पैर सुन्न होने लगे। उठकर बैठ गया, पर थकावट से फिर लेटना पड़ा। लेटें भी तो कैसे। अभी अभी मिठाई खाकर दूध पिया था, सो अब प्यास लगी। मैं कमरे से बाहर निकल, नीचे जा उन पंडित जी से पानी मांगने के लीये सीढ़ीयों से ज्यूंहि नीचे उतरने लगा, तो एक कुत्ते ने ज़ोर ज़ोर से भौंकना शुरु कर दिया, वहां सब अंधेरा था। मैं घबराकर वापिस अपने कमरे में आ गया, पर बिना पानी के प्यास कैसे मिटे। ~~मैं ने फिर नीचे उतरने की कोशिश की, तो कुत्ते ने फिर चिल्लाना शुरु कर दिया।~~ मैं ने अपने कमरे से पंडित जी, पंडित जी की बुहत आवाजें लगाईं, पर किसी ने उत्तर न दिया। ~~ऐसा लगता था कि मैं उस मकान में अकेला ही उस कुत्ते के हवाले कर दिया गया था~~। इसी तरह प्यास से बैचेन थकावट से चूर, सरदी से सुकड़, अन्धेरे व सुनसानपन से घबरा कर मैं खाट पर पड़ा रहा।

रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी, अब चन्द्रमा निकल आया था। उस कमरे की खिड़कीयां बाहर गली में खुलती थी खिड़की से बाहर देखा तो सामने एक मैदान सा ~~था~~ उसमें एक नल से पानी की मोटी धार बह रही थी, पर मेरी किस्मत में प्रानों का एक प्यासा था ~~नीचे सुनसान था~~। कभी खाट पर जाता, कभी खिड़की से बाहर झांकता कि शायद कोई आदमी नज़र पड़े, पर वहां प्यासे की प्यास भड़काने को पानी के नल का शब्द ही था। सरदी से बचने के लीये सूर्य का ध्यान करता या भास्करी प्राणायाम का और प्यास के लीये शीतली की धारण लेता। चान्द तो सामने अमृत किरनें बिखेर रहे थे और वरुण देवता जल की धार बहा रहे थे, पर मेरे लीये ~~यह सब ऐसे ही था~~ नहीं। सूखे ओंठों पर जीभ फेरते फेरते जीभ थक गई, गले का रस भी सूख गया, टांगे सिकोड़ते और लम्बी करते टांगे थक गई, ~~शरीर के कभी किसी भाग~~

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तो कभी किसी ~~भागको~~ ओवरकोट के नीचे करते ~~करते सारा शरीर थक गया~~, तब या तो बेहोश ही होगई या नींद आ गई (फिर जल्दी ही मैं क्या देखता हूं कि रात खतम हो रही है, कुछ औरतें पानी के बर्तन लेकर वहां नल पर आई हैं, मैं खिड़की पर जाता हूं, एक औरत को पानी के लीये प्रार्थना करता हूं, तब वह मेरे को पानी कैसे दे यह सोचकर मैं ने अपनी पगड़ी नीचे लटका दी ताकि वह पगड़ी का किनारा गीला कर दे और मैं पगड़ी ऊपर खींच कर उससे पानी निचोड़, प्यास बुझा लूं – मैं घबरा कर उठा, खिड़की से बाहर देखा तो वहां कोई भी नहीं। तब पता चला कि यह स्वपन ही था। फिर अभी लेटा ही हूं कि ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी खाली बर्तनमें नलकेसे पानी भरनेका शब्द हो रहा है, ध्यान से सुना तो ठीक ऐसा ही शब्द था। अब तो जरूर कोई नल पर आया है, यह समझकर फिर खिड़की से देखा, तो कोई भी न था। पता नहीं ऐसा कितनी बार हुआ, पर रात बीत ही गई) जब जागा, तब प्यास नहीं थी, थकावट भी कुछ दूर हो गई थी, पर सरदी काफी थी। मौका मिलते धर्मशाल छोड़ मैं स्टेशन की तरफ गया। वहां शौच आदिसे निवृत्त हो, जलपान कर मैं कालका से शिमला जानेवाली पहिली गाड़ी से सोलनका टिकट ले सवार होगया। आज भी मुझे जब उस सरदी की रातकी याद आती है तो ~~ऐसा लगता है कि~~ वह रात मेरे सामने तसवीर अभी बनी खड़ी है। पर गुज़र गई सो गुजरान, क्या झोंपड़ी क्या बैरान। स्वामी गोविन्दा नन्द जी ने ~~लिखा है~~ कहा है –

> राह प्रेम विच मारू बद्दल, ज़ालिम बिजली कड़के
> ओहनां मनाज़िल तै कट करनी जिन्हा दा दिल धड़के ॥

कालकासे सोलनकी पहाड़ी यात्रा मेरी पहली ही पहाड़ी प्रदेश की गाड़ी से यात्रा थी। सोलन पहुंचकर, मैं श्री हरदेव जी के मकान पर गया। वहां से पता चला कि वह सोलन में नहीं हैं। वहां से किसी और पंडित जी का पता चला, तो मैं उनके घर जाकर उनको मिला। सारा वृतांत कह सुनाया। मैं ने अच्छी तरह पता कर लीया कि 'श्री स्वामी जी' ही पुस्तकों मे अपना नाम श्रीमदमृतवागभव आचार्य लिखते हैं। उनके रूप रेखा, स्वभाव, खान पान, रुचि वगैरह का विस्तार से वर्णन कर, मिलान कर लीया। आप को आंवले पसंद हैं और आप जो जो कीर्तन, जिस जिस स्वर में करते थे, वह ~~स्वयं~~ स्वयं गाकर अच्छी तरह मिलान कर लीया। उनके प्रिय श्लोक 'यामामनन्ति मुनय:' का भी ज़िकर किया, तब पता चला कि वह श्लोक है उनकी सम्पादित एक पुस्तक पञ्चस्तवी के चौथे अध्याय का श्लोक है ~~(पञ्चस्तवी)~~। वहां से उन पंडित जी ने पं० हरदेव जी के घर के नज़दीक एक स्थानसे मुझे कुछ पुस्तकें दी, जो श्री स्वामी जी की ही छपवाई हुई थी, उनमें राष्ट्रालोक, सप्तपदी, पञ्चस्तवी और परशुराम स्तोत्र थे। मैं वह पुस्तकें ले, प्रणाम कर वापिस चल पड़ा। सोलन से कार से कालका आया और उसी दिन रात की गाड़ी से स्यालकोट चला गया। इस तरह इस यात्रा से तकरीबन दो वर्ष पहले लाहौर के एक होटल में आये विचार का पक्का समर्थन होगया कि अपने वह 'श्री स्वामी जी' ही आत्म विलास के लेखक हैं। स्यालकोट वापिस आ गीता भवन पर सारा वृतांत कहा। सब प्रसन्न हुए कि कुछ तो पता चला। सोलनमें यह भी सुना था कि उन लोगों को भी काफी समयसे दर्शन नहीं हुए। (इस से दिल घबराता था, पर फिर ख्याल आता था,

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

कि जब कृपा कर आपने दर्शन दिये, जाती बार परिचय की झलक भी दे दी, अब इनके मिले प्रेमियों के दर्शन भी हो गये, तब उनकी ही कृपा से दर्शन ज़रूर होंगे। यही भरोसा था और यह दिन प्रतिदिन बढ़ रहा था। श्री हरदेव जी से पत्र व्यवहार शुरु किया। उनको भी कई वर्षों से दर्शन न हुए थे। उनसे यह भी पता चला कि वह कई कामों से लाहौर आते हैं और वहां एक व्यक्ति सेठ सत्य नारायण के घर ठहरते हैं। सेठ जी का पता भी उनने लिख दिया, वह अर्जुन नगर में जो शाहलमी के बाहर पड़ता है, रहते थे।

अब बात आ गई ~~मार्च~~ Feb, १९४७ की। मैं दफ़तर के कामसे लाहौर गया था। उस दिन सोमवार था और तारीख 17th Feb. 1947 थी। मुझे उसी दिन वापिस स्यालकोट चले जाना था इसलीये सामान कुछ पास न था। दोपहर के समय अवकाश मिलने पर मैं पं० हरदेव जी को मिलने सेठ सत्य नारायण के मकान पर गया। मकान तीन मंज़ला था, नीचे घंटी (Call Bell) लगी थी। मैं ने घंटी दबाई, और इस प्रतीक्षा में था कि अभी कोई पूछेगा कि क्या काम है, तो मैं कहूंगा कि पं० हरदेव जी से मिलना है, इसी विचार से जैसे ही मैं ने ऊपर देखा, तो क्या देखता हूं कि "श्री स्वामी जी" मकान की छत से नीचे मुझे देख रहे हैं। मेरी प्रसन्नता का क्या कहना। मैं बिना जाने मकान की सीढ़ीयों पर दौड़ता दौड़ता उपर चला गया। वहां सीढ़ीयों में ही 'श्री जी' के दर्शन कर मैं निहाल होगया। उनके साथ ही नीचे के कमरे में आया, तो शाम तक उनके पास बैठ बातें ही करता रहा। वहां भरतपुर के पं० गोविन्द जी मिश्र व बाल बिहारी जी के भी दर्शन हुए। शाम को घूमने के लीये श्री वैष्णवी दास जी के साथ गये थे। वहां पता चला कि स्वामी जी पहले ही उन लोगों को कह रहे थे कि आप बुद्धवार को स्यालकोट जावेंगे। मैं इसलीये वहां दूसरे रोज़ (मंगलवार) भी ठहर गया और श्री स्वामी जी के प्रोग्राम अनुसार तीसरे दिन (19.2.47) श्री स्वामी जी के साथ स्यालकोट आया। श्री स्वामी जी मेरे साथ मेरे मकान पर ही पधारे। सब संतसंगी प्रेमियों को पता चल गया तो वहां ही दर्शन को आ गये। सतसंगीयों ने जो मेरी ड्योटी लगाई थी कि मैं ही श्री स्वामी जी को खोज़ कर लाऊं, उसको श्री स्वामी जी ने अपनी कृपा दृष्टि से मेरे द्वारा ही पूरा करवाया। उनकी इस कृपा को याद करते, अब भी मन प्रसन्न हो जाता है, तो उस वकत की प्रसन्नता का वर्णन कैसे हो। इस तरह श्री स्वामी जी के दर्शन तकरीबन दो साल बाद कर मैं कृतार्थ होगया।

जा की रही भावना जैसी, प्रभु मूरत तिन देखी तैसी ॥

कृ० त० आनन्द
श्रावण शुक्ला पूर्णीमा - रक्षाबंधन
कलकत्ता

× 23rd. Feb. 1947. सब मिलकर जम्मु गये, वहां श्री बलजिनाथ जी को भी दर्शन करवाए

4th. March 1947 - जम्मू से वापिस आकर श्री स्वामी जी कार से लाहौर गये। उसी दिन लाहौर में हिन्दू-मुसलिम दंगा होगया था।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

श्री:

अमृतवाग्भवाचार्य जी

[कि मैं जिनके सम्पर्क में रहा]

जी के

कुछ संस्मरण

डॉ. श्रीनाथ तिक्कू ए. एम. एस. [बी एच यू]
शास्त्री [डी. ओ. एल.]
भू. पू. प्रिंसिपल एवं चिकित्सा
अधीक्षक
आ. यू. तिब्बिया कालेज
दिल्ली

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

॥ श्री कोणाम्बा गुरुभ्यो नमः ॥

श्री मदमृतवाग्भवाचार्य सांस्कृतिक शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान

1. नाम- इस प्रतिष्ठान का नाम श्री मदअमृत वाग्भवाचार्य सांस्कृतिक शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान रहेगा ।

2. कार्यालय- इस प्रतिष्ठान का केन्द्रीय कार्यालय जयपुर रहेगा ।

3. कार्यक्षेत्र - कार्यक्षेत्र की दृष्टि से इस प्रतिष्ठान का क्षेत्र सम्पूर्ण भारत रहेगा ।

4. प्रतिष्ठान के उद्देश्य -- प्रतिष्ठान के निम्नलिखित उद्देश्य रहेंगे :-

1- योग, अध्यात्म तंत्र एवं श्री विद्या संबंधी शोध, गवेषणा एवं प्रकाशन ;

2- वैदिक वाङ्मय का विधि विद्याओं पर वैज्ञानिक अनुसंधान एवं संरक्षण ;

3- प्राचीन पाण्डुलिपियों का संरक्षण

4- संस्कृत भाषा का प्रचार, प्रसार एवं संरक्षण तथा संस्कृत विद्यार्थियों के छात्र वृत्ति आदि वितरण.

5- प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की सम्पुण्यर्थ पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन एवं प्रकाशन;

6- योग एवं तंत्र विद्या का व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं प्रयोग शाला का निर्माण;

7- समय-समय पर संगोष्ठियों, विशिष्ट आयोजनों एवं अध्ययन शिविरों के द्वारा भारतीय आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप को जन मानस में प्रतिष्ठापित करना।

8- विशिष्ट विद्वानों एवं प्रतिभाओं आदि का सम्मान एवं अभिनन्दन

9- उपरोक्त उद्देश्यों की सम्पूर्ति एवं अनुसंधान कार्य में उपयोग हेतु श्री पुस्तकालय की स्थापना एवं श्री भवन का निर्माण.

5. आय के स्त्रोत एवं साधन- [अ] प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आय के निम्न लिखित स्त्रोत होंगे ।

1- सदस्यता शुल्क, 2-चन्दा, 3-राजकीय सहायता एवं अनुदान, 4-कालांतर में प्रतिष्ठान द्वारा भेंट अथवा अन्य किसी प्रकार की आय.

[ब] प्रतिष्ठान में ली गई किसी प्रकार की भी धनराशि की अधिकृत रसीद दी जायेगी ।

[स] स्थायी सम्पति दान लेने के लिए अध्यक्ष एवं महामंत्री प्रतिष्ठान के अधिकृत प्रतिनिधि होंगे तथा संबंधित अधिकार पत्रों पर उनके हस्ताक्षर प्रतिष्ठान के प्रतिनिधि के रूप में मान्य होंगे । सम्पति पर प्रतिष्ठान को स्वामित्व होगा।

6- सदस्यता- प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रहने वाला कम से कम अठारह वर्ष का कोई भी पुरुष एवं महिला प्रतिष्ठान का निर्धारित शुल्क एवं सदस्यता पत्र द्वारा बन सकते हैं ।

7- सदस्यता के प्रकार -[1] सहायोगी सदस्य [2] सक्रिय सदस्य [3] आजीवन सदस्य [4] मान्य सदस्य [5] संस्थापक सदस्य

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

8- सदस्यता शुल्क- प्रतिष्ठान के विभिन्न सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार से होगे :-

[1] सहयोगी सदस्य - दस रुपया प्रतिवर्ष,
[2] सक्रिय सदस्य - दस रुपया प्रतिवर्ष तथा 51/- अथवा अधिक एक मुश्त एक बार ।
[3] आजीवन सदस्य- दस रुपया प्रतिवर्ष तथा 501/-अथवा अधिक एक मुश्त में एक बार
[4] मान्य सदस्य -प्रतिष्ठान के अध्यक्ष महोदय कार्यकारिणी की अनुमति से अधिक से अधिक दो विशिष्ट व्यक्तियों कोएक वर्ष के लिये मान्य सदस्य बना सकते है ।मान्य सदस्य को सदस्यता शुल्क देना अनिवार्य नही होगा ।
[5] संस्थापक सदस्य- प्रारम्भ में जिन व्यक्तियों ने प्रतिष्ठान के गठन कर उसे मूर्त रूप दिया है तथा निष्ठापूर्वक कार्य किया है वे प्रतिष्ठान के संस्थापक सदस्य कहलायेगे ।

9- प्रवेश शुल्क- प्रतिष्ठान का सदस्य बनने पर एक रुपया प्रवेश शुल्क के रूप में प्रत्येक सदस्य को प्रथम बार देना अनिवार्य होगा ।

10- सदस्यों की अपात्रता- निम्नलिखित व्यक्ति प्रतिष्ठान के सदस्य नहीं बन सकेगे - [1] मांस, मदिरा का सेवन करने वाले, [2] मानसिक रोगी [3] आपराधिक अभियोग से दण्डित व्यक्ति [4] देश, धर्म, संस्कृति और प्रतिष्ठान के उद्देश्यों में आस्था न रखने वाले व्यक्ति ।

11- सदस्यों की निर्योग्यतायें-

[1] निर्धारित शुल्क न देने पर,
[2] स्वयं त्यागपत्र देने पर,
[3] प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की पूर्ति में बाधक बनने पर,
[4] कार्यकारिणी द्वारा उपस्थित दो तिहाई बहुमत से अयोग्य करार देने पर,
[5] प्रतिष्ठान के नियमों की अवहेलना करन पर,

12- सदस्यों के अधिकार-

[1] सहयोगी सदस्य - प्रतिष्ठान की समस्त गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में सहयोगी के रूप में सम्मिलित हो सकेंगे । कार्यकारिणी के चुनाव के अवसर पर मत देने का अधिकार होगा किन्तु किसी पद पर खड़े होने का अधिकार नहीं होगा ।

[2] सक्रिय सदस्य- प्रतिष्ठान के हित के लिए समयानुसार सक्रिय योगदान देना अनिवार्य होगा । कार्यकारिणी के चुनावों में अपना मत दे सकेगे तथा किसी भी पद पर खड़े हो सकेंगे ।

[3] आजीवन सदस्य - कार्यकारिणी के स्थायी सदस्य के रूप में रहेगे । कार्यकारिणी में उपस्थिति अनिवार्य नहीं होगी । कार्यकारिणी में मतदान का अधिकार नहीं होगा । किन्तु प्रस्तुत विषयों पर अपने सुझावों से प्रतिष्ठान कार्यकारिणी को लाभान्वित करते रहेगे ।

[4] मान्य सदस्य- कार्यकारिणी को अपने सुझावों से लाभान्वित करते रहेंगे किन्तु कार्यकारिणी में मतदान का अधिकार नहीं होगा ।

[5] संस्थापक सदस्य -[क] प्रतिष्ठान के संस्थापन में मूलरूप से जिन व्यक्तियों ने प्रयत्न एवं श्रम किया है उन्हीं ही प्रतिष्ठान के हित एवं प्रतिष्ठान की भावना हेतु रखा गया है ।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

---------3/-

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

(ख) संस्थापक सदस्य कालांतर में प्रतिष्ठान के निर्वाचित पद पर न रहने पर भी कार्यकारिणी के स्थायी सदस्य बने रहेंगे ।

(ग) संस्थापक सदस्य कार्यकारिणी के किसी भी पद पर चुनाव में खड़े हो सकेंगे ।

(घ) दलगत भावनाओं के कारण प्रतिष्ठान में जब कभी विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाए तो संस्थापक सदस्य प्रतिष्ठान का संचालन अपने हाथ में ले सकते हैं और प्रतिष्ठान को विघटित होने से बचा सकते हैं ।

(न) कार्यकारिणी द्वारा दिये गये निर्णयों में भी यदि प्रतिष्ठान के हित में आवश्यक हो तो परिवर्तन करने के संस्थापक सदस्य अधिकारी होंगे ।

(त) प्रतिष्ठान का अहर्निश हितसाधन संस्थापक सदस्यों के लिये अनिवार्य होगा तथा वे किसी प्रकार के शुल्क से प्रतिबंधित नहीं होंगे ।

(थ) चल सम्पति आदि की चाबियां तथा अचल सम्पति-भवनादि वस्तुओं पर नियंत्रण संस्थापक सदस्यों द्वारा संस्थापक सदस्यों में ही चयन किये गये दो सदस्यों के पास डबललोक में रहेंगी । किन्तु आवश्यकता पड़ने पर संस्थापक सदस्य किन्हीं अन्य दो को अपने स्थान पर अन्य सदस्यों की सहमति से एतदर्थ मनोनीत कर सकेंगे ।

निम्नलिखित सदस्य प्रतिष्ठान के संस्थापक सदस्य होंगे -

क्र0 सं0	नाम	व्यवसाय	पता
1-	श्री गोविन्द जी मिश्र	धर्मकार्य ~~[illegible]~~ सम्पादन	चौबुर्जा, भरतपुर
2-	श्री दुर्गादत्त शर्मा	राज्य सेवा	ए-72, जनता कालोनी, जयपुर
3-	श्री गिर्राजशरणजी गुप्ता	" "	बी-208, जनता कालोनी, जयपुर
4-	श्री सियारामजी गर्ग	" "	बी-314 " " "
5-	श्री अखिलेश कुमार शर्मा	" "	ए-72, " " "
6-	श्री कालीचरण शर्मा	" "	बी-328, " " "
7-	डा0 धर्मेश्वर जी शर्मा	चिकित्सक	चौबुर्जा, भरतपुर
8-	श्री धर्मगोपाल चतुर्वेदी	एडवोकेट	गोपालगढ़, भरतपुर
9-	श्री रमेशचन्द गुप्ता	"	बुधकी हाट, भरतपुर
10-	श्री गिरिराज शर्मा	धार्मिक सेवा एवं अध्ययन	जयपुर
11-	आचार्य दयानन्द सारस्वत	राज्य सेवा	जोधपुर

13- कार्यकारिणी- प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी का गठन निम्न प्रकार होगा :-

1- अध्यक्ष-एक
2- उपाध्यक्ष - दो
3- महामंत्री- एक
4- संयुक्त मंत्री -दो
5- अर्थ मंत्री (कोषाध्यक्ष)- एक
6- सदस्य - आठ

14- कार्यकाल (अ) निर्वाचित होने के पश्चात् प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी का सामान्यतः दो वर्ष का होगा । विशेष परिस्थितियों में कार्यकारिणी समय की उक्त अवधि को प्रस्ताव द्वारा छः मास के लिए और बढ़ा सकती है ।

----4/-

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

[ब] यदि कार्यकारिणी ढाई वर्ष तक कोई चुनाव नहीं कराये तो संस्थापक सदस्य प्रतिष्ठान का संचालन आवश्यक कार्यवाही हेतु संभाल लेंगे ।

15- आर्थिक वर्ष- [अ] प्रतिष्ठान का वर्ष विक्रम संवत् से प्रारम्भ माना जायेगा ।
[ब] प्रतिवर्ष की समाप्ति के तीन माह के अंतर्गत वार्षिक आय व्यय एवं प्रतिष्ठान की गतिविधियों के संबंध में एक प्रतिवेदन तैयार किया जाकर सभी सदस्यों को सूचनार्थ प्रतिवर्ष भेजा जायेगा ।

16- चुनाव [अ] प्रतिष्ठान के पदाधिकारियों का चुनाव गुप्त या पद्धति द्वारा बहुमत से होगा ।
[ब] साधारण सभा द्वारा कार्यकारिणी के लिये प्रतिनिधियों का चुनाव किया जायेगा ।सभी प्रतिनिधि मिल कर प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी का गठन करेंगे ।
[स] प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये कार्यकारिणी अपने अन्तर्गत अन्य समितियों का गठन एवं उनके संचालन हेतु नियमों का निर्माण कर सकेगी ।

17- अध्यक्ष के दायित्व एवं कर्तव्य -
[1] कार्यकारिणी एवं साधारण सभी की बैठकों की अध्यक्षता करना
[2] कार्यवाही को नियमित एवं अनुशासित ढंग से करना
[3] संस्थान की बैठक की कार्यवाही, प्रस्तावों एवं बिलों पर हस्ताक्षर करना ।
[4] प्रतिष्ठान की प्रतिष्ठा एवं विकास के लिये सतत् प्रयत्नशील रहना ।

18- उपाध्यक्ष के दायित्व एवं कर्तव्य-अध्यक्ष की अनुपस्थिति में अध्यक्ष के समस्त दायित्वों का निर्वहन करना

19- महामंत्री के दायित्व एवं कर्तव्य -
[1] प्रतिष्ठान संबंधी समस्त अभिलेखों एवं पत्रादि की सुरक्षा,
[2] अध्यक्ष के परामर्श से विषय निर्धारण करना, कार्यकारिणी की बैठक बुलाना और उनकी व्यवस्था करना ।
[3] बैठकों की कार्यवाही को लिपिबद्ध करना एवं अध्यक्ष के हस्ताक्षर कराना ।
[4] प्रतिष्ठान की समस्त सम्पत्ति पर निरीक्षणात्मक दृष्टि रखना ।
[5] आय व्यय की समय-समय पर देखभाल करना तथा संबंधित बिलों को सत्यापित करना ।
[6] रेकार्ड को व्यवस्थित रखना ।
[7] प्रतिष्ठान का वार्षिक प्रतिवेदन तैयार करना तथा प्रस्तुत करना ।

20- संयुक्त मंत्री के दायित्व एवं कर्तव्य-
[1] प्रतिष्ठान संबंधी समस्त कार्यों में महामंत्री को अपेक्षित सहयोग देना ।
[2] बैठकों की व्यवस्था एवं कार्यवाही के लेखन में महामंत्री का सहयोग देना ।
[3] महामंत्री की अनुपस्थिति में उनके समस्त दायित्वों का निर्वहन करना ।
[4] महामंत्री अध्यक्ष की अनुमति से मंत्रियों के मध्य सौंपे गये कार्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करना ।

21- अर्थ मंत्री एवं कोषाध्यक्ष के दायित्व एवं कर्तव्य-
[1] प्रतिष्ठान के आय व्यय का सम्पूर्ण लेखा जोखा तैयार करना ।
[2] वार्षिक प्रतिवेदन तैयार करने में महामंत्री को सहयोग करना ।
[3] प्रतिष्ठान की धनराशि को कार्यकारिणी द्वारा स्वीकृत बैंक में ज

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

§4§ अध्यक्ष एवं महामंत्री द्वारा स्वीकृत बिलों का भुगतान करना ।

§5§ प्रतिष्ठान की प्रत्येक चल अचल सम्पत्ति कापूर्ण ब्योरा रखना ।

22- व्यय के अधिकार-

§1§ कार्यकारिणी की पूर्व स्वीकृति के बिना भी अध्यक्ष सौ रुपया तक व्यय करने की स्वीकृति दे सकता है ।

§2§ प्रतिष्ठान की आवश्यकता के लिए महामंत्री अध्यक्ष की अनुपस्थिति के बिना भी पचास रुपया व्यय कर सकता है ।

§3§ महामंत्री पचास रुपया तक की राशि अपने पास रख सकता है इससे अधिक होने पर कोषाध्यक्ष द्वारा बैंक में जमा करानी होगी ।

§4§ सौ रुपया से अधिक की राशि व्यय करने के लिए अध्यक्ष को कार्यकारिणी की स्वीकृति आवश्यक होगी ।

§5§ अध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष अथवा महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष के संयुक्त हस्ताक्षरों द्वारा ही धनराशि बैंक से निकाली जा सकेगी ।

§6§ स्थायी निर्माण एवं व्यवस्था संबंधी कार्यों के लिए कार्यकारिणी की सम्मति लेना आवश्यक होगा ।

23- आय-व्यय के निरीक्षण के अधिकार- प्रतिष्ठान का कोई भी सदस्य यदि प्रतिष्ठान के आय व्यय का निरीक्षण करना चाहे तो उसे कम से कम पन्द्रह दिन पूर्व सूचना देना आवश्यक होगा ।

24- विधान संशोधन एवं परिवर्तन- §1§ प्रतिष्ठान के विधान में कभी भी अनिवार्यता उपस्थित होने पर कार्यकारिणी बहुमत से संशोधन एवं परिवर्तन के अंश पर आधे से अधिक सदस्यों का सहमत होना आवश्यक होगा ।

§2§ परिवर्तन प्रावधान राजस्थान संस्थान रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 की धारा 12 के आधार पर होना जरूरी होगा ।

25- रजिस्ट्रार संस्थाएं, राजस्थान को संस्था के निरीक्षण का पूर्ण अधिकार है व उनके द्वारा दिये गये सुझावों की पूर्ति की जावेगी ।

26- विघटन संबंधी प्रावधान राजस्थान संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 की धारा 13 व 14 के आधार पर होना वांछित है ।

27- कार्यकारिणी की बैठकें = §क§ वर्ष के अन्तराल में कार्यकारिणी की कम से कम दो बैठकें होना आवश्यक है । बैठकों के बीच का अन्तर छः माह से अधिक नहीं होगा ।

§ख§ कार्यकारिणी के आधे से अधिक सदस्यों की मांग पर कार्यकारिणी की बैठक कभी भी बुलाई जा सकती है ।

§ग§ कार्यकारिणी की बैठक की सूचना यदि अत्यंत आवश्यक न हो तो कम से कम दस दिन पूर्व सदस्यों को देनी होगी ।

§घ§ कार्यकारिणी की गणपूरक संख्या एक तिहाई मान्य होगी ।

§च§ आवश्यकतानुसार कार्यकारिणी के सदस्यों से पत्र व्यवहार द्वारा भी सुझाव, सम्मति एवं मत लिया जा सकेगा ।

28- संस्थान का समस्त कार्य हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि में सम्पन्न होगा ।

29- हम निम्न हस्ताक्षर कर्ता यह प्रमाणित करते हैं कि उपरोक्त संस्था पूर्ण नाम के विधान की सही वह सच्ची प्रतिलिपि है ।

महामंत्री | उपाध्यक्ष | अध्यक्ष

अर्थमंत्री

श्री मद्‌अमृतवाग्भवाचार्य सांस्कृतिक एवं शिक्षा शोध प्रतिष्ठान

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अक्कलकोटनिवासी

परम सद्गुरु श्रीगजानन महाराज

प्रणीत

—: अग्निहोत्र पुरस्कार :—

सृष्टिके प्रारंभमेंही साक्षात् ब्रह्माजी ने वेदोपदिष्ट सत्य सनातन धर्मका उपदेश तथा यज्ञ-यागादिक क्रियाओंका प्रचार किया । सांप्रत इस सनातन धर्मका लोप हो जाने के कारणही सर्वत्र अशांति, अनारोग्य, असमृद्धि, दुर्भिक्ष्य, शोक, अवर्षण दिखाई दे रहा है। सर्वत्र सुख, समृद्धि और शांति अगर चाहते है तो नित्य अग्निहोत्रसे लेकर अश्वमेधपर्यंत यज्ञ-यागादिक क्रियाओंका सार्वत्रिक प्रचार होना आवश्यक है। मानो यही कल्पतरु है, यही कामधेनु है।

ॐ तत् सत्

प्रकाशक : श्रीसद्गुरुसेवासमिति,

३७६ शुक्रवार पेठ, पुणें २.

[पेपको प्रेस, पुणें २.]

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

धर्म चक्र

॥ आरती सद्गुरु की ॥

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

धर्म चक्र

॥ आरती सद्गुरु की ॥

gbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

॥ आरती सद्गुरु की ॥

("जय जय दत्तराज योगी" — की तर्ज पर गावें)

आरति श्री गुरु की, गाउं मैं, आरति सद्गुरु की ॥धृ.॥

सत्य धर्म उपदेश कियो तुम शिष्यों को सुखकारी ।
यही एक है धर्म सनातन, ऐसी शिक्षा तुम्हरी ॥
गुरु ऐसी शिक्षा तुम्हरी ।
गाउं मैं आरति सद्गुरु की ॥१॥

यज्ञ दान तप कर्म और स्वाध्याय ही सद्धर्म ।
वेदों का बस सार यही है, यही विश्वभर धर्म ।
गुरु यही विश्व भर धर्म ।
गाउं मैं आरति सद्गुरु की ॥२॥

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitized by eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सीधी सची राह यही, दुःखों को हरने वाली ।
सब दुःखों को हरने वाली ॥
कल्याण मार्ग पर जगत् चले, है यही कामना तुम्हरी ।
गुरु यही कामना तुम्हरी ॥
गाउं मैं आरति सद्गुरु की ॥३॥

धर्म आचरण पडे कठिन तो, जो तुमसे सीखे ।
नित्य तपस्वी जीवन का आदर्श उसको दीखे ॥
आदर्श तुममें दीखे ।
गाउं मैं आरति सद्गुरु की ॥४॥

क्या कितनी गाऊं महिमा मैं, अज्ञ दास हूँ तुम्हरा ।
धर्म प्रचारक जीवन बीते, कृपा चाहता बंदा ॥
गुरु कृपा मांगता बंदा ।
गाउं मैं आरति सद्गुरु की ॥५॥

रचयिता सेवक —
माधव गोविंद पोतदार
भोपाल (म. प्र.)

Swami Amrit Vaghbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मुद्रक :
गो. दा. बेळगी,
'पेपको' प्रेस,
३७६ शुक्रवार पेठ, पुणें २.

प्रकाशक :
ज. आ. मोंडकर,
नं. ४ भटवाडी
गिरगांव, बम्बई नं. ४.

प्रथम संस्करण – प्रति २५००, आषाढ शु॥ १५ शके १८८१
द्वितीय संस्करण – प्रति ५०००, आषाढ शु॥ १५ शके १८८२

मिलनेका पत्ता :—
गुरु मन्दिर,
श्री बाळप्पा मठ,
अक्कलकोट (जि. सोलापूर)

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitiz

Vidwat Varkàla Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

परशुराम अवताराचें सर्वांगीण वैशिष्टय

आज अक्षयतृतीया. याच तिथीला परशुराम तृतीया असेंही म्हणतात. महाविष्णूंनीं अवतार घेण्यासाठीं आजचा दिवस निवडला आणि भृगुकुलांत जमदग्नी रेणुकेच्या अुदरीं रामांचा जन्म झाला. हे जामदग्न्यराम, महाविष्णूच्या दशावतारापैकीं अेकमेव चिरंजीव अवतार तर आहेतच, त्या शिवाय त्यांची गणना अश्वत्थामा, बलि, व्यास आदि सप्तचिरंजीवांत आहे.

यदायदाहि धर्मस्य ---- या सुपरिचित गीता वचनाप्रमाणें अवताराचें प्रयोजन पूर्ण होतांच, धारण केलेला भौतिक देह विसर्जित करुन, अवतार धारण करणारे तेज महाविष्णूत विलीन होते. अवतारकार्य संपतांच दाशरथीरामांनीं आपला पार्थिव देह शरयू नदींत विसर्जित केला. व्याधाच्या बाणाचें निमित्त करुन भगवान श्रीकृष्णांनीं आपला अवतार संपविला. अशा प्रकारचें संदर्भ, परशुरामांच्या बद्दल मिळत नाहींत, म्हणून त्यांना चिरंजीव म्हणण्याची प्रथा पडली, असें कांहीं विद्वान प्रतिपादन करतात. पण युगांयुगांतून व नंतरच्या अवताराच्यावेळीं परशुरामांचें प्राकटय कसें झालें ? याचें अुत्तर त्यांना देतां येत नाहीं. खरें म्हटलें तर अशा विद्वानांनीं परशुरामांनाच चिरंजीव कां म्हटलें असावें ? असा प्रश्न स्वतःला विचारून त्याचें अुत्तर शोधावयास हवें.

परशुरामांचें जन्मरहस्य मोठें चिंतनीय आहे. ऋचिक महामुनींनीं, आपली पत्नी आणि सासू यांची पुत्रकामना पूर्ण व्हावी म्हणून त्या अुभयतांना अनुरुप, असें दोन निरनिराळे चरुं तयार करुन दिलें. परंतु मुनिवर्यांनीं सासूपेक्षां पत्नीसाठीं अधिक चांगला चरुं तयार केला असेल, या भावनेनें चरुंचीं अदलाबदल करुन, कन्येचा चरुं आईनें स्वतः भक्षण केला व आपला कन्येस दिला. त्यामुळें ऋषीकुलास योग्य अशा चरुंच्या भक्षणानें विश्वामित्रांचा जन्म झाला, तर राज-घराण्याला युक्त अशा चरुंमुळें परशुरामांचें ठायीं ब्राह्म आणि क्षात्र अशा तेजांचें मीलन झालें. माता पित्यांनीं आपल्या या लाडक्या मुलाचें "राम" असें नांव ठेविलें. रामानें स्वतःच्या प्रखर तपस्येनें शिवांना प्रसन्न करुन परशु रुपानें चिन्मयशक्तीची प्राप्ति करुन घेतली. ती परशुरुपी शक्ति नित्य जवळ बाळगण्यानें "राम" हे पुढें परशुराम झाले.

प्रखरबुद्धिमत्तेच्या, या लाडक्या बालकाचें अध्ययन वडिलांच्या आश्रमांत चालू असतांना अेक कसोटीचा क्षण निर्माण झाला. क्रोधानें लाल झालेल्या जमदग्नींनीं मातृहत्येचा आदेश आपल्या मुलांना दिला. पण मातेवर हात अुगारण्याचें कृत्य चौघांहि भावांनीं मानलें नाहीं. क्षणाचाही विलंब न करतां परशुरामांनीं पित्याच्या आज्ञेचें पालन केलें. आज्ञा मानल्यामुळें प्रसन्न होअून

पुढें चालू...२.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

"वर माग" म्हणतांच "भावांसहित मातेचें संजीवन व्हावें व घडलेल्या प्रसंगाची तिला विस्मृती व्हावी". असा वर परशुरामांनीं मागीतला. मातेचें संजीवन झाले तरी मातृहत्येचें प्रतिक शिल्लक होतेंच. मातृवधाची आज्ञा करणाऱ्या जमदग्नीनींच परशुरामांना पापक्षालनार्थ तपस्येसाठीं कैलासावर शिवांचे जवळ पाठविले, आणि तपस्येच्या निमित्तानें परशुरामांच्या चिरंजीव अवतारांतील अेका विशिष्ट अंगाला सुरुवात झाली.

त्या अवधींत हैहय कुळांतील सम्राट, कार्तवीर्यार्जुन, जमदग्नींच्या आश्रमांत आले. आश्रमांतील कामधेनु पाहून तिचेबद्दल त्यांना अभिलाषा निर्माण झाली. त्यांनीं कामधेनूला बळजबरीनें नेण्याचा प्रयत्न केला. याच प्रकरणांतून कार्तवीर्याचा परशुरामांकडून वध झाला आणि शेवटीं २१ वेळां पृथ्वी, निःक्षत्रिय करण्याची प्रतिज्ञा त्यांना करावी लागली. क्षत्रिय संग्रामांत प्राप्त झालेल्या साऱ्या पृथ्वीचें अैश्वर्य कश्यपांना दान केल्यानें व दान केलेल्या वास्तूचा स्वतः अुपभोग घ्यावयाचा नसतो म्हणून सागराकडून नवभूप्रदेश मिळवून तेथें ते वास्तव्या-साठीं गेले. नवभूप्रदेशाची निर्मिती हें परशुराम अवतारांचें अेक वैशिष्टय म्हणून दाखवितां येईल. या नंतर अधून मधून त्यांचें प्राकटय होत असले तरी येथेंच अवतार निवृत्ति झाली असा दृष्टिकोन मांडण्यांत येतो. पण माझ्यामतें, अुन्मत्त राजांच्या निःपाताच्या निमित्तानें, परशुरामांना ब्राह्म आणि क्षात्र वृत्तींत समतोल निर्माण करावयाचा होता. त्यांच्या क्षत्रिय संहाराबद्दल गैरसमज दिसतात. पण अन्यायी वृत्तीचें मर्दन आणि वैदिक सनातन धर्माचें संगोपन हाच त्यामागील हेतु स्पष्ट आहे. ते अेक तात्कालिक कार्य होतें. तसें पाहिलें तर त्यांच्या चिरंजीव कार्याला सुरवात ते महेन्द्रगिरीवर तपस्येसाठीं गेल्यावरच झालेली आहे. कारण पुढें दाशरथी रामांची भेट घेअून स्वतःतील क्षात्रतेज परशुराम राघव रामाच्या ठिकाणीं निष्क्रांत करतात. या भेटींत दाशरथी रामांनीं परशुरामांचा पराभव केला अशासारखें गैरसमज पसरविणारे अुल्लेख मिळत असले तरी अधिकारी मंडळीनीं त्याचे विवेचन मोठें मार्मिक केलें आहे.

मी अेक राम दाशरथी । हें नाठवें श्रीरामाप्रती ।
मी अेक भार्गव भृगुपती । नाठवें चित्तीं परशुरामा ।
अैसें पडिलें आलिंगन । निघोर कोंदले चैतन्यघन ।
खुंटला बोल तुटले मौन । जालें परिपूर्ण पूर्णत्वें ।

दोघा रामांच्या भेटीचें रहस्य यांत आहे. पूर्णत्वानेंच परिपूर्णत्व गांठल्यावर जयापजय राहिलाच कोठें ?

पुढें चालू...३.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

जरासंधाच्या त्रासामुळें दक्षिणेकडे आलेल्या बलरामकृष्णांना भेटून परशुरामांनीं त्यांना मंत्रदीक्षा दिली आहे. आणि दुर्गयुद्धपद्धति समजावून सांगितली आहे.

कल्की अवतारांत ते कल्कींना वेदविद्या शिकविणार आहेत. महाविष्णूच्या नंतरच्या अवतारांना आपणांतील तेज देणें, युद्धपद्धति शिकविणें, किंवा वेद-वेदांगांत पारंगत करणें हें परशुराम अवताराचें वैशिष्टयपूर्ण कार्य म्हणून दाखवितां येईल.

यज्ञ, दान, तप, आदि सत्य सनातन धर्माच्या पंचसूत्रीच्या परिपालनांत ते अग्रगण्य आहेत. त्यांनीं केलेला अश्वमेध यज्ञ अद्वितीय आहे. खांडलविप्र समाजाची निर्मिति त्यावेळीं झाली असें तो समाज आजही मानतो. त्यांनीं अपरान्ता-तही यज्ञ केल्याचे अवशेष आजही दाखविले जातात. किंवा श्रीकृष्णाचें भेटीचें वेळीं त्रेताग्नी विस्ताराचा संकोच करून, केवळ होमासाठीं जवळ बाळगलेली धेनू घेऊन मी अेकटाच आलों आहें असें ते सांगतात. यावरुन त्यांच्या यज्ञप्रियतेचें दर्शन घडूं शकतें. पुराणांत यज्ञपति म्हणून त्यांचा अुल्लेख आढळतो. माध्व सांप्रदायी लोक हरिणीपति "परशुराम प्रीत्यर्थं" असें म्हणून रोजच्या वैश्वदेवाच्या आहुति देतात. वैष्णव सांप्रदायी मंडळींवरील प्रभाव लक्षांत घेण्या सारखा आहे.

दानाचा विचार करावयाचा झाला तर साऱ्या पृथ्वीसहित सर्वस्व ते देअून टाकतात. द्रव्याच्या इच्छेनें त्यांचेकडे येणाऱ्याला द्यावयास जवळ तर धन नाहीं आणि विन्मुखतर पाठवावयाचें नाहीं म्हणून द्रोणाचार्यांना धनुर्वेदाचें विद्यादान त्यांनीं केलें.

अगदीं बालपणापासून त्यांची तपस्या अविरत चालूं आहे. तात्कालिक निमित्तानें त्यांत थोडाफार खंड पडेल तेवढाच. ते अेक सर्वश्रेष्ठ तापसी आहेत. घोर तपस्येनें त्यांनीं शिवाना नुसते प्रसन्नच करून घेतलें असें नव्हे तर गुरुशिष्य अैक्याची परमोच्च श्रेणी त्यांनीं गांठली. त्याचे प्रतीक म्हणूनच कीं काय "शिवराम" हा शब्द त्यानंतर रुढ झाला असावा.

परशुराम हे केवळ अपरान्ताचें निर्माते नाहींत तर स्वतः निर्माण केलेल्या भूमींत आमंत्रित जमातींचीं त्यांनीं प्रस्थापना केलेली आहे. पतितांचा अुद्धार केलेला आहे. ब्राह्म आणि क्षात्रवृत्तींचा समतोल कायम राहील अशी अेक आदर्श समाज धारणा या नवप्रदेशांत त्यांनीं प्रस्थापित केली हे संस्कृति संगोपनाचें त्यांचें कार्य दशावतारांत सर्वश्रेष्ठ आहे.

पुढें चालू...४.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मातृहत्येचें अेकमेव अुदाहरण म्हणून ज्या परशुरामांच्याकडे बोट दाखविण्यांत येते, तेच परशुराम मातृसावर्ण्य मानणाऱ्या केरळ प्रांताचें परमश्रेष्ठ दैवत आहेत. तेथील सर्व समाजाची घडण परशुराम-शासित आहे. आजही तेथें परशुराम शक चालू आहे.

अत्यंत अुज्वल शिष्य परंपरा निर्माण केल्यामुळें परशुराम हे अेक श्रेष्ठ कुलगुरु समजले जातात. भीष्म, द्रोण, कर्ण यांना धनुर्वेद आणि राजनीति यांत त्यांनीं पारंगत केलें. या शिष्योत्तमांचें प्राविण्य इतकें अद्वितीय होतें कीं, भारतीय युद्धांत त्यांना समोरासमोर पराजित करणें भगवान श्रीकृष्णाला शक्य नव्हतें. म्हणूनच निरनिराळ्या क्लृप्त्या त्यांना योजाव्या लागल्या.

हरितायन मुनींना त्यांनीं श्री विद्येचें रहस्य अुकलून सांगितले आणि अशारीतीनें भूतलावर त्या गुह्यांतील गुह्य राजविद्येचें सर्वप्रथम प्राकट्य घडवून आणले. हें पाहून ब्रह्मदेवांना अचंबा वाटला आणि नारद महर्षींना तर भूतलावर येअून हरितायनाची भेट घेण्याची जिज्ञासा झाली. "परशुराम कल्पसूत्र" हा तंत्रशास्त्राचा पायाभूत ग्रंथ मानला जातो.

व्यास महामुनी किंवा स्वतःचें दीक्षागुरु अवधूत दत्तात्रेय यांच्या प्रमाणेंच जामदग्न्य राम हेही स्मर्तृगामी आहेत. मातेनें स्मरण करतांच कैलासावरुन येअून मातेसमोर ते अुभे राहतात. गोकर्णावरील ब्रह्मवृन्द संकटांत पडतांच त्यांच्या साहाय्याला ते धांवून जातात.

परशुरामांना "धनस्य देवता" म्हणूनही संबोधलेले आहे. ठाणें जिल्ह्यांत अेक परशुराम टेकडी असून तेथें त्यांचे मंदिरही आहे. टेकडीच्या पायथ्याशीं कोणाही भक्तानें थोडीशी जमीन अुकरली तरी त्यास गुंजभर सोने मिळे. त्यावरुन त्या ठिकाणास "गुंज" हें नांव प्राप्त झालें. सुवर्णतंत्राच्या परिशीलनावरुन असें दिसतें कीं, स्वतःचें निमित्त करुन वसाहतीसाठीं आणलेल्या जमातीच्या योगक्षेमाची गुरुकिल्ली त्यांना शिवाजवळून प्राप्त करुन घ्यावयाची होती.

अपरान्तांत निरनिराळ्या प्रांतांतून देवतांना आणून त्यांची स्थापना तर परशुरामानीं केलीच पण त्याशिवाय १४ ठिकाणीं पाशुपतास्त्राच्या साहाय्यानें स्वयंभू ज्योतिर्लिंगें निर्माण केली. यापैकी वालुकेश्वर महादेवाचा महिमा अेवढा होता कीं, प्रभु रामचंद्र आकर्षित होअून यात्रे निमित्त तेथें आले होते. हनुमानांनीं तर तेथें वास्तव्यच करण्याचें ठरविलें. पापक्षालन व पुनर्जन्म यापासून मुक्ति मिळावी म्हणून भक्तांचे थवेच्या थवे त्या ठिकाणीं जाते. छत्रपति शिवरायापासून कान्होजी आंग्रे किंवा राघोबादादा पेशवे पर्यंतच्या इतिहासांतील प्रसिद्ध व्यक्ति त्या यात्रेस जाअून आल्याचें संदर्भ गॅझेटियरमध्यें सांपडतात.

पुढें चालू...५.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

परशुरामांच्या पदस्पर्शानें सारा अपरान्त पुनीत झालेला आहे. ते तर परशुराम-क्षेत्रच आहे. साऱ्या भरतवर्षांत असा कानाकोपरा नाहीं कीं, ज्या ठिकाणी परशुरामांच्या लीलावैभवाची स्मृतिचिन्हें आढळत नाहींत. अवताराचा प्रभावच पहावयाचा झाला तर आसाम पासून पेशावरा पर्यंत किंवा कश्मीरपासून कन्याकुमारी पर्यंत तुम्हांस अेकादे तीर्थ, अेकादे कुंड, अेकादे ज्योतिर्लिंग किंवा अेकादी यज्ञवेदी कोठेना कोठे तरी आंढळेलच. कालाच्या ओघांत असंख्य अुत्पात होअूनही तो प्रभाव अद्यापहि टिकून आहे.

परशुराम चिरंजीव असल्यानें त्यांचें प्राकट्य निरनिराळया युगांत झालें आहे. अगदी अलीकडील अैतिहासिक काळांतही तसें संदर्भ मिळतात. विशेष असें कीं, या बहुतेक सर्व प्राकट्यांतून अेकसूत्रता दिसून येतें. संवत १६०० च्या सुमारास नारायणानें रचिलेल्या "सांखायन" गृह्यसूत्र प्रदिपिकेवरुन असें दिसतें कीं त्यांचें पूर्वज जनार्दन याला परशुरामानीं सहा महिनें वेदविद्या शिकविली व त्यानंतर प्रत्यक्ष दर्शन दिले. कल्की पुराणाशीं हा संदर्भ जुळता मिळतांच आहे.

स्कन्ध पुराणावरुन असें दिसतें कीं, वारणापुरांत प्रतिवर्षी संपूर्ण सप्ताह-भर रामोत्सव चाले. यज्ञपति परशुरामांचें गुणगान होई आणि रामगाथेंची पुनः-पुनः पारायणें केलीं जात - आजतरी ती गाथा नाममात्रच आहे. परशुरामांची इच्छाच झाल्यास तिचे प्राकटय पुन्हा होईलही.

रामबाण शब्द अुच्चारला कीं, आपणाला दाशरथी रामाच्या धनुर्विद्येंतील प्राविण्याची आठवण येते. पण सहयाद्रि खंडांतील रामबाण-सुनिर्मिता या शब्दावरुन असें पटूं लागतें कीं, हा शब्द प्रथम परशुरामांचें बद्दल वापरला गेला होता. ब्राह्म आणि क्षात्र वृत्तींतील समतोल निर्माण करण्याचें कार्य किंवा अपरान्तांतील त्यांनीं केलेली वसाहतीची मांडणीही अेका अर्थानें राम-राज्याचीं मूळ बैठक होती.

महाभारतावरील तात्पर्य निर्णय करतांना मध्वाचार्य म्हणतात कीं, भार्गवराम हे अनंतशक्ति सकलांतरात्मा, सर्वविद्, सर्ववशी आणि सर्वजित् आहेत. त्यांच्या सम अन्य कोणी नाहीं.

अग्रतश्चतुरोवेदान् पृष्ठतः सशरंधनुः ।
इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि ॥

हातांत वेद व पाठीवर धनुष्यबाण अशा रीतीनें अुभयतेजानें तळपणाऱ्या महापुरुषाचें वर्णन केवळ परशुरामांनाच लागू पडते. ते ध्यान प्रातःस्मरणीय आहे, वंदनीय आहे. जगाची आध्यात्मिक आणि आधिभौतिक प्रगति या अुभय तेजाच्या सहकार्यांत आहे, संग्रामात नव्हे. हेंच परशुरामांच्या अवतारकार्याचें सार आहे.

पुढें चालू..६.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ताण्डवी आणि वैष्णवी तेजाच्या संयुक्त अविष्कारांतच परशुरामांचे अवतारित्व सांठविलेले आहे; पुराण ग्रंथांतून आढळणारे किंवा भाग्यवंतांना दर्शन झाल्यावर त्यांनीं वर्णन केलेले परशुरामांच्या तेजाचें दर्णन तर अव्दितीयच आहे. क्रोधायमान झाल्यावर ज्याप्रमाणें ते कालाग्नीपेक्षांही दुःसह आहेत त्याचप्रमाणें शांत झाल्यावर जटाजूट धारण करणारे, शुभ्र वस्त्र असलेले भक्तवत्सल तापसीही आहेत.

थोडक्यांत सांगावयाचें झालें तर दशावतारांत भार्गवरामांचे कार्य अव्दितीय आहे. त्यांचें स्थान सर्वश्रेष्ठ आहे आणि सप्तचिरंजीवांत त्यांचें कर्तृत्व अग्रगण्य आहे.

म.स. पारखे.

(दिनांक २३-४-१९६६ रोजी ऑल इंडीया रेडीओ पुणें केंद्रावर झालेले भाषण)

पी/जि.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अनन्त श्रीविभूषित पूज्य श्री जी
महाराज

C/o श्री पं. दुर्गादत्त जी शर्मा
A-72 अमृत पथ
जनता कालोनी
जयपुर
302001

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

धर्म चक्र

॥ आरती सद्गुरु की ॥

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

॥ आरती सद्‌गुरु की ॥

("जय जय दत्तराज योगी" — की तर्ज पर गावें)

आरति श्री गुरु की, गाउं मैं, आरति सद्‌गुरु की ॥धृ.॥

सत्य धर्म उपदेश कियो तुम शिष्यों को सुखकारी ।
यही एक है धर्म सनातन, ऐसी शिक्षा तुम्हरी ॥
गुरु ऐसी शिक्षा तुम्हरी ।
गाउं मैं आरति सद्‌गुरु की ॥१॥

यज्ञ दान तप कर्म और स्वाध्याय ही सद्धर्म ।
वेदों का बस सार यही है, यही विश्वभर धर्म ।
गुरु यही विश्व भर धर्म ।
गाउं मैं आरति सद्‌गुरु की ॥२॥

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सीधी सच्ची राह यही, दुःखों को हरने वाली ।
सब दुःखों को हरने वाली ॥
कल्याण मार्ग पर जगत् चले, है यही कामना तुम्हरी ।
गुरु यही कामना तुम्हरी ॥
गाउं मैं आरति सद्गुरु की ॥३॥

धर्म आचरण पडे कठिन तो, जो तुमसे सीखे ।
नित्य तपस्वी जीवन का आदर्श उसको दीखे ॥
आदर्श तुममें दीखे ।
गाउं मैं आरति सद्गुरु की ॥४॥

क्या कितनी गाऊं महिमा मैं, अज्ञ दास हूँ तुम्हरा ।
धर्म प्रचारक जीवन बीते, कृपा चाहता बंदा ॥
गुरु कृपा मांगता बंदा ।
गाउं मैं आरति सद्गुरु की ॥५॥

रचयिता सेवक —
माधव गोविंद पोतदार
भोपाल (म. प्र.)

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मुद्रक :
गो. दा. वेळगी,
'पेपको' प्रेस,
३७६ शुक्रवार पेठ, पुणें २.

प्रकाशक :
ज. आ. मोंढकर,
नं. ४ भटवाडी
गिरगांव, बम्बई नं. ४.

प्रथम संस्करण – प्रति २५००, आषाढ शु॥ १५ शके १८८१
द्वितीय संस्करण – प्रति ५०००, आषाढ शु॥ १५ शके १८८२

मिलनेका पत्ता :—
गुरु मन्दिर,
श्री बाळप्पा मठ,
अक्कलकोट (जि. सोलापूर)

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ

श्री बाबासाहेब आपटे स्मारक समिति, नागपुर

स्वर्गीय श्री बाबासाहेब आपटे

पता : श्री. बाबासाहेब आपटे स्मारक समिति, ८० अ, हनुमाननगर,
नागपुर ४४०००९

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

स्व. उमाकांत केशव उपाख्य बाबासाहेब आपटे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रथम प्रचारक तथा अखिल भारतीय प्रचारप्रमुख थे। उनका संघ-निर्माता स्व. डॉ. हेडगेवारजी से संघ-स्थापना-काल से ही सम्पर्क आया था। तथा उनकी प्रेरणा से ही उन्होंने अपना सारा जीवन संघ-कार्यार्थ समर्पित कर दिया था। वे राष्ट्र-कार्य के साथ इतने एकरूप हो गये थे कि उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन की चर्चा अपने निकटतम सहयोगियों के साथ भी कदापि नहीं की जिससे उनका समग्र जीवनचरित्र वर्णन करना असंभव है। केवल राष्ट्र–समर्पित जीवन की साकार मूर्ति के रूप में ही हम उनका स्मरण कर सकते हैं।

उनका जीवन अखण्ड कर्मशीलता तथा ज्ञान की साधना का उदाहरण था जिसकी तुलना भारतीय ऋषि-मुनियों की परम्पराके साथ हो सकती है। उनकी आराध्य देवता राष्ट्र थी जिसकी उन्होंने काया, वाचा, मनसा आजीवन सेवा की तथा लक्षावधि स्वयंसेवकों को अपने राष्ट्र-समर्पित जीवन के आदर्श से प्रेरणा दी। एक परिव्राजक के समान वे समग्र भारत का प्रतिवर्ष प्रवास किया करते थे तथा उन्होंने अपनी अमृतमय वाणी से लक्षावधि लोगों के हृदयों में राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत की।

वे उत्तम वक्ता थे। हिन्दी, मराठी, बंगाली तथा अंग्रेजी भाषाओं में अपने भावों को व्यक्त करने की उनमें अद्‌भूत क्षमता थी। संस्कृत भाषा के प्रति उनकी, प्रगाढ श्रद्धा थी। उनकी प्रेरणा से ही जयपुर तथा नागपुर से क्रमशः भारती मासिक पत्रिका तथा 'भवितव्यम्' नामक साप्ताहिकका प्रकाशन हुआ था तथा दोनों पत्रिकाओं का प्रकाशन आज भी नियमित रूप से हो रहा है। उन्होंने संस्कृत का अध्ययन अपनी प्रौढावस्था में प्रारंभ किया परन्तु अपने अध्यवसाय तथा अध्ययनशीलता के बल पर उस भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त किया तथा पश्चात् उस भाषा के अध्ययन के लिए दूसरों को भी अनुप्राणित किया।

वे सिद्ध-हस्त लेखक थे। राष्ट्रीयता का पोषण करनेवाले विविध विषयों-सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक-पर उन्होंने हिंदी-मराठी में अनेक लेख लिखे हैं। उनका 'हमारी राष्ट्रजीवन की परम्परा' ग्रंथ उनकी अनुसन्धान-वृत्ति का परिचायक है, जिसमें उन्होंने दशावतारों की कथा के माध्यम से राष्ट्रजीवन की अखण्ड परम्परा का एक सुसूत्र ऐतिहासिक चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया था। उनकी यह हार्दिक इच्छा रही कि विद्वान् व्यक्ति अपने देश का ऐसा समग्र इतिहास लिखने का प्रयास करे जिसमें इस राष्ट्र को अनादिकाल से चलते पुरुष आ रहे पौरुष-संपन्न जीवन का परिचय प्राप्त हो सके।

स्व. बाबासाहेब ने अपना सर्वस्व राष्ट्रदेवता के चरणों में समर्पित कर दिया था अतः उनके उस उदात्ततम जीवन से हम भी कुछ प्रेरणा प्राप्त करने का हृदय में संकल्प करें।

स्मारकसमितिके हेतु एवं उद्देश्य

स्वर्गीय श्री बाबासाहेब आपटे की पुण्य-पावन स्मृति को अजरामर करने के हेतु मे "श्री बाबासाहेब आपटे स्मारक समिति की" स्थापना नागपुर में ८ अगस्त

...i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan...

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

१९७३ को की गई है। समिति का उद्देश्य सम्पूर्ण भारत में साहित्यिक, शास्त्रीय (वैज्ञानिक) सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यों के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण-कार्यों का संचालन एवं विकास करना है। इस दिशा में अग्रसर होने के लिए पुस्तकालय, विद्यालय, महाविद्यालय, औषधालय तथा अन्य सहायता-केन्द्रों की स्थापना एवं आयोजना करके राष्ट्रीय परम्परानुसार एवं सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याणार्थ नैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक शिक्षा का प्रसार करना; श्री बाबासाहेब आपटे द्वारा किये गये पवित्र कार्यों के समान कार्य करनेवाले सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिये उनकी वृद्धावस्था अथवा अस्वस्थ दशा में उनके द्वारा सम्पन्न निःस्वार्थ एवं निष्ठामय राष्ट्रसेवा के उपलक्ष में उनके लिये नागपुर में निवास तथा आश्रय का प्रबंध करना, एवं भिन्न-भिन्न समाज, मंडल, सभाओं और परिषदों के प्रत्येक व्यक्ति और सभासदों में राष्ट्रीयता की भावना निर्माण करना, एतदर्थ समय समय पर आवश्यकतानुसार सभा परिषद और सम्मेलन आदि आयोजित करके उनमें राष्ट्र-निर्माण-कार्य हेतु आपसी सहयोग और अनुशासन निर्माण करना है।

उपरोक्त कार्यों की पूर्ति के लिये बहुत बडे प्रमाण में धनसंग्रह करने की आवश्यकता है। उसी तरह इन कार्यों को सफलरूपसे सम्पन्न करने के लिये निष्ठावान् कार्यकिताओं को भी अपने व्यस्तजीवन में से नियमित ढंग से समय देने की आवश्यकता है। अतएव. राष्ट्राभिमान से प्रेरित प्रत्येक व्यक्ति, सभा, मंडल एवं संस्था से नम्र निवेदन है कि वे इस महान् कार्य के लिये तन मन धन पूर्वक सहकार्य और सहयोग प्रदान करें; तभी हम सच्चे अर्थमें स्वर्गीय श्री बाबासाहेब आपटे द्वारा किये गये महान् राष्ट्रीय कार्यको पूर्ण करने में सफल हो सकेंगे।

स्वर्गीय श्री बाबासाहेब आपटे अपने इतिहासके केवल अभिमानीही नहीं प्रगाढ अभ्यासक भी थे। अपने राष्ट्रके उज्ज्वलतर भविष्य निर्माणमें हमारे इतिहासका अभ्यास उपयोगी हो सकता है, ऐसी उनकी मान्यता थी। परन्तु इस विषयमें एक कमी उन्हें हमेशा खटकती थी वह थी हमारे संपूर्ण इतिहासका एकसाथ चित्र उपस्थित न होना। इस कमी को दूर करनेके लिये उन्होंने अनेकोंको प्रेरित करनेका प्रयास किया। किन्तु दुर्भाग्यसे उनके होते हुए यह कार्य न हो सका। अतः उनकी पावन स्मृतिमें निर्मित समितिकी ओरसे यह प्रयास हो यह उचित मानकर यह इतिहास संकलनकी योजना बनायी जा रही है।

इस कार्यमें रुची रखनेवाले कार्यकर्ताओंके सहयोगसे इस कार्यके लिये देशभरमें हजारों केन्द्र स्थापन कर उन केन्द्रोंके कार्यका सुयोग्य संचालन तथा नियंत्रण जिलास्तरपर कर संपूर्ण देशके सर्वांगीण इतिहासका संकलन हो सकेगा। देशके ख्यातनाम इतिहासकोंका सहयोग, मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करना इसका भी बहुत महत्त्व है।

इस कार्य के लिये उपयोगी हो सकनेवाले सभी साधनोंका यथोचित ध्यान रखना होगा। कथा, पुराण, गीत, महान् पुरुषोंके संस्मरण, भूर्जपत्र, ताम्रपत्र, शिलालेख, विशेष घटनाएँ तथा घरानोंके इतिहास, डिस्ट्रिक्ट गॅझेटियर्स, अन्य

...i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa...

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ऐतिहासिक पुस्तकें, विदेशी प्रवासियोंने लिखे पत्र तथा वृत्त आदि साधनोंका बहुत उपयोग हो सकता है। ऐतिहासिक घटनाओंके स्थान, मठ, मंदिर, राजघरानोंके प्रमुख स्थान, सन्त लोगोंके स्थान, आश्रम, धाम, नये पुराने ग्रंथ संग्रहालय आदि स्थानोंसे उपयुक्त सामग्री एकत्रित की जा सकती है।

यह ग्रंथ सच्चे अर्थमें सर्वांगपरिपूर्ण हो इसलिये यह संकलन केवल राजनैतिक न होकर समाजजीवनके सभी पहलुओंको स्पर्श करनेवाला हो यह आवश्यक है। अतः वीर पुरुषों और राजाओंके चरित्रके साथही हमारे देशमें निर्माण हुए महान् चिंतक, श्रेष्ठ संशोधक, अतुलनीय साहित्यकार, उच्च कोटीके शास्त्रकार तथा कलाकार, दुनियाके अन्यान्य देशोंमें जाकर वहाँके मानवोंकी सेवा कर उन्हें श्रेष्ठ संस्कृतिकी शिक्षा देने वाले सन्त, महात्मा, भक्त, मानवके ही क्या भूतमात्रके दुःखसे पीडित होकर उनके हितार्थ कार्यदक्ष और परिश्रमी किन्तु संन्यस्त जीवन बितानेवाले ऋषि और तपस्वी जनोंके जीवनका भी वृत्त संकलित करना होगा। हमारे देशके इस सर्वांगीण निर्माण और विकासमें इस देशकी माताओंने किया हुआ श्रेष्ठ कार्यभी हम भूल नहीं सकते।

कलियुगसे लेकर आजतकके ५००० से अधिक वर्षोंके काल को ६०–६० वर्षोंके कालखण्डमें विभाजित कर उनके अनुसार संपूर्ण देशका इतिहास लिखनेका और उसीके साथ साथ उन समयोंके हमारे देशके मानचित्र बनानेका प्रयास हमें करना है।

अतः अपने अपने केन्द्रमें हुई घटनाओंकी कालानुक्रमसे संदर्भसहित सूची बनाना और बादमें एकेक घटनाका स्वतंत्र कागजपर वृत्त लिखना ऐसा इस योजनाका स्वरूप होगा। इस प्रकार अन्यान्य केन्द्रोंमें बनी सूचिया और लिखे गये वृत्त एकत्रित करनेसे हमारे संपूर्ण देशका सर्वांगपरिपूर्ण इतिहास संकलित हो सकेगा। इस कार्यको सफल बनानेके लिये परिश्रम, लगन आदि बातोंके साथ प्रचुर मात्रामें धनकी भी आवश्यकता होगी। इन सभी बातोंमें सहकार्यके लिये समितिकी ओरसे हम विनम्र प्रार्थना करते हैं। समितिके प्रधान कार्यालयसे संपर्क करनेपर इस संबध में अधिक जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

भवदीय

डॉ. ब. ग. पांडे, अध्यक्ष
प्रभाकर फैजपूरकर, कार्यवाह

कृ. नि. मोहरील, उपाध्यक्ष
तुलसीराम सुरजन, कोषाध्यक्ष

मोरोपंत पिंगळे
गो. तु. जोशी
भा. शं. गोखले

वि. पु. बुटी
वा. ग. व्यास
श्री. वा. रा. शेंडे

शे. मा. निघोट

सदस्य, श्री बाबासाहेब आपटे स्मारक समिति

Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

(4) अध्यक्ष एवं महामंत्री द्वारा स्वीकृत बिलों का भुगतान करना ।

(5) प्रतिष्ठान की प्रत्येक चल अचल सम्पति का पूर्ण ब्यौरा रखना ।

22- व्यय के अधिकार-

(1) कार्यकारिणी की पूर्व स्वीकृति के बिना भी अध्यक्ष सौ रुपया तक व्यय करने की स्वीकृति दे सकता है ।

(2) प्रतिष्ठान को आवश्यकता के लिए महामंत्री अध्यक्ष की अनुपस्थिति के बिना भी पचास रुपया व्यय कर सकता है ।

(3) म[illegible] पचास रुपया तक की राशि अपने पास रख सकता है इससे अधिक होने पर कोषाध्यक्ष द्वारा बैंक में जमा करानी होगी ।

(4) सौ रुपया से अधिक की राशि व्यय करने के लिए अध्यक्ष को कार्यकारिणी की स्वीकृति आवश्यक होगी ।

(5) अध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष अथवा महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष के संयुक्त हस्ताक्षरों द्वारा ही धनराशि बैंक से निकाली जा सकेगी ।

(6) स्थायी निर्माण एवं व्यवस्था संबंधी कार्यों के लिए कार्यकारिणी की सम्मति लेना आवश्यक होगा ।

23- (7) आय-व्यय के निरीक्षण के अधिकार- प्रतिष्ठान को कोई भी सदस्य यदि प्रतिष्ठान के आय व्यय का निरीक्षण करना चाहे तो उसे कम से कम पन्द्रह दिन पूर्व सूचना देना आवश्यक होगा ।

24- विधान संशोधन एवं परिवर्तन-(1) प्रतिष्ठान के विधान में कभी भी अनिवार्यता उपस्थित होने पर कार्यकारिणी बहुमत से संशोधन एवं परिवर्तन के अंशों पर आधे से अधिक सदस्यों का सहमत होना आवश्यक होगा ।

(2) परिवर्तन प्रावधान राजस्थान संस्थान रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 की धारा 12 के आधार पर होना जरूरी होगा ।

25- रजिस्ट्रार संस्थाएं, राजस्थान को संस्था के निरीक्षण का पूर्ण अधिकार है व उनके द्वारा दिये गये सुझावों की पूर्ति की जावेगी ।

26- विघटन संबंधी प्रावधान राजस्थान संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 की धारा 13 व 14 के आधार पर होना वांछित है ।

27- कार्यकारिणी की बैठकें - (क) वर्ष के अन्तराल में कार्यकारिणी की कम से कम दो बैठकें होना आवश्यक है । बैठकों के बीच का अन्तर छः माह से अधिक नहीं होगा ।

(ख) कार्यकारिणी के आधे से अधिक सदस्यों की मांग पर कार्यकारिणी की बैठक कभी भी बुलाई जा सकती है ।

(ग) कार्यकारिणी की बैठक की सूचना यदि अत्यंत आवश्यक न हो तो कम से कम दस दिन पूर्व सदस्यों को देनी होगी ।

(घ) कार्यकारिणी की गणपूरक संख्या एक तिहाई मान्य होगी ।

(च) आवश्यकतानुसार कार्यकारिणी के सदस्यों से पत्र व्यवहार द्वारा भी सुझाव, सम्मति एवं मत लिया जा सकेगा ।

28- संस्थान का समस्त कार्य हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि में सम्पन्न होगा ।

29- हम निम्न हस्ताक्षर कर्ता यह प्रमाणित करते हैं कि उपरोक्त संस्था पूर्ण नाम के विधान की सही वह सच्ची प्रतिलिपि है ।

मंत्री   उपाध्यक्ष   अध्यक्ष

पदमामृतवाग्भवाचार्य सांस्कृतिक एवं शिक्षा शोध प्रतिष्ठान

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

[ब] यदि कार्यकारिणी ढाई वर्ष तक कोई चुनाव नहीं कराये तो संस्थापक सदस्य प्रतिष्ठान का संचालन आवश्यक कार्यवाही हेतु संभाल लेंगे ।

15- आर्थिक वर्ष- [अ] प्रतिष्ठान का वर्ष विक्रम संवत् से प्रारम्भ माना जायेगा ।

[ब] प्रतिवर्ष की समाप्ति के तीन माह के अंतर्गत वार्षिक आय व्यय एवं प्रतिष्ठान की गतिविधियों के संबंध में एक प्रतिवेदन तैयार किया जाकर सभी सदस्यों को सूचनार्थ प्रतिवर्ष भेजा जायेगा ।

16- चुनाव [अ] प्रतिष्ठान के पदाधिकारियों का चुनाव गुप्त या पद्धति द्वारा बहुमत से होगा ।

[ब] साधारण सभा द्वारा कार्यकारिणी के लिये प्रतिनिधियों का चुनाव किया जायेगा ।सभी प्रतिनिधि मिल कर प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी का गठन करेंगे ।

[स] प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये कार्यकारिणी अपने अन्तर्गत अन्य समितियों का गठन एवं उनके संचालन हेतु नियमों का निर्माण कर सकेगी ।

17- अध्यक्ष के दायित्व एवं कर्तव्य -

[1] कार्यकारिणी एवं साधारण सभा की बैठकों की अध्यक्षता करना
[2] कार्यवाही को नियमित एवं अनुशासित ढंग से करना
[3] संस्थान की बैठक की कार्यवाही, प्रस्तावों एवं बिलों पर हस्ताक्षर करना ।
[4] प्रतिष्ठान की प्रतिष्ठा एवं विकास के लिये सतत् प्रयत्नशील रहना ।

18- उपाध्यक्ष के दायित्व एवं कर्तव्य-अध्यक्ष की अनुपस्थिति में अध्यक्ष के समस्त दायित्वों का निर्वहन करना

19- महामंत्री के दायित्व एवं कर्तव्य -

[1] प्रतिष्ठान संबंधी समस्त अभिलेखों एवं पत्रादि की सुरक्षा,
[2] अध्यक्ष के परामर्श से विषय निर्धारण करना, कार्यकारिणी की बैठक बुलाना और उनकी व्यवस्था करना ।
[3] बैठकों की कार्यवाही को लिपिबद्ध करना एवं अध्यक्ष के हस्ताक्षर कराना ।
[4] प्रतिष्ठान की समस्त सम्पत्ति पर निरीक्षणात्मक दृष्टि रखना ।
[5] आय व्यय की समय-समय पर देखभाल करना तथा संबंधित बिलों को सत्यापित करना ।
[6] रेकार्ड को व्यवस्थित रखना ।
[7] प्रतिष्ठान का वार्षिक प्रतिवेदन तैयार करना तथा प्रस्तुत करना ।

20- संयुक्त मंत्री के दायित्व एवं कर्तव्य-

[1] प्रतिष्ठान संबंधी समस्त कार्यों में महामंत्री को अपेक्षित सहयोग देना ।
[2] बैठकों की व्यवस्था एवं कार्यवाही के लेखन में महामंत्री का सहयोग देना
[3] महामंत्री की अनुपस्थिति में उनके समस्त दायित्वों का निर्वहन करना ।
[4] महामंत्री अध्यक्ष की अनुमति से मंत्रियों के मध्य सौंपे गये कार्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करना ।

21- अर्थ मंत्री एवं कोषाध्यक्ष के दायित्व एवं कर्तव्य-

[1] प्रतिष्ठान के आय व्यय का सम्पूर्ण लेखा जोखा तैयार करना ।
[2] वार्षिक प्रतिवेदन तैयार करने में महामंत्री को सहयोग करना ।
[3] प्रतिष्ठान की धनराशि को कार्यकारिणी द्वारा स्वीकृत बैंक में जम---

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

(ख) संस्थापक सदस्य कालांतर में प्रतिष्ठान के निर्वाचित पद पर न रहने पर भी कार्यकारिणी के स्थायी सदस्य बने रहेंगे ।

(ग) संस्थापक सदस्य कार्यकारिणी के किसी भी पद पर चुनाव में खड़े हो सकेंगे ।

(घ) दलगत भावनाओं के कारण प्रतिष्ठान में जब कभी विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाए तो संस्थापक सदस्य प्रतिष्ठान का संचालन अपने हाथ में ले सकते है और प्रतिष्ठान को विघटित होने से बचा सकते हैं ।

(न) कार्यकारिणी द्वारा दिये गये निर्णयों में भी यदि प्रतिष्ठान के हित में आव[श्यक] हो तो परिवर्तन करने के संस्थापक सदस्य अधिकारी होंगे ।

(त) प्रतिष्ठान का अहर्निश हितसाधन संस्थापक सदस्यों के लिये अनिवार्य होगा तथा वे किसी प्रकार के शुल्क से प्रतिबंधित नहीं होंगे ।

(थ) चल सम्पति आदि की चाबियां तथा अचल सम्पति-भवनादि वस्तुओं पर नियंत्रण संस्थापक सदस्यों द्वारा संस्थापक सदस्यों में ही चयन किये गये दो सदस्यों के पास डबललोक में रहेंगी । किन्तु आवश्यकता पड़ने पर संस्थापक सदस्य किन्हीं अन्य दो को अपने स्थान पर अन्य सदस्यों की सहमति से एतदर्थ मनोनीत कर सकेंगे ।

निम्नलिखित सदस्य प्रतिष्ठान के संस्थापक सदस्य होंगे -

क्र० सं०	नाम	व्यवसाय	पता
1-	श्री गोविन्द जी मिश्रा	धर्मकार्य सम्पादन	चौबुर्जा, भरतपुर
2-	श्री दुर्गादत्त शर्मा	राज्य सेवा	ए-72, जनता कालोनी, जयपुर
3-	श्री गिर्राजशरणजी गुप्ता	" "	बी-208, जनताकालोनी, जयपुर
4-	श्री सियारामजी गर्ग	" "	बी-314 " " "
5-	श्री अखिलेश कुमार शर्मा	" "	ए-72, " " "
6-	श्री कालीचरण शर्मा	" "	बी-328, " " "
7-	डा० धर्मेश्वर जी शर्मा	चिकित्सक	चौबुर्जा, भरतपुर
8-	श्री धर्मगोपाल चतुर्वेदी	एडवोकेट	गोपालगढ़, भरतपुर
9-	श्री रमेशचन्द गुप्ता	"	बुधकी हाट, भरतपुर
10-	श्री गिरिराज शर्मा	धार्मिक सेवा एवं अध्ययन	जयपुर
11-	आचार्य दयानन्द सारस्वत	राज्य सेवा	जोधपुर

13- कार्यकारिणी- प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी का गठन निम्न प्रकार होगा :-

1- अध्यक्ष-एक
2- उपाध्यक्ष - दो
3- महामंत्री- एक
4- संयुक्त मंत्री -दो
5- अर्थ मंत्री (कोषाध्यक्ष)- एक
6- सदस्य - आठ

14- कार्यकाल (अ) निर्वाचित होने के पश्चात् प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी का सामान्यतः दो वर्ष का होगा । विशेष परिस्थितियों में कार्यकारिणी समय की उक्त अवधि को प्रस्ताव द्वारा छः मास के लिए और बढ़ा सकती है ।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

- सदस्यता शुल्क- प्रतिष्ठान के विभिन्न सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार से होगे :-

[1] सहयोगी सदस्य - दस रुपया प्रतिवर्ष,
[2] सक्रिय सदस्य - दस रुपया प्रतिवर्ष तथा 51/- अथवा अधिक एक मुश्त एक बार
[3] आजीवन सदस्य- दस रुपया प्रतिवर्ष तथा 501/-अथवा अधिक एक मुश्त में एक बार
[4] मान्य सदस्य -प्रतिष्ठान के अध्यक्ष महोदय कार्यकारिणी की अनुमति से अधिक से अधिक दो विशिष्ट व्यक्तियों को एक वर्ष के लिये मान्य सदस्य बना सकते हैं। मान्य सदस्य को सदस्यता शुल्क देना अनिवार्य नहीं होगा।
[5] संस्थापक सदस्य- प्रारम्भ में जिन व्यक्तियों ने प्रतिष्ठान के गठन कर उसे मूर्त दिया है तथा निष्ठापूर्वक कार्य किया है वे प्रतिष्ठान के संस्थाप सदस्य कहलायेंगे।

9- प्रवेश शुल्क- प्रतिष्ठान का सदस्य बनने पर एक रुपया प्रवेश शुल्क के रूप में प्रत्येक सदस्य को प्रथम बार देना अनिवार्य होगा।

10- सदस्यों की अपात्रता- निम्नलिखित व्यक्ति प्रतिष्ठान के सदस्य नहीं बन सकेंगे - [1] मांस, मदिरा का सेवन करने वाले, [2] मानसिक रोगी [3] आपराधिक अभियोग से दण्डित व्यक्ति [4] देश, धर्म, संस्कृति और प्रतिष्ठान के उद्देश्यों में आस्था न रखने वाले व्यक्ति।

11- सदस्यों की नियोग्यतायें-
[1] निर्धारित शुल्क न देने पर,
[2] स्वयं त्यागपत्र देने पर,
[3] प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की पूर्ति में बाधक बनने पर,
[4] कार्यकारिणी द्वारा उपस्थित दो तिहाई बहुमत से अयोग्य करार देने पर,
[5] प्रतिष्ठान के नियमों की अवहेलना करन पर,

12- सदस्यों के अधिकार-
[1] सहयोगी सदस्य - प्रतिष्ठान की समस्त गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में सहयोगी के रूप में सम्मिलित हो सकेंगे। कार्यकारिणी के चुनाव के अवसर पर मत देने का अधिकार होगा किन्तु किसी पद पर खड़े होने का अधिकार नहीं होगा।

[2] सक्रिय सदस्य- प्रतिष्ठान के हित के लिए समयानुसार सक्रिय योगदान देना अनिवार्य होगा। कार्यकारिणी के चुनावों में अपना मत दे सकेंगे तथा किसी भी पद पर खड़े हो सकेंगे।
[3] आजीवन सदस्य - कार्यकारिणी के स्थायी सदस्य के रूप में रहेंगे। कार्यकारिणी में उपस्थिति अनिवार्य नहीं होगी। कार्यकारिणी में मतदान का अधिकार नहीं होगा। किन्तु प्रस्तुत विषयों पर अपने सुझावों से प्रतिष्ठान कार्यकारिणी को लाभान्वित करते रहेंगे
[4] मान्य सदस्य- कार्यकारिणी को अपने सुझावों से लाभान्वित करते रहेंगे किन्तु कार्यकारिणी में मतदान का अधिकार नहीं होगा।

[5] संस्थापक सदस्य -[क] प्रतिष्ठान के संस्थापन में मूलरूप से जिन व्यक्तियों ने प्रयत्न एवं श्रम किया है उन्हीं की प्रतिष्ठान के हित एवं प्रतिष्ठान की भावना हेतु रखा गया है।

--------3/-

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

।। श्री कामेशाम्बा गुरुभ्यो नमः ।।

श्री मदमृतवाग्भवाचार्य सांस्कृतिक शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान

1. नाम- इस प्रतिष्ठान का नाम श्री मदअमृत वाग्भवाचार्य सांस्कृतिक शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान रहेगा ।

2. कार्यालय- इस प्रतिष्ठान का केन्द्रीय कार्यालय जयपुर रहेगा ।

3. कार्यक्षेत्र - कार्यक्षेत्र की दृष्टि से इस प्रतिष्ठान का क्षेत्र सम्पूर्ण भारत रहेगा ।

4. प्रतिष्ठान के उद्देश्य - प्रतिष्ठान के निम्नलिखित उद्देश्य रहेंगे :-

1- योग, अध्यात्म तंत्र एवं श्री विद्या संबंधी शोध, गवेषणा एवं प्रकाशन.

2- वैदिक वाङ्मय का विधि विधाओं पर वैज्ञानिक अनुसंधान एवं संरक्षण.

3- प्राचीन पाण्डुलिपियों का संरक्षण

4- संस्कृत भाषा का प्रचार, प्रसार एवं संरक्षण तथा संस्कृत विद्यार्थियों के छात्र वृत्ति आदि वितरण.

5- प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की सम्पूर्त्यर्थ पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन एवं प्रकाशन.

6- योग एवं तंत्र विद्या का व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं प्रयोग शाला का निर्माण.

7- समय-समय पर संगोष्ठियों, विशिष्ट आयोजनों एवं अध्ययन शिविरों के द्वारा भारतीय आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप को जन मानस में प्रतिष्ठापित करना।

8- विशिष्ट विद्वानों एवं प्रतिभाओं आदि का सम्मान एवं अभिनन्दन

9- उपरोक्त उद्देश्यों की सम्पूर्ति एवं अनुसंधान कार्य में उपयोग हेतु श्री पुस्तकालय की स्थापना एवं श्री भवन का निर्माण.

~~10-~~

5. आय के स्त्रोत एवं साधन- (अ) प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आय के निम्न लिखित स्त्रोत होंगे ।

1- सदस्यता शुल्क, 2-चन्दा, 3-राजकीय सहायता एवं अनुदान, 4-कालांतर में प्रतिष्ठान द्वारा भेंट अथवा अन्य किसी प्रकार की आय.

(ब) प्रतिष्ठान में ली गई किसी प्रकार की भी धनराशि की अधिकृत रसीद दी जायेगी ।

(स) स्थायी सम्पति दान लेने के लिए अध्यक्ष एवं महामंत्री प्रतिष्ठान के अधिकृत प्रतिनिधि होंगे तथा संबंधित अधिकार पत्रों पर उनके हस्ताक्षर प्रतिष्ठान के प्रतिनिधि के रूप में मान्य होंगे । सम्पति पर प्रतिष्ठान का स्वामित्व होगा।

6- सदस्यता- प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रहने वाला कम से कम अठारह वर्ष का कोई भी पुरुष एवं महिला प्रतिष्ठान का निर्धारित शुल्क एवं सदस्यता पत्र द्वारा बन सकते हैं ।

7- सदस्यता के प्रकार -(1) सहायोगी सदस्य (2) सक्रिय सदस्य (3) आजीव
(4) मान्य सदस्य (5) संस्थापक सदस्य

------2/

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

हरेराम हरेराम रामराम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

(नामजप यज्ञ)

* अक्कलकोटनिवासी परमसद्गुरु श्रीगजाननमहाराजके कृपाशीर्वादसे हो संकल्पित नामजपयज्ञ तथा उसकी सांगता प्रत्यर्थ को जानेवाले २॥ करोड मंत्रसंख्या पूर्ण की ।

* आनंद प्रीत्यर्थ निम्नलिखित स्थानोंपर यज्ञ-याग किये गये :
पूना— नवचंडीयाग, सोलापुर – नवचंडी, गणेश तथा रूद्रयाग, कोल्हापुर– और गणेशयाग, अक्कलकोट– गणेशयाग.

* इस याग का प्रसाद आपको प्रसाद रूपमें भेजा है !

* प्रयत्न किया जानेपर आपके विभागमेंभी एकाध 'याग' किया जा सकता है ।

* उपरनिर्दिष्ट 'कलिकल्मषनाशनषोडशनाम' महामंत्रका जप अब पुरुषवर्गभी कर इसप्रकारकी अनुमती 'श्री'जीसे मिली है । जगत् कल्याणार्थ इसमंत्रका जप व्यक्तिने करना चाहिये यह श्री जीकी इच्छा है ।

* ज्येष्ठ शु॥षष्ठीयुक्त सप्तमी शक १८९० दिनांक ३-६-१९६८ के दिवसपर श्री ५० साल पूर्ण होकर उन्होंने ५१ वर्षमें पदार्पण किया है । तन्निमित्त गुरुभक्तोंने अगलेवाले वसंतऋतुमें (मार्च १९६९) सोमयाग महायज्ञ करनेका निश्चय किया है । इसीलिये श्रीसद्गुरु सेवा समिति की स्थापना

* श्री गुरुसेवा समितीके कार्यालयने प्रसिध्द किया हुवा प्राथमिक पत्रक आप है ।

* आपके समान आपके विभागके अन्य श्रध्दावान स्त्री-पुरुषभी यथामती सेवा क सहभागी हो सकते है । इसलिये आप आवश्यक प्रयत्न करे यही इच्छा ।

नामजपयज्ञ समिति 'सत्संग'
३७६, शुक्रवार पेठ, शिवाजीरोड, पुणे-२.
महाराष्ट्र

— वा.ग.वडनेरे
कार्यवाह
दिनांक : १४-

— ००० —

कु/ १७-७-६८.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भारतीय साहित्यकार संघ, केन्द्रीय कार्यालय,
पत्रांक ००५५/बं० ..५७
दिनांक १६ जुलाई सन् ६८

[illegible]
के उप संपादक श्री अरुणप्रकाश अवस्थी का व्यक्तव्य.

व्यक्तव्य....१८.५७६.६८

दिनांक १७ जुलाई सन् ६८ को लोक सभा की उपसमिति में इंडियन पैनलको
संशोधित १९६७ के संदर्भ में अश्लील साहित्य के प्रकाशन एवम् लेखन पर रो
लगाए जाने पर विचार हुआ. साक्षी के रूप में भारतीय साहित्यकार संघ
बंगाल एकांश के संयोजक के नाते मैं ने भाग लिया. मैंने ऐसे समस्त साहित्य
प्रतिबन्ध लगाए जाने की मांग की कि जिससे हमारा राष्ट्रीय, जातीय,
एवम् व्यक्तिगत चरित्र गिरता हो. विदेशी राष्ट्रों द्वारा हमारे प्रतिकूल
प्रचार साहित्य के माध्यम से हो रहा है वह एक सुनियोजित षड्यन्त्र
अविलम्ब रोक लगाई जानी चाहिए. तथा सरकार का ऐसे समस्त साहि
और साहित्यिक संस्थाओं को सहयोग मिलना चाहिए जिनसे राष्ट्रीय
और जातीय गरिमायुक्त साहित्य सृजन हो रहा है. अश्लील साहित्य
कुछ जटिल अवश्य है लेकिन सामाजिक मान्यताओं और मर्यादाओं के मा
सभी जानते हैं कि श्लील और अश्लील में कितना अन्तर है.

भारतीय साहित्यकार संघ और ज्योत्स्ना बंगाल की दोन
एक संस्थाओं द्वारा किए गए कार्य पर जब मैंने प्रकाश डाला तो कुछ प्रगति
कहलाने वाले लोगों को बुरा लगा और उनका रुख सहयोगात्मक नहीं लगा
कि सरकार अभी तक देश में ऐसे मापदंड का निर्माण नहीं कर पाई है जिसे
विवेकपूर्ण स्वतंत्र निर्णय ले सके. मुझ को आशा है कि सरकार द्वारा संपादि
समिति एकाएक कोई निर्णय तबतक नहीं लेगी जबतक देश के जनमानस का उ
दान नहीं मिल जाएगा.

इस्तम् ..

अरुण प्रकाश अवस्थ
प्रा० संयोजक भारतीय सा
[illegible] संघ बंगाल एकांश

१७ जुलाई १९६८

[illegible]

भारतीय साहित्यकार संघ, बंगाल

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्राचीन भारत सत्र के अध्यक्ष, सम्प्रति जोधपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा० दशरथ शर्मा ने इतिहास के विविध पक्ष और लक्ष्यों की व्याख्या करते हुए घोषित किया कि इतिहास का स्थापन ऐतिहासिक तत्वों की स्थापना मात्र के लिए नहीं अपितु सांस्कृतिक तथ्यों को श्रोताओं के मन में बैठाने के लिए प्राचीन भारत में किया जाता रहा है ----- भारतीय इतिवृत्त की स्थिति अब भी अत्यन्त अव्यवस्थित है -----कहीं पूर्वाग्रहवश और कहीं अज्ञानवश इनपर एकमत नहीं हो पाता ---अन्त में इन्होंने कहा कि इतिहासकार के लिए अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमृतत्व की ओर बढ़ने से अधिक ईप्सित कोई लक्ष्य नहीं हो सकता -----मध्यकाल सत्र के अध्यक्ष डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने सार रूप में कहा कि

But the most effect of the examping Mughal rule was that the Hindus could not speak or write the truth; they could mohdeal with the musting on equal terms, and deneloped low, coming, hypocrisy and even deciet to get on the in the world. The demoralization of the Hindu character is the greatest blot on the theeratic Mughal rule in India.

और वरिष्ठ विद्वान डा० दत्तोवा पोद्दार ने घोषणा की कि मति ही एक

[illegible] सकता है

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

७

घोषित करेगी परन्तु इस ... के ...
संघ को ...पक और शा... ...

भारतीय साहित्यकार संघ–नियमोपनियम

(भारत सरकार से पंजीकृत स० एस० २५६३ तथा पंजीकृत नियमोपनियम धारा १८ के अन्तर्गत भारतीय साहित्यकार संघ की साधारण सभा द्वारा सर्वसम्मति से संशोधित एवं आचार्य अमृतवाग्भव की आज्ञा से प्रसारित)

Please see page 7

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भारतीय स[illegible] के [illegible]य

१. भारत की अध्यात्मसाधनाओं तथा आदर्शों पर आधारित साहित्य का भारतीय भाषाओं में निर्माण, प्रकाशन, प्रचार तथा प्रसार।

२. सत्साहित्य के प्रसंग में भारतीयदृष्टि की स्थापना हेतु संगठन तथा संघर्ष और भारतीय आस्थाओं तथा मर्यादाओं पर आधारित साहित्य-समीक्षा की स्वस्थ परिपाटी की स्थापना।

३. भारत की प्राचीन विधाओं का अनुसंधान और प्रचार।

४. पठन-पाठन तथा मनन-चिन्तन हेतु स्वाध्याय मंडलों की स्थापना।

५. प्राचीन मध्ययुगीन तथा अर्वाचीन साहित्य के संरक्षण हेतु संग्रहालयों तथा पुस्तकालयों की स्थापना।

६. साहित्यिक अभिवृद्धि तथा वातावरण के लिए सम्मेलन, संगोष्ठी, गोष्ठी, संवाद अभिनय आदि ऐसे कार्य करने जिनसे उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हो।

७. भारतवर्ष की विविध भाषाओं में उपलब्ध एवम् सृष्ट साहित्य में व्यक्त होने वाली साहित्य-परम्परा के ऐक्य का अनुसंधान एवम् प्रचार।

८. सत्साहित्य की गवेषणा एवम् परस्पर तुलना।

९. भारतीय लिपियों का ऐतिहासिक एवम् वैज्ञानिक अन्वेषण।

१०. उपर्युक्त विषयों की शिक्षा तथा परीक्षा।

अतः हमने अपने कार्य को त्रिधारा के रूप में विस्तार देने का निश्चय किया है : १ अनुसंधानात्मक, २ परिष्कारात्मक और ३. प्रचारात्मक।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

धारा ३—

कार्य समिति के गठ[illegible] म इ[illegible] ना [illegible] होगा कि कार्य समिति के १/३ अर्थात् तिहाई सदस्य संस्थापक सदस्यों में से होंगे ।

धारा ४ (क)—सदस्यों की योग्यता तथा मान्यता—

संस्थापक सदस्य—संस्थापक सदस्यों की दो श्रेणियाँ होंगी—केन्द्रीय, क्षेत्रीय।

क. केन्द्रीय संस्थापक सदस्य वे ही हो सकेंगे जो तीन वर्ष तक क्षेत्रीय संस्थापक सदस्य रहे हैं अथवा वे होंगे जिन्होंने संघ की सर्वप्रथम स्थापना करके उसको पंजीकृत करवाया है ।

ख. लगातार तीन वर्षों तक संघ की स्थापना, दृढ़ीकरण तथा वैधानिक व्यवस्था की स्थापना करने वाला संयोजक,

ग. ५०० रु० अथवा इससे अधिक राशि की वस्तु अथवा धनदान करके संघ के नियमोपनियम को स्वीकार करने वाला तीन वर्ष का सक्रिय सदस्य,

घ. कार्य संतुलन, परिवर्धन, पुरस्करण हेतु केन्द्रीय कार्यसमिति द्वारा नियुक्त व्यक्ति जो निरन्तर ३ वर्ष तक सक्रिय रहा है,

ङ. सदस्यों को अथवा किसी को उपर्युक्त धाराओं के अनुसार संस्थापक सदस्य होने का निश्चय केन्द्रीय कार्य समिति करेगी । विशेष स्थिति में महामन्त्री मुख्य संयोजक की सहमति से कार्य संचालनार्थ संस्थापक संयोजक सदस्य की नियुक्ति कर सकता है परन्तु ऐसी नियुक्ति की पुष्टि १ वर्ष के भीतर ही केन्द्रीय कार्यसमिति से प्राप्त करना अनिवार्य होगा । केन्द्रीय कार्यसमिति को अधिकार होगा कि वह संस्थापक सदस्यों को संस्था के हित के विरुद्ध गतिविधियों में

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

[illegible] ने पर विचार करे और [illegible] धारण [illegible] प्त [illegible] आवश्यक कार्यकाही करे ।

च. सभी सदस्यों का अधिवेशन में भाग लेने के लिए शुल्क देना पड़ेगा जिसकी राशि का निर्णय केन्द्रीय कार्यसमिति करेगी ।

धारा ४ (ख) साधारण सदस्य

क. संघ के उद्देश्यानुकूल विचार रखने वाली और कार्य करने वाली संस्था, जो संघ की केन्द्रीय समिति को ५१ रु० अथवा इससे अधिक वार्षिक सहायता दे उसका एक प्रतिनिधि अथवा,

ख. केन्द्र को १० रु० वार्षिक सदस्यता शुल्क देकर सीधे सदस्यता प्राप्त करने वाला व्यक्ति साधारण सदस्य होगा ।

धारा ४ (ग) सम्मानित सदस्य

साहित्यकार संघ के अनुकूल विद्वान, लेखक एवं विशिष्ट जन, जिनका नाम केन्द्रीय कार्य समिति में स्वीकृत हो गया हो, सम्मानित सदस्य माने जाएंगे ।

धारा ४ (घ) संरक्षक सदस्य

विशेष परिस्थिति में संघ के हितानुकूल रहकर १००१/५००/२५१ तथा १५१ रु० का दान देने वालों को संरक्षक सदस्य स्वीकार किया जा सकता है । ऐसे सदस्यों को अधिवेशन में अन्य सम्मानित तथा वरिष्ठ सदस्यों के साथ समादृत किया जाएगा ।

धारा ४ (ङ) मुख्य संरक्षक

भारतीय साहित्यकार संघ का एक मुख्य संरक्षक होगा जिसके अधिकार केन्द्रीय कार्य समिति के "कर्तव्याधिकार धारा १५ के भाग (ज)" के अनुसार होंगे । भारतीय साहित्यकार संघ का प्रथम प्रधान मुख्य संरक्षक होगा । कालान्तर में किसी कारण से इस स्थान के रिक्त होने पर उस समय तक प्रधान पद सुशोभित करने वालों में से वरिष्ठ प्रधान का नाम मुख्य संरक्षक के लिए

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

साधारण सभा बहुमत से घोषित करेगी परन्तु उस [illegible] के [illegible] को प्राथमिकता दी जाएगी जिसने संघ को व्यापक और श[illegible]ाली बनाने में [illegible]क योग दिया है।

धारा ४ (च) मुख्य संयोजक

भारतीय साहित्यकार संघ का प्रथम महामंत्री मुख्य संयोजक होगा। किसी कारण इस स्थान के रिक्त होने पर उस समय तक महामंत्री पद सुशोभित करने वालों में से वरिष्ठ महामंत्री का नाम मुख्य संयोजक के लिए साधारण सभा बहुमत से घोषित करेगी परंतु उस व्यक्ति को प्राथमकिता दी जाएगी जिसने संस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने में सर्वाधिक कार्य किया है।

मुख्य संयोजक के अधिकार—मुख्य संयोजक जब संघ के कार्य में ऐसी गतिविधि देखेगा जिससे संघ के मूल उद्देश्यों को हानि पहुंचने की सम्भावना उत्पन्न हो जाये तब वह केन्द्रीय कार्यसमिति को सूचित करेगा कि इस दुर्व्यवस्था को सुधारे और यदि उसके बाद निर्धारित अवधि में उक्त कार्य समिति ध्यान न दे तो वह तत्सम्बंधित समिति को मुख्य संरक्षक की सम्मति से भंग करके तदर्थ समिति नियुक्त करेगा और साहित्यकार के संघ नियमोपनियम के अनुसार कार्य चलाने का प्रबंध करेगा। यह संघ की किसी भी समिति की बैठक में उपस्थित हो संस्था के हित के लिए दिशा निर्देशन कर सकेगा। संस्था की व्यापकता के लिए मुख्य संयोजक निधि की स्थापना की जा सकेगी जिसको संस्था के व्यापक एवं सैद्धांतिक हित के लिए कोश के उपयोग का अधिकार होगा। यह संघ की संगठनात्मक प्रक्रिया का प्रमुख होगा।

धारा ५ – गतिविधियों तथा प्रादेशिक परिषद, साधारण सभा तथा केन्द्रीय कार्य समिति का गठन—

क. संघ के २० अथवा इससे अधिक सदस्य जिस नगर अथवा नगरांचल अथवा ग्राम में हों वही संघ की गतिविधि का गठन कर सकते हैं, इस संदर्भ में केन्द्रीय कार्यसमिति की स्वीकृति अनिवार्य होगी।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ख- [illegible] भी [illegible] संघ के ३० या ३० से अधिक सदस्य होंगे उस प्रदेश में केन्द्री[illegible] संयोजक केन्द्रीय कार्यसमिति के परामर्श से प्रादेशिक परिषद का गठन कर सकता है।

ग. जिस प्रदेश में प्रादेशिक परिषद् विद्यमान है वहाँ से ५० सदस्यों के पीछे एक और फिर प्रति ५० पर एक प्रतिनिधि साधारण सभा के लिए केन्द्रीय संयोजक निर्वाचित करवाकर भिजवा सकेगा। प्रतिनिधियों का निर्वाचन केन्द्र द्वारा नियुक्त निर्वाचनाधिकारी की देख-रेख में होगा। इसके लिए गुप्त मतदान तथा नामाँकन पत्र भरने की व्यवस्था नियुक्त निर्वाचिनाधिकारी के आवश्यक आदेशानुसार की जायेगी। साधारण सभा के लिए प्रत्याशी की योग्यता इस प्रकार होगी :—

१. वह पिछले तीन वर्षों से साहित्य क्षेत्र में भारतीय साहित्यकार सघ द्वारा घोषित उद्देश्यों के अनुकूल निरंतर कार्य करता रहा है।

२. उसने प्रतिवर्ष समय पर अपना शुल्क केन्द्र को भेजकर रसीद प्राप्त कर ली है,

३. वह भारतीय साहित्यकार संघ के उद्देश्यों के लिए निष्ठावान रहने की घोषणा करता है तब केन्द्रीय कार्य समिति की व्यवस्थाओं को समादृत करेगा;

घ. संघ की साधारण सभा का गठन् संयोजको, व्यवस्थापक सदस्यों के अतिरिक्त प्रादेशिक परिषदों से निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा होगा।

ङ. संघ की केन्द्रीय कार्य समिति का गठन संघ के प्रधान और महामंत्री मुख्य संयोजक की सम्मति से करेंगे। इस समिति में प्रधान के अतिरिक्त २ उपप्रधान, १ महामंत्री, २ मंत्री, १ कोषाध्यक्ष तथा कम से कम ५ अन्य सदस्य होंगे। केन्द्रीय कार्य समिति का गठन करते

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

समय यह ध्यान रखा जायेगा कि [illegible] एक सदस्य अवश्य हो। आवश्यकतानुसार [illegible] सदस्य [illegible] सहयोजित किया जा सकता है जिनकी संख्या उपयुक्त सदस्यों की कुल संख्या के १/३ से अधिक नहीं होगी। केन्द्रीय पदों पर केन्द्रीय संस्थापक सदस्यों को प्राथमिकता दी जायेगी।

धारा ६ संघ की सदस्यता की स्वीकृति

सदस्यता शुल्क देकर संघ का सदस्य बनने की इच्छा प्रकट करने वालों तथा किन्हीं दो संस्थापक सदस्यों द्वारा समर्थित व्यक्ति को सदस्य स्वीकार करने के प्रसंग में अंतिम निर्णय केंद्रीय कार्य समिति अथवा उसके द्वारा गठित समिति की स्वीकृति से होगा। कार्य की सुविधा की दृष्टि से केंद्रीय कार्य समिति कुछ समय के लिए एक प्रतिनिधिमंडल सदस्यता की स्वीकृति प्रदान करने के लिए नियुक्त कर सकती है। सदस्यता प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय कार्यसमिति द्वारा जारी किये गए सदस्यता पत्रक को भरना आवश्यक होगा। सदस्यता के लिए आवेदनकर्त्ता को १ माह के भीतर-भीतर सदस्यता प्रमाणपत्र अर्थात् केंद्रीय रसीद मिल जानी चाहिए।

धारा ८ सदस्यता शुल्क

संघ की सदस्यता का शुल्क धारा ४ के अंतर्गत लिखे शुल्क के अनुसार होगा। साधारण सदस्यता शुल्क के लिए १० रु० प्रतिवर्ष देना आवश्यक है जो प्रथम वर्ष से सदस्य बनने के समय तथा उसके बाद प्रत्येक वर्ष के प्रथम सप्ताह में लिया जायेगा। परंतु संघ का कोई भी सदस्य स्वेच्छानुसार सुनिश्चित सदस्यता शुल्क से अधिक भी दे सकता हैं। सुनिश्चित सदस्यता शुल्क की मात्रा में परिवर्तन करने का अधिकार संघ की साधारण सभा के पास रहेगा जो दो तिहाई बहुमत से इस प्रसंग में अपना प्रत्येक निर्णय करेगी।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

घ[illegible]

स[illegible] के प्रथम दो मा[illegible]क सदस्यता शुल्क न देने वाला सदस्य अपने को संघ की सदस्यता से स्वयं पृथक समझ ले। इस प्रसंग में स्मरणपत्र यथा स्थिति संघ की प्रादेशिक परिषद अथवा केन्द्रीय कार्य समिति की ओर से भेजा जाएगा।

धारा ९ संघ से निर्वासन

क. संघ के लक्ष्यों तथा उद्देश्यों का उल्लंघन करने वाले अथवा संघ के संविधान के प्रतिकूल आचरण करने वाले अथवा संघ के सामूहिक हितों को हानि पहुंचाने वाले अथवा सघ पर मिथ्या आरोप लगाले अथवा संघ के विरुद्ध अपवाद फैलाने वाले अथवा संघ पर अभियोग चलाने वाले अथवा अन्य किसी प्रकार संघ को हानि पहुंचाने वाले सदस्य को संघ से निर्वासित कर दिया जायेगा।

ख—किसी सदस्य के विरुद्ध उपरोक्त प्रकार की शिकायत प्राप्त होने पर उसको स्मारक पत्र द्वारा आत्मार्जन करने का अवसर दिया जाएगा तथा निर्वासन का निर्णय सम्यक् समाधान के उपरान्त ही किया जाएगा,

ग—इस प्रसंग में शिकायत सुनने, स्मारक पत्र भेजने तथा यथोचित निर्णय करने का अधिकार संघ की केन्द्रीय कार्यसमिति के पास रहेगा।

घ—निर्वासन की अवधि पूरी हो जाने पर अथवा निर्वासित सदस्य के क्षमा याचना पर उपरोक्त समिति उस सदस्य को सदस्यता प्रदान करने के विषय में निर्णय कर सकती है।

धारा १० सदस्यता शुल्क-व्यवस्था

संघ की सदस्यता शुल्क सीधे केन्द्रीय कार्यालय के प्रतिनिधि अथवा केन्द्रीय कार्यालय के पास भेजा जाएगा। प्रादेशिक परिषदों की व्यय की रूपरेखा पर विचार करने के पश्चात् प्रादेशिक परिषद की आय योजना को ध्यान में रखकर केन्द्रीय कार्य समिति

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मुख्य संयोजक की सिफारिश को ध्यान में रखकर आर्थिक योगदान स्वीकार करेगी। केन्द्रीय संयोजक के नियमित कार्य करने के लिए केन्द्र मुख्य संयोजक की सिफारिश पर आर्थिक सहायता प्रदान करेगा। इस सहायता का पूरा विवरण संयोंजक को प्रति तीन मास के अन्त में केन्द्रीय कार्यालय में भेजना आवश्यक होगा। इसके अभाव में आर्थिक योगदान की राशि स्वत: स्थगित हो जाएगी। कार्य संचालन की सुविधा के लिए, केन्द्रीय कार्य समिति की बैठक न होने की स्थिति में मुख्य संयोजक, प्रधान, कार्यकारी अध्यक्ष तथा महामन्त्री और अन्य मन्त्री प्रादेशिक परिषद की आर्थिक-योजना, आय-व्यय तथा अनुदनादि पर विचार करके –भारतीय साहित्यकार संघ के हितों के अनुकूल निर्णय कर सकेंगे। बाद में यह निर्णय केन्द्रीय कार्यसमिति को भेज दिया जाएगा।

धारा (११) अधिवेशन

(क) संघ की साधारण सभा का अधिवेशन सत्र में एक बार अवश्य होगा किन्तु—आवश्यकतानुसार संघ की केन्द्रीय कार्य समिति एक विशेष अधिवेशन भी बुला सकती है। अधिवेशन की व्यवस्था के लिए केन्द्रीय कार्य समिति एक प्रबन्ध समिति नियुक्त करेगी। जिसको अधिवेशन की सम्पूर्ण व्यवस्था का अधिकार होगा और वह समिति इसके लिए आय-व्यय की व्यवस्था भी करेगी। अधिवेशन के पश्चात् बची हुई राशि केन्द्र के कोश में जमा कर दी जाएगी।

धारा (१२) साधारण सभा के कर्तव्याधिकार

क - आवश्यकतानुसार संघ के प्रधान तथा महा मन्त्री का नि[illegible]न।

ख—संघ के महामन्त्री द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन को सुनकर [illegible] विचार करना।

ग—साहित्य तथा साहित्यकारों की स्थिति एवम् गतिवि[illegible] विचार विनिमय करके यथोचित प्रस्ताव पारित करना।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

घ—किसी प्रकार की गवेषणा करने के लिए एक से अधिक उपसमितियों की नियुक्ति करना।

ञ—संघ के संगठन तथा कार्यक्रम के प्रसार तथा प्रचार के लिए यथोचित नीतियों का निर्देशन करना।

धारा १३ सघ के प्रधान तथा मत्री का निर्वाचन

क—निर्वाचन का कार्य अधिवेशन के दो मास पूर्व १ अथवा अधिक से अधिक तीन सदस्यो के आयोग द्वारा सम्पन्न किया जाएगा। इस आयोग का गठन (एक मास पूर्व) मुख्य संरक्षक, मुख्य सयोजक, अध्यक्ष तथा महामन्त्री की संयुक्त बैठक में किया जाएगा। मुख्य संयोजक तथा मुख्य सरक्षक के अभाव में अध्यक्ष तथा महामन्त्री उक्त आयोग का गठन करेंगे यह आयोग संघ के नियमोपनियम की धाराओं के अन्तर्गत ही निर्वाचन कराएगा।

ख—निर्वाचन के लिये दिनाँक तथा समय की सूचना आयोग के निर्णयानुसार केन्द्रीय कार्यालय द्वारा यथा समय प्रसारित की जायेगी।

ग—प्रधान तथा महामन्त्री के लिए प्रस्तावित तथा अनुमोदित नाम निर्वाचन की तिथि से एक मास पूर्व आयोग के पास तथा केन्द्रीय कार्यसमिति के कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए। नाम वापिस लेने अथवा भेजने की अंनिम तिथि आयोग निश्चित करेगा।

घ—प्रस्तावित नाम संस्थापक सदस्यों में से ही होने चाहिये। नामों का समर्थन भी संस्थापक सदस्यों द्वारा किया जा सकेगा। विशेष स्थिति में नाम परिवर्तन, केन्द्रीय कार्यसमिति की स्वीकृति से किया जा सकेगा। केन्द्रीय निर्वाचनों के लिये केन्द्रीय संस्थापक सदस्यता अनिवार्य होगी। एक बार निर्वाचित प्रधान तथा महामन्त्री साधारण सभा के स्थायी सदस्य होंगे।

ङ—प्रधान तथा महामन्त्री के लिए नाम प्रस्तावित करने का अधिकार प्रतिनिधियों को ही होगा।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

च—प्रधान तथा महामन्त्री का निर्वाचन साधारण सभा के प्रतिनिधियों के बहुमत से होगा ।

छ —मतदान ऐसी विधि से सम्पन्न होगा कि मतदाताओं का मत गुप्त रह सके ।

ज—निर्वाचित प्रधान को अधिवेशन की अध्यक्षता करने वाले प्रधान प्रज्ञापित करेंगे और वह अन्तिम प्रज्ञापन समझा जाएगा ।

झ—यह निर्वाचन तथा केन्द्रीय कार्यसमिति का गठन प्रत्येक ३ वर्ष के लिए हुआ करेगा ।

धारा १४ प्रधान के कर्तव्याधिकार

क—संघ के अधिवेशन तथा केन्द्रीय कार्यसमिति के उपवेशन की अध्यक्षता करना ।

ख— केन्द्रीय कार्यसमिति का उपवेशन तथा गठन महामन्त्री और मुख्य संयोंजक की सम्मति से करना ।

ग – आवश्यकतानुसार संघ का प्रतिनिधित्व करना अथवा उपयुक्त प्रतिनिधि नियुक्त करना ।

घ—प्रादेशिक परिषदों के क्षेत्र में भ्रमण करना ।

ङ—संघ की ओर से संघ की नीतियों को स्पष्ट करना ।

च —अन्य वे सभी कार्य करने जो संघ की वृद्धि के लिए संघ के नियमोचित तथा समयोचित समझे जाएं ।

धारा १५ केन्द्रीय कार्य समिति के कर्तव्याधिकार

क—संघ की उच्चतम संचालिका सत्ता का संघ के हित के लिए वहन करना ।

ख—इस नियमोपनियम के अंतर्गत समस्त धाराओं को लागू करना तथा उन धारओं की अंतिम व्याख्या करना,

ग —संघ के विधान एवम् नियमोपनियम के नियोजन तथा संघ के सुचारु संचालन के लिए उपनियमन करना,

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

घ—प्रादेशिक परिषदों का पथ प्रदर्शन करना,

ङ—किसी भी सदस्य के प्रति अथवा विरुद्ध अनुशासनीय कार्यवाही करना,

च—संघ के कोष से होने वाले आय-व्यय का निरीक्षण करना,

छ—संघ के कोष को व्यय करने का निर्णय करना,

ज—किसी भी समिति के कार्य को परिस्थिति के अनुसार अपने हाथ में लेकर संचालन करना,

झ—अधिवेशन के अवसर पर प्रस्तुत होने वाले प्रस्तावों को ग्रहण करना तथा तैयार करना,

ञ—संघ के उद्देश्यों के लिए वे सभी काम करने जो इस विधान तथा नियमोपनियम का उल्लधन अथवा अतिक्रमण न करते हों।

धारा १६ अन्यान्य पदाधिकरियों का कर्तव्याधिकार

क—उपप्रधान

संघ के प्रधान की अनुपस्थिति में संघ की केन्द्रीय कार्यसमिति द्वारा नामांकित उपप्रधान, प्रधान के समस्त कर्तव्यों का वहन तथा अधिकारों का उपयोग करेंगे। इन्हें कार्यकारी अध्यक्ष कहा जायेगा।

ख—महामंत्री

केन्द्रीय कार्यसमिति के मंत्री को महामंत्री तथा अन्य समितियों के मंत्री को केवल मंत्री कहा जायेगा।

१—यह संघ की गतिविधि-प्रक्रिया का प्रमुख होगा।

१—साधारण सभा तथा केन्द्रीय कार्यसमिति में होने वाली कार्यवाहियों का विवरण रखेगा तथा समस्त समितियों एवम् अन्य सदस्यों के सम्बंध में सब प्रकार का विवरण रखेगा,

२—इसके अतिरिक्त संघ की ओर से सब प्रकार का पत्रव्यवहार करेगा,
सब प्रकार के कागज पत्रों को संभालेगा,
कार्यालय प्रमुख के पद का दायित्व निर्वाह करेगा।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

३ – संघ के उद्देश्यानुसार प्रधान की नीति निर्धारण प्रक्रिया में सुझाव देगा,

४—संघ के कार्य के लिए तथा कार्यालय व्यय के लिए २०० रु० तक व्यय कर सकेगा,

५—संघ विस्तार के लिए आवश्यतानुसार यात्रा करेगा,

६ – प्रधान की यात्रा का कार्य क्रम बनायेगा,

७—संघ की प्रगति के विषय में प्रतिवेदन बनायेगा और साधारण सभा में प्रस्तुत करेगा,

८ आय व्यय का विवरण रखेगा तथा कार्यसमिति के उपवेशन में और साधारण सभा के अधिवेशन में उसे प्रस्तुत करेगा,

९ –कार्यसमिति के गठन के समय प्रधान को परामर्श देगा,

१० – अन्य वे सब कार्य करेगा जो कार्यसमिति द्वारा निर्दिष्ट नीतियों को कार्यान्वित करने के लिए यथोचित तथा समयोचित हों।

ग – मंत्री

महामंत्री की अनुपस्थिति में उसके कर्तव्यों का वहन तथा अधिकारों का उपयोग केन्द्रीय कार्य समिति द्वारा नामंकित मंत्री करेगा।

घ – कोषाध्यक्ष

संघ की समस्त सम्पति तथा उसके आय-व्यय का विवरण रखेंगे

धारा १७ रिक्त स्थानों की पूर्ति

केन्द्रीय कार्यसमिति, समिति के किसी भी पदाधिकारी अथवा सदस्य का पद उसके पद त्याग उसकी मृत्यु तथा पदच्युति के कारण हुए रिक्त स्थान की पूर्ति घोषित करेगी और प्रधान को सअधिकार देगी कि शेषमय के लिए समिति के किसी सदस्य से वह रिक्त स्थान की पूर्ति करें किन्तु ऐसी अवस्था में भी मंत्री का परामर्श आवश्यक तथा उपयुक्त समझा जाएगा।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

धारा १८ नियमोपनियम में संशोधन

इस नियमोपनियम में संशोधन का अधिकार केवल साधारण सभा को ही होगा। इस सभा के अधिवेशन में प्रस्तावित संशोधन को स्वीकृत होने के लिए उपस्थित तथा मत देने वाले दो तिहाई प्रतिनिधियों का पूर्ण समर्थन प्राप्त होना चाहिए परन्तु केन्द्रीय कार्यसमिति को अधिकार होगा कि वह इस नियमोपनियम "विधान" की किसी भी धारा का स्पष्टी करण कर दें।

धारा १९ संघ का वित्तवर्ष

विक्रम संवत की वर्ष प्रतिपदा से दूसरी वर्ष प्रतिपदा तक वित्त वर्ष होगा। परन्तु संघ के वित्त वर्ष को राजकीय वित्त वर्ष के अनुसार व्यवस्थित करने के लिए आवश्यक कार्यं वाही की जा सकेगी।

संघ की समस्त राशि किसी बैंक अथवा डाकखाने में जमा की जाया करेगी।

धारा २० परिशिष्ट

कार्यसमिति के सदस्यों की १/३ (एक तिहाई) उपस्थिति गणपूर्ति के लिए आवश्यक होगी। (ख) सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट २१, पंजाब संशोधन एक्ट १९५७, जो दिल्ली के संघ भूभाग पर लागू है, के अन्तर्गत सभी निर्देशित नियम इस नियमोपनियम पर लागू होंगे। (ग) संघ द्वारा अथवा संघ पर चलाए गए अभियोग, मंत्री भारतीय साहित्यकार संघ के नाम से व्यवहृत होंगे। संघ की ओर से मंत्री ऐसे मामलों को देखेगा।

धारा २१ विघटन

साधारण सभा के दो तिहाई सदस्यों द्वारा आवश्यकता प्रदर्शित करने तथा उपस्थित दो तिहाई बहुमत द्वारा उसका समर्थन करने पर संघ का विघटन कर दिया जाएगा और इसकी सम्पत्ति उनकी सम्मति से किसी जन कल्याण कार्य में लगा दी जाएगी।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

Krishna Printing Works, Phone : 52796

भारतीय साहित्यकार संघ

(केन्द्रीय समिति)

दिनांक 31/7/73

संख्या 628

श्री शुभ/श्री आचार्य अमृत वाग्भव से मुख्य संयोजक निधि

से दान/शुल्क निमित्त प्राप्त हुए।

सधन्यवाद

राशि अंकों में Rs. एक सौ पचास 150/- रु.

Convener

मंत्री

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

श्रेय

भारतीय साहित्यकार संघ की मुख पत्रिका

दूरभाष ५६५७०७

संपादक :
डा० रामदत्त भारद्वाज
मोहनलाल श्रीवास्तव

५१/१, न्यू मार्केट,
करौलबाग, नई दिल्ली-५

31-7-73

मु.सं./486/भा.सा.सं०

श्री शिवराज जी,

पूज्य आचार्य द्वारा मुख्य-स्थायी (संयोजक) निधि के लिए मुख्य संयोजक को दी गई राशि एक सौ पचास रुपये की पावती संख्या ६२२, दिनांक ३१.७.७३ . २ के साथ संलग्न है। राशि मुख्य-संयोजक निधि के निमित्त सुरक्षित कर ली गयी।

भवदीय,

मोहनलाल श्रीवास्तव
मुख्य संयोजक
Chief Convener
भारतीय साहित्यकार संघ

विधान की धारा
संलग्न है।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

...निष्ठ है, आकट्य है और स्कता राज्यसत्ता पर निर्भर नहीं है। राजसत्ता से भी चिरकालीक और बलिष्ट कारणों पर अधीष्ठित हैं।

इस प्रकार आत्मावलोकन और आत्मोपलब्धि के परिवेश में विद्वतवर्ग ने अपने भारत को देखा और देखकर आत्मगौरवान्वित हो फिर से भारत माता की जयजयकार समूचे विश्व में अनन्तकाल तक गूंजती रहे, इस हेतु भावी पीढी को सच्चे इतिहास ज्ञान देने के संकल्प और मातृभाषा में भारतीय संतति को भारतीय इतिहास पढाने के निश्चय को संपादित करती हुई यह परिषद् दिनांक २८ नवम्बर को साय ६ बजे सम्पन्न घोषित की गई

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भारतीय साहित्यकार संघ द्वारा आयोजित

किंत इतिहास परिषद् :संक्षिप्त विवरण:

मोहन लाल श्रीवास्तव,
महामंत्री, भारतीय साहित्यकार संघ,

भारतीय साहित्यकार संघ द्वारा आयोजित इतिहास परिषद् का शुभारम्भ दिनांक २६ नवम्बर सन् १९६६ को सायंकाल नई दिल्ली स्थित विट्ठलभाई पटेल भवन में भारत के भूतपूर्व सर्वोच्च न्यायाधीश स्व० मेहरचन्द महाजन के उदघाटन भाषण से हुआ । इस महोत्सव में भारतीय इतिहास के अनेक विद्वानों और इतिहास विदों ने भाग लिया । उल्लेखनीय इतिहास वेत्ता सर्व श्री डा० बुद्धप्रकाश, डा० बी०आर० चटर्जी, पं० भागवद्दत्त, डा० हरीराम गुप्त, डा० दशरथ शर्मा, डा० आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, महामहोपाध्याय साहित्यवाचस्पति डा० दत्तोवामन पोद्दार, डा० के०डी० बाजपेयी और डा० रामकुमार दीक्षित आदि के अतिरिक्त दो दर्जन से अधिक इतिहास प्राध्यापकों और अनुसंधान कर्ताओं ने भाग लिया । परिषद् के अध्यक्ष कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में भारतीय विद्यासंस्थान के निदेशक, डीन एवं इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा० बुद्ध प्रकाश जी थे । भारतीय साहित्यकार संघ की केन्द्रीय कार्यसमिति के सदस्य होने के नाते कार्यसमिति ने आपको ही परिषद् का निदेशक नियुक्त किया था । परिषद् की बैठकें भारतीय इतिहास के तीन खण्डों पर आधारित थीं । क्रमश: प्राचीन भारत, मध्यकालीन भारत और आधुनिक भारत के रूप में भारतीय इतिहास के मंथन और तथ्यसंकलन की विवि दिशाओं और समस्याओं पर विचारार्थ विषय आमंत्रित किए गए थे ।

साहित्यकार संघ के अध्यक्ष श्री गुरुदत्त जी ने स्पष्टरूप से कहा था कि इस परिषद् में साहित्यकार संघ अपना किसी प्रकार का मत स्थापित नहीं करना चाहता है, हां वह इस परिषद् में हुए विचार विमर्श से अपना मत बनाने का प्रयत्न करेगा । अत: यह निर्विवाद है कि सा०सं० ने किसी आग्रह अथवा पूर्वाग्रह से परिषद् की स्थापना और आयोजन में रुचि लेना उचित नहीं समझा । परन्तु इतिहास परिषद् का पूर्वत: उद्देश्य निश्चित किया जा चुका है और जिसकी घोषणा साहित्यकार संघ की ओर से इस प्रकार की जा चुकी है कि :-

।क। भारतीय इतिहास और संस्कृति का वस्तुपरक भारतीय दृष्टि से अध्ययन ।

।ख। भारतीय इतिहास और संस्कृति की सर्जनात्मक शक्ति और अक्षुण्णता का दिग्दर्शन ।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

।ग। भारतीय राष्ट्रीय जीवन के प्राचीन, अर्वाचीन और भावी ।
क्रम में इतिहास के योगदान का अध्ययन ।

।घ। विश्व के इतिहास तथा संस्कृति और भारतीय इतिहास तथा संस्कृति की अन्त: प्रक्रिया का अध्ययन ।

।ङ। भारतीय जन मानस के विकास की परिचय प्राप्ति आदि ।

इतिहास परिषद् में आरम्भ में ही श्री गुरुदत्त जी ने संकेत दिया था कि इतिहास जैसा विषय राजनीतिक शक्ति की सहायता की अपेक्षा रखता तो है, परन्तु इस पर राजनीति का छा जाना, भयानक और कुपरिणामकारक होगा । अत: निष्पक्ष और प्रमाणसंगत एवं सत्याधारी बातों को बिना किसी झिझक के समान ज्ञान में उपस्थित विद्वानों को आगे बढ़ना चाहिये । उद्घाटन भाषण में स्व० महाजन जी ने भी जोर देकर कहा था कि हिन्दू शासन का वह काल जिसने सम्पूर्ण विश्व को प्रथम बार विधान की कल्पना दी, एक अत्यन्त समृद्ध शासनविधा सुझाई, प्रबुद्ध समाज के कार्य प्रकार का ज्ञान कराया तथा अपने में पूर्ण परिवार व्यवस्था का ज्ञान कराया, लेखकों के अज्ञान के कारण अत्यधिक विकृतरूप में लिया पड़ा है -------- हमारे आकर ग्रन्थों का पश्चिमी विद्वानों द्वारा किया गया अनुवाद भ्रमपूर्ण, अधूरे और यदि मैं कहूं तो कहीं कहीं शरारत भरे पड़े हैं ------- इसी बात का सप्रमाण उद्घाटन विद्वतवर पं० भगवद्दत्त जी ने अपने अभिमत में किया है । डा० गोपीनाथ शर्मा रीडर इतिहास विभाग राज० व श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार, डा० अवधबिहारी लाल अवस्थी, डा० ओमप्रकाश डा० हरिअनन्तफड़के, श्री कुंवरमाधवसिंह दीपक, श्री कृपालचन्द्र यादव, श्रीकालीचरण डा० सत्यकेतुविद्यालंकार, डा० रामदत्त भारद्वाज, डा० रामप्रकाशगुप्त, डा० लोकेश प्रो० बलराममधोक, आदि ने अपने विचारों से अवगत कराया । इतिहास परिषद् का विवरण प्रकाशित हो चुका है । इसके प्रकाशन में दिल्ली की संस्था भारतीय संस्कृति परिषद् ने आशातीत योगदान किया है ।

परिषद् के स्वागताध्यक्ष थे दिल्ली के सुप्रसिद्ध एडवोकेट श्री गजानन्द जी, परिषद् के मन्त्री श्री रामपालशास्त्री थे और संयोजन का भार मेरे ऊपर था ।

इतिहास परिषद् में डा० कृष्णदत्त वाजपेयी सागर विश्वविद्यालय और डा० रामकुमार दीक्षित लखनऊ विश्वविद्यालय तथा डा० दशरथ शर्मा और बुद्ध प्रकाश जी ने इस बात पर बराबर जोर दिया कि हम अपने इतिहास का वास्तविक अध्ययन करें, मूल साधनों का संकलन और अध्ययन नितान्त आवश्यक है । विशेष समस्याओं पर अधिकाधिक व्यक्तियों की गोष्ठियां आयोजित की जाएं और उपलब्ध निष्कर्षों को जनता तक पहुंचाया जाए । राष्ट्र की सीमाओं के विषय में और भारतीय संस्कृति के विषय में कुछ दुराग्रह चल रहे हैं जैसे कि

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

दक्षिणी पूर्वी एशिया में पाश्चात्य विद्वान भारतीय संस्कृति के प्रभाव को निरन्तर कम करने का घृणास्पद प्रयास कर रहे हैं, और कुछ लोग समूचे इतिहास को आर्थिक केन्द्र पर केन्द्रित करके पूर्वनियोजित परिणाम की ओर समूची सभ्यता को खींचने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। ईसाई आन्दोलन भारतीय इतिहास को विकृत करने की पूरी कोशिश कर रहा है। विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों ने भी अपनी आकांक्षानुकूल भारतीय इतिहास के स्वरूप को देखने की अदम्य इच्छा का अधिकार अपने हाथ से जाने नहीं दिया है। भारत की शिक्षा-दीक्षा परकीय प्रणाली की दासी है। अतः भारत के इतिहास का पुनरावलोकन और मंथन बहुत आवश्यक है। श्री पी०एन० ओक ने अपने वास्तुकला प्रधान ऐतिहासिकता के आधार पर लेख प्रस्तुत किया। कुतुब मीनार और मीना बाजार जैसे उत्तेजनात्मक विषय पर अत्यन्त शालीनता से सांख्या और फारसी के विद्वान पं० उदयवीर शास्त्री ने अपना विचार प्रस्तुत किया।

समूचा इतिहास-विचार तीन भागों में विभाजित हो गया था। प्रथमतः भारत के वास्तविक इतिहास की आज देश को बड़ी आवश्यता है। दूसरे भारत का इतिहास पूर्व शासकों ने और विशेषकर विदेशी शासकों ने अपनी राजनीतिक आकांक्षा को ध्यान में रखते हुए विकृत अवश्य किया है, तीसरे अनुसंधान प्रणाली और इतिहास सामग्री की वैज्ञानिकी करण एवं व्याख्या पर फिर से विचार करना आवश्यक है। प्रायोगिक प्रमाण और उपलब्ध साक्ष्य के सामने परम्पराओं और आस्थाओं का भी मूल्यांकन होना आवश्यक है क्योंकि जन मानस के इतिहास को लिखने में इन सभी बातों की आवश्यकता होती है और सच्चा इतिहास वही है जिसमें जनता के विविध जीवन पर्वों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

इसके अतिरिक्त भारत के प्राचीन इतिहास की तिथियों और काल गणना की उपेक्षा नहीं की जा सकती। हम जिस उद्देश्य से भारत का इतिहास मंथन कर रहे हैं उससे अभिन्न भारत की उपस्थित विश्व के प्रांगण में आदि काल से ही रही है। आत्मोपलब्धि अनुसंधान की मूल प्रवृत्ति है। विश्व के समक्ष अपनी मौलिक जीवन तत्व लेकर यदि आज खड़े होने की आवश्यकता है तो यह अनिवार्य हो जाता है कि भारत का प्रामाणिक इतिहास हमारी आने वाली पीढ़ी को देखने को मिले। अध्यक्ष पद से बोलते हुए परिषद् के अध्यक्ष डा० बुद्धप्रकाश जी ने कहा कि भारत का इतिहास उस समय से माना जाएगा जब से भारत है। यह प्रश्न कुछ लोगों को बहुत ही आधार रहित है, कि भारत का इतिहास कब से माना जाएगा। भारतीय इतिहास का सबसे सशक्त पक्ष इसकी सांस्कृतिक परम्परा की आश्चर्यजनक सजीवता और गतिशीलता है। अनन्तकाल से भारतीय संस्कृति अक्षुण्ण है और अपने मूल्यों आदर्शों और विचारों के संविधान को अपनाए हुए है ---यह मुख्यतः इस तथ्य के साक्षात्कार का फल ही है कि जीवन [illegible] समन्वयशीलता है।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भारतीय साहित्यकार संघ

उद्देश्य और परिचय

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

केन्द्रीय संस्थापक सदस्य

१ सर्वश्री—गुरुदत्त—डॉ० रामदत्त भारद्वाज
डॉ० जगदीश भारद्वाज—मोहनलाल श्रीवास्तव
डॉ० लोकेशचन्द्र—लक्ष्मीकान्त मुक्त
वनराज ओझा—मुरारी राजीव

२ सर्वश्री—डॉ० हरिशंकर शर्मा—डॉ० बुद्धप्रकाश
डॉ० रामप्रकाश अग्रवाल—डॉ० दशरथ शर्मा
रघुवीरशरण मित्र—वासुदेव शर्मा
डॉ० कुँवरचन्द्र प्रकाशसिंह—भुवनेश चतुर्वेदी
पं० उदयवीर शास्त्री—अश्विनीकुमार वर्मा
दुर्गादास डोगरा—राजपाल शास्त्री
गजानन्द ऐडवोकेट—पथिक कर्नाटकी

क्षेत्रीय संयोजक एवं संस्थापक सदस्य

सर्वश्री—आचार्य रामनाथ सुमन—कृष्णमित्र
राजकुमार सेनी—सुन्दरदास
डॉ० रमानाथ त्रिपाठी—अरुण प्रकाश अवस्थी
हरिवंश प्रसाद शुक्ल—दीनानाथ मिश्र
सतीशकुमार अरोरा—रामस्वरूप आर्य
जयवंशी झा—देवेन्द्र शुक्ल
दयानन्द डबराल—चुन्नीलाल भारद्वाज
त्रिलोकचन्द गुप्त—

सम्मानित सदस्य

डॉ० हरवंशलाल शर्मा—अलीगढ़ विश्वविद्यालय
डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी—पंजाब विश्वविद्यालय

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

चिति एवम् चेतना

भारतीय साहित्य विश्व का अद्वितीय साहित्य है। ऋग्वेद, उपनिषद् रामायण, महाभारत, भागवत, शाकुन्तल एवं रामचरितमानस का गुण-परिमाण अन्यत्र दुर्लभ है। मनु, तिरुवल्लुवर, भर्तृहरि आदि का ललित नीति-काव्य अपना उपमान स्वयं ही है। किन्तु पाश्चात्य-परतन्त्रता ने हमें स्वकीय गौरव से विरहित कर हीनता-ग्रन्थि का क्रोड़ बना दिया है। हम पश्चिम के अनुकरण को ही प्रगति एवं प्रयोग मान बैठे हैं। जिस प्रकार हमारा सर्वदेशीय जीवन पश्चिम की अनुकृति पर आधारित होता जा रहा है, वैसे ही साहित्य भी। हम सारे विश्व का साहित्य पढ़ें; उसमें जो आदरणीय है, उसका आदर करें, क्योंकि साहित्य को सीमाओं में आबद्ध नहीं किया जा सकता। पश्चिम में बहुत कुछ ऐसा है, जिससे हम, अपने-आपको बदरंग किए बिना भी, लाभ उठा सकते हैं। किन्तु हमें यह न भूलना चाहिए कि साहित्य संस्कृति की रसना है। वह साहित्य निष्प्राण होगा, जिसका मूल स्वकीय संस्कृति में न हो। परकीयता में मूलबद्ध अनुभूति किसी वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, तुलसीदास की कल्पना भी नहीं कर सकती। अतएव, हमारे साहित्य का, अन्तर्बाह्य दृष्टियों से भारत-साहित्य होना ही, उसके लिए तथा राष्ट्र के लिए, श्रेयस्कर होगा, इसमें सन्देह नहीं।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की महिमा का कारण उनका ठोस भारतीय आधार है। जब स्वर्गीया सरोजिनी नायडू ने अपनी कविता में गिरजाघर के घंटे बजवाए थे, तब उनके पाश्चात्य प्रशंसकों ने उन्हें, भारतीय जीवन को अंकित करने का परामर्श दिया था। महान् साहित्य अपनी संस्कृति पर ही आधृत हो सकता है, महान् साहित्य अपनी भाषा में ही रचा जा सकता है। रवीन्द्रनाथ यदि बंगला में न लिखते, तो नोबेल पुरस्कार के बावजूद भुला दिए गए होते। तोरुदत्त, सरोजिनी नायडू, राजाराव, हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, आर० के० नारायण, कमला मार्कण्डेय आदि यदि अपनी मातृभाषा में लिखते तो अपना और देश का भी अधिक कल्याण करते।

सर्वत्र उदात्तीकरण की प्रवृत्ति अगम्भीर एवं हास्यास्पद है; सर्वत्र हीन-भाव की प्रवृत्ति व्यर्थ एवं अपमानजनक है। भारतीय साहित्यकार विश्व को

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

देख सकता है, उसे वह समझ सकता है। परन्तु भारत को अर्थात् स्वयं अपने को अधिक व्यक्त कर सकता है। अतएव उसे अपने परिवेश का आश्रय स्वीकार करना चाहिए। भारत आधुनिक जीवनवादी नहीं है, क्योंकि वह आधुनिक विचारों में किसी प्रकार की कल्याणकारी विशेषता नहीं देखता। कुछ लोग आधुनिकतावादी साहित्यिक गतिविधियों को भारतीय चिन्तन से श्रेष्ठ मानते हैं। फलत: अधिकांश नवोदित कलाकार आत्मघात की स्थिति में आकर साहित्य को पतन की ओर ले जा रहे हैं।

मानवता की गति सर्वथा नियमित है। अतएव, उसके आकलन में अभिनिवेश न होना चाहिए, पूर्वग्रह न होना चाहिए। मानवता का मूलतत्त्व ही साहित्य की अनुपम निधि है, परन्तु जब मानवता को राजनैतिकवादों के धरातल पर अनुकूल रूप धारण करने के लिए बाध्य किया जाता है तो साहित्य ओज विहीन हो जाता है। इसीसे साहित्य का सृजन शाश्वत मान्यता से रहित होकर वर्ग-विशेष की आकांक्षा का साधन बन जाता है।

सिद्धि के लिए सत्य संकल्प की उतनी ही आवश्यकता होती है जितनी कि जीवन के लिए प्राण की। यह तभी सम्भव है जब सत्-संस्कार बलवान हों। संस्कार की धारा साहित्य और उसमें प्रतिफलित जीवन में अभिव्यक्त होती रहती है क्योंकि शाश्वत धर्म और साहित्य अन्योन्याश्रित और परस्पर-पूरक हैं। साहित्य के विभिन्न रूप अवश्य होते हैं परन्तु उसके सभी रूपों में आत्मोपलब्धि की आकांक्षा बलवती होती है। भारत ने इस मर्म को आज से लाखों वर्ष पूर्व ही जान लिया था। अतएव भारत में वही श्रेष्ठ साहित्य माना गया है जो लौकिक से पारलौकिक जीवन तक की अभिवृद्धि के लिए पोषक तत्त्व के रूप में वर्णित है। केवल शब्दात्मक कलाबाजी और रुचि विशेष को तोष तथा विश्रान्ति देने के लिए साहित्य के प्रणयन को यहाँ महत्व नहीं दिया गया है। भारत के मध्यकालीन विस्मृतिपूर्ण युग में भी साहित्य और धर्म साथ साथ चले हैं। यह बात इससे स्पष्ट हो जाती है कि जहाँ हमारे धर्म को विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया, वहाँ साहित्य भी विकृत हुआ है और जहाँ साहित्य में विभ्रम और विकृति आई है वहीं धर्म भी अस्पष्ट रहा है।

भारतीय समाज को पूर्णतया अपने अधीन तथा अपने संस्कारों का समर्थक बनाने के लिए विदेशी शक्तियों ने यहाँ के साहित्य को विकृत और नष्ट करने का पूरा-पूरा प्रयास किया है। इतना ही नहीं, उन्होंने भारत की प्रत्येक विद्या को या तो लुप्त कर दिया या उसका रूप बिगाड़कर अपने निजी आविष्कार के रूप में भारतीयों के सामने इस विधा से प्रस्तुत किया कि

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

उनके बौद्धिक महत्व को वे सर्वथा मान लें जिससे कि उन विदेशियों की जातीय गरिमा स्थापित हो जाए। यही कारण है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के इतने दिनों पश्चात् भी हम मानसिक दासता से मुक्त नहीं हो पाये हैं। हमें अपनेपन का बोध नहीं हो रहा है।

इसका परिणाम एक सहस्र वर्ष की पराधीनता है और इसीसे देश के जन-जीवन से उच्चाकांक्षा दूर हो गई और उसमें आत्मविस्मृति ने घर कर लिया है। अतः आज का साहित्य मन्द और शिथिल है। उसमें विचार की मौलिकता कम प्रतिक्रियाएं अधिक हैं। आत्माभिमानी, समृद्ध, सशक्त और तेजोमय राष्ट्र के साहित्य में जो विशेषताएँ होती हैं वे आज नहीं मिलतीं। भारतीय जीवन के प्रेरणास्रोतों के प्रति उदासीनता, उपेक्षा और हीन भावों का प्रचुर प्रचार हुआ है। भारत का स्वातन्त्र्य-आन्दोलन समाज की जीवन-वृत्ति को उद्वेलित तो कर सका, परन्तु उसमें कर्तृत्व को स्थान नहीं दिला सका। दूसरे अव्यावहारिक दलीय अहिंसावाद ने जीवन की क्षमता को बहु-मुखी होने से रोका है। इन दोनों कारणों से साहित्यकार के जीवन पर स्थायी सत्य के वातावरण का प्रभाव कम हुआ। उसमें अपने उन्नत ज्ञान, नैतिकताओं और जीवन-दर्शन के प्रति अनास्था उत्पन्न हो गई और पश्चिम के ज्ञान तथा नैतिक-मान और जीवन-दर्शन के प्रति वह आस्थावान बन गया। इसी आस्था ने हमारे साहित्य और साहित्यकारों को भी प्रभावित किया। यवन राज्य के कठोर शासन में हमारी सांस्कृतिक चेतना क्षीण नहीं हुई थी। उस समय हम यवन-संस्कृति और जीवन-दर्शन से प्रभावित नहीं हुए थे। राजनीतिक दृष्टि से पराजित होने पर भी हमारा सांस्कृतिक पराभव उस समय नहीं हुआ था जबकि अंग्रेजों के शासनकाल में उनकी कूटनीति से हमारी सांस्कृतिक निष्ठा उन्मूलित सी हो गई है। हमारे विद्यालयों, महा-विद्यालयों और विश्वविद्यालयों ने अंग्रेजी भाषा और साहित्य को इतनी प्रमुखता दी कि भारतीय साहित्य उपेक्षित हो गया और हमारा तत्त्वज्ञान अनूदित तत्त्वज्ञान हो गया। अंग्रेजी से आजीविका की सुविधा, प्रतिष्ठित पदों की प्राप्ति और जीवन-सुखों का प्रलोभन सम्बद्ध होने के कारण अंग्रेजी शिक्षा ही हमारा चरम लक्ष्य बन गई। परिणामस्वरूप हमारे भारतीय संस्कार भी मिटते गए और अंग्रेजी साहित्य को ही हम विश्व का उच्चतम साहित्य समझ बैठे।

स्वतन्त्रता के पश्चात् स्वतन्त्र चिंतन के नवोदय की आशा फलवती नहीं हो सकी क्योंकि अंग्रेजी शिक्षा पद्धति से पाश्चात्य ज्ञान की वरेण्यता के जो बीज अंग्रेजों ने बोये थे, वे अंकुरित और विकसित होकर "हठमूल-वृक्ष"

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

बन गये हैं। उनके फलस्वरूप जो साहित्य देश में लिखा जा रहा हैं, उसके अधिकांश ने यहाँ के साहित्य-गौरव को गिरा दिया है।

भारत के स्वस्थ एवम् वीत विक्षेप मानसिक धरातल की उपेक्षा करके भौतिकता से परिवेष्ठित जीवन प्रणाली को अपनी अभिव्यक्ति का केन्द्र मानकर लेखकों का एक विशाल दल इस देश में परकीय मान्यता की सामाजिक एवम् सांस्कृतिक रचना को स्थायी बनाने के लिए अत्यधिक क्रियाशील है। उसके लिए भारत प्राचीन है अतः मृत है। पश्चिम नवीन है, अतः जीवित है। और जीवन का ही अनुकरण आवश्यक बनाने के लिए अनेक विलोभनीय नामों से देश तथा राष्ट्र को उत्पथगामी बनाना ही इन लोगों का कार्य है।

ये लोग प्रान्त, भाषा, जाति, सम्प्रदाय और राजनैतिक दलों के पक्षाभिपक्ष को उभारकर भारतीय जीवन में व्याप्त एकात्मवाद को गहरा आघात पहुँचा रहे हैं। यह सब अज्ञान तथा स्वार्थपरता के कारण ही हो रहा है। साहित्यकार को इससे ऊपर उठकर आत्म-चेतना की शरण लेनी होगी। इसीलिए भारतीय साहित्यकार संघ व्यापक धरातल पर महत्त्वपूर्ण संकल्प के साथ अपने उद्देश्यों को लेकर आगे आया है।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ

उद्देश्य

ओं स्तृणीत बर्हिरानुषग्घृतपृष्ठं मनीषिण: । यत्रामृतस्य चक्षणम् ।।

१. भारत की अध्यात्म साधनाओं, आस्थाओं तथा आदर्शों पर आधृत साहित्य का भारतीय भाषाओं में निर्माण, प्रकाशन, प्रचार तथा प्रसार ।

२. सत्साहित्य के प्रसंग में भारतीय दृष्टि की स्थापना हेतु संगठन तथा संघर्ष और भारतीय आस्थाओं तथा मर्यादाओं पर आधारित साहित्य-समीक्षा की स्वस्थ परिपाटी की स्थापना ।

३. भारत की प्राचीन विद्याओं की खोज और प्रचार ।

४. पठन-पाठन तथा मनन-चिन्तन हेतु स्वाध्याय मंडलों की स्थापना ।

५. प्राचीन, मध्ययुगीन तथा अर्वाचीन साहित्य के संरक्षण हेतु संग्रहालयों तथा पुस्तकालयों की स्थापना ।

६. साहित्यिक अभिवृद्धि तथा वातावरण के लिए सम्मेलन, संगोष्ठी, गोष्ठी, संवाद, अभिनय आदि ऐसे सभी कार्य करने जिनसे उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति होती हो ।

७. भारतवर्ष की विविध भाषाओं में उपलब्ध एवम् सृष्ट साहित्य में व्यक्त होने वाली साहित्य-परम्परा के ऐक्य का अनुसंधान एवम् प्रचार ।

८. सत्साहित्य की गवेषणा एवम् परस्पर तुलना ।

९. भारतीय लिपियों का ऐतिहासिक एवम् वैज्ञानिक अन्वेषण ।

कार्यक्रम

अतः हमने अपने कार्य को त्रिधारा के रूप में विस्तार देने का निश्चय किया है : १. अनुसंधानात्मक, २. परिष्कारात्मक और ३. प्रचारात्मक ।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

१. अनुसंधान के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान और परिज्ञान की प्रत्येक शाखा का विस्तृत विवरण, व्याख्या, अन्वेषण और विकासमूलक खोजों का कार्य होगा।

२. परिष्कारात्मक क्षेत्र में मसिजीवी बन्धुओं से सम्पर्क, उनका सम्मेलन, उनकी समस्याओं पर युक्तियुक्त विचार, उनके विकास के लिए योजनाएँ और समयानुकूल तथा उद्देश्यानुकूल अन्य कार्यक्रमादि।

३. प्रचारात्मक की सीमा में साहित्य का प्रसार विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में साहित्य किस मार्ग से प्रवेश करता है तथा उसका रूप किन-किन गतियों के समन्वय से प्रभावपूर्ण तथा प्रभावहीन होता रहता है एवम् उसके रूप-परिवर्तन में कौन से तत्त्व सक्रिय रहते हैं, आदि बातों का अध्ययन अपेक्षित है। इसके अतिरिक्त शाश्वत धर्म को व्यापक तथा सार्वजनीन बनाने के लिए परिस्थिति और काल के अनुसार कार्यक्रमादि का आयोजन।

परिषदों की रचना

उपर्युक्त कार्यक्रम को मुखर बनाने के लिए निम्नलिखित परिषदों की स्थापना की गई है।

- साहित्य-परिषद् — साहित्य-विभाग
- इतिहास-परिषद् — इतिहास-विभाग
- दर्शन-परिषद् — दर्शन-विभाग
- चाणक्य-परिषद् — राजनीति-विभाग

ये परिषदें समय-समय पर संगोष्ठी एवम् पत्र-पठन द्वारा अपने विचार से जागरूक भारतीयों को सत्प्रेरित करते हुए ज्ञान-गरिमा की अभिवृद्धि के लिए निरन्तर सक्रिय हैं।

सन् १९६७ के नवम्बर २६ से २८ तक राजधानी में इतिहास-परिषद का विशेष आयोजन हुआ था। इसका विवरण प्रकाशित हो चुका है।

इसमें भारतवर्ष के २२ विश्वविद्यालयों के इतिहास-विभागाध्यक्षों, अनुसंधानकर्ताओं, इतिहास-विदों और राजनीतिक नेताओं ने एकत्र होकर भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की विविध समस्याओं और परिस्थितियों पर विचार किया था।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

साहित्य-परिषद् के अन्तर्गत साहित्यिक परिचर्या, संगोष्ठी, पत्र पठ न और सम्मेलन आदि का आयोजन होता है।

चाणक्य-परिषद् सैनिक, राजनैतिक और सामाजिक चेतना के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर विचार विमर्श और संगोष्ठी का आयोजन करती है।

दर्शन-परिषद्—इसमें दार्शनिक परिचर्याएँ, विवाद, पत्र-पठन और संगोष्ठी का आयोजन होता है।

साहित्यकार संघ की स्थानीय शाखाएँ

दिल्ली, कुरुक्षेत्र, भिवानी, श्रीनगर (गढ़वाल), गाजियाबाद, मेरठ, सहारनपुर, मुरादनगर, विजनौर, कानपुर, एटा, इलाहाबाद, जबलपुर, कलकत्ता, जोधपुर आदि।

पत्रिका

—साहित्यकार संघ की एक मुख पत्रिका शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। केन्द्रीय कार्य समिति ने इसके लिए श्री वासुदेव शर्मा (मेरठ) को सम्पादक एवं प्रकाशक नियुक्त किया है। पत्रिका त्रैमासिक होगी और इसमें, साहित्य, इतिहास और दर्शन सम्बन्धित सामाग्री के अतिरिक्त विशेष-विचारपूर्ण लेख होंगे।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

परिचय

साहित्कार संघ की स्थापना भारत की राजधानी दिल्ली में सन् १९५९ में तुलसी-जयन्ती के दिन हुई थी। इसकी आवश्यकता और भूमिका प्रस्तुत करते हुए श्री मोहनलाल श्रीवास्तव ने कहा था कि 'हम भारतीय मान्यताओं तथा आस्थाओं के लेखकों को इसलिये संकलित करना चाहते हैं, जिससे कि सब मिलकर भारत के भव्य-चिरजीवन की उपलब्धि के लिए विचार कर सकें। संस्कृति एवम् आत्म-विस्तार का श्रेष्ठ साधन साहित्य ही है, इसलिए इसकी उपेक्षा हमारे हित में नहीं होगी।'

हिन्दी के सुविख्यात उपन्यासकार श्री गुरुदत्तजी सन् १९६१ से ही इसके प्रधान हैं। इसकी अनेक शाखायें कार्य कर रही हैं।

सन् १९६१ तथा १९६४ में इसका अधिवेशन क्रमशः दिल्ली और मेरठ में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। इसकी गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्वानों में सर्वश्री डा० कृष्णदत्त भारद्वाज, अक्षयकुमार जैन, माधवसिंह दीपक, जगदीश सम्राट, आचार्य रघुवीर (स्व०), डा० सत्यदेव चौधरी, डा० देवी-शंकर अवस्थी, डा० रामदत्त भारद्वाज, मामा वरेरकर (स्व०), डा० राम मनोहर लोहिया (स्व०), डा० स्वामीशरण भटनागर, डा० डी० डी० मेहता, डा० लोकेश, डा० शारदा रानी, प्रकाशवीर शास्त्री (संसद सदस्य), डा० खुरशीद, डा० हरवंशलाल शर्मा, डा० हरिशंकर शर्मा, नरेन्द्र शर्मा, डा० महावीर, उदयवीर सिंह शास्त्री, मुरारी राजीव, डा० रामप्रकाश अग्रवाल, रघुवीरशरण मित्र, बाँकेबिहारी भटनागर, डा० अर्जुनप्रकाश अग्रवाल, डा० कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह, हरिवंश प्रसाद शुक्ल, पथिक कर्नाटकी, कृष्ण मित्र, लक्ष्मी कान्त मुक्त, गजानन्द एडवोकेट, जैनेन्द्रकुमार जैन, डा० हरिवंश राय बच्चन, राजपाल शास्त्री, नगेन्द्र, वासुदेव शर्मा इत्यादि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

त्रैवार्षिक अधिवेशन दिल्ली

दिल्ली के अधिवेशन (१४ जनवरी सन् १९६१) का उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के रीडर डा० विजयेन्द्र स्नातक ने किया था।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

इसमें राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा पंजाब के अनेक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

साहित्यकार संघ की अभिवृद्धि के लिए शुभ कामना भेजने वालों में सर्वश्री मान्य—

डॉ० जाकिर हुसैन (उपराष्ट्रपति, भारत), लालबहादुर शास्त्री (प्रधान मन्त्री, भारत,) गुलजारीलाल नन्दा (गृहमन्त्री भारत), यशवन्तराव चव्हाण (संरक्षण मन्त्री, भारत), महावीर त्यागी (पुनर्वास मन्त्री, भारत), भक्तदर्शन (उपशिक्षा मन्त्री, भारत), माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (सरसंघ) चालक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ), श्री श्रीप्रकाश (भूतपूर्व राज्यपाल), डा० हरिशंकर शर्मा (उपकुलपति वृन्दावन विश्वविद्यालय), कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर (विकास जि० सहारनपुर), आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी (सागर विश्वविद्यालय), डा० नगेन्द्र (दिल्ली विश्वविद्यालय), वृन्दावनलाल वर्मा (झांसी), डा० सम्पूर्णानन्द (राज्यपाल, राजस्थान) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

मेरठ अधिवेशन

२५, २६ दिसम्बर सन् १९६४ को मेरठ नगर के तिलक भवन में हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री गुरुदत्त जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। संघ के महामन्त्री श्री मोहनलाल श्रीवास्तव ने संघ के विस्तार और प्रसार पर स्मारिका प्रसारिता की। भाग लेने वाले विद्वान सर्व श्री डा० हरवंशलाल शर्मा, डा० बुद्धप्रकाश, डा० रामदत्त भारद्वाज, डा० शारदा, डा० रमाकान्त, डा० आर०वी० राव, श्री अरुण (स्वागताध्यक्ष अधिवेशन,) रघुवीरशरण मित्र डा० श्रीनिवास, डा० स्वामीशरण भटनागर, गजानन्द एडवोकेट, जगदीश सम्राट के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश के लगभ १०० लेखकों एवं पत्रकारों ने भाग लिया।

विचारणीय विषय थे—(१) भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता।
(२) भारतीय इतिहास के परिमार्जन की आवश्यकता।
(३) साहित्यकार का दायित्व।
(४) नवलेखन-विदेशी विचार।

उद्घाटन-भाषण—डा० हरेकृष्ण महताब, संसद-सदस्य (भूतपूर्व राज्यपाल तथा मुख्य मन्त्री उड़ीसा) ने दिया

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मुद्रक—रष्ट्र भारती प्रेस, कूचा चेलान, दरियागंज, दिल्ली

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

दिल्लीस्थ-श्रीलालबहादुरशास्त्री-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठस्यानुसन्धान-प्रकाशन-
विभागप्रवर्तितायाः षाण्मासिक-प्रकाशनरूपपत्रिकायाः षष्ठ-सप्तम-कुसुमरूपो विशेषाङ्कः

अन्वेषणा

(अतिरिक्तं मुद्रणम्)

श्रीलालबहादुरशास्त्री-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ये संस्कृत-सजातीय भारोपीय भाषाएँ और इनमें सर्वनामों का विकास

श्री भवानीशङ्कर त्रिवेदी

आज से लगभग २०० वर्ष पूर्व भारत के अंग्रेज मुख्यन्यायाधीश सर विलियम जोन्स की कृपा से जब संस्कृत का दिव्य आलोक यूरोप में पहुँचा तो वहाँ के भाषा-शास्त्रियों की आँखें खुलीं और उन्होंने तत्काल संस्कृत, ईरानी तथा यूरोपियन भाषाओं की सजातीयता स्वीकार कर ली। बॉप तथा उनके समकालीन प्रायः सभी यूरोपियन भाषा-वैज्ञानिकों ने ग्रीक, लेटिन तथा अवेस्ता जैसी प्रत्न भाषाओं की अपेक्षा संस्कृत की अत्यधिक प्राचीनता को परखते हुए इसी को अन्य सभी भाषाओं की जननी घोषित किया और इसी आधार पर इस परिवार को 'संस्कृत परिवार' के नाम से अभिहित करना भी आरम्भ कर दिया। किन्तु आगे चलकर नव्यवैयाकरणों ने तालव्य-नियम की उद्भावना की, जिसके आधार पर ग्रीक, लेटिन आदि में विद्यमान कवर्गीय (कण्ठ्य) ध्वनियों को मूल तथा उन्हीं के स्थान पर संस्कृत में प्रयुक्त चवर्ग और श जैसी तालव्य ध्वनियों को उनसे विकसित सिद्ध कर दिखाया। साथ ही यह भी कि 'अस्' धातु के लट् लकार के म० पु० के संस्कृत रूप स्थ को लेटिन के एस्ते तथा उ० पु० ब० वचन के संस्कृत रूप स्मः को ग्रीक एस्मेस् Eesmes से विकसित देखकर यह प्रतिपादित किया कि संस्कृत, ग्रीक और लेटिन वस्तुतः सोदराएँ हैं और ये तीनों किसी अन्य भाषा से विकसित हैं। इसी आधार पर इस परिवार का नाम भी संस्कृत परिवार से बदलकर 'आर्य' अथवा इण्डोजार्मनिक या इण्डोयूरोपियन परिवार रख दिया गया। किन्तु इससे संस्कृत के महत्त्व में कोई अन्तर नहीं आया। जैसा कि कहा है —

तालव्यनियमे प्रोक्ते नव्यभाषाप्रवक्तृभिः।
महत्त्वं सुरभारत्याश्चीयते नापचीयते ॥
प्रत्नैर्माता मता येयं मातृकल्पाग्रजा नवैः।
भाषावैज्ञानिकैस्सर्वं स्सममेव समादृता ॥

नस् ...
स्यो ... नन्त

Swami Amrit Vagbhat Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यह ठीक है कि तालव्य-नियम से भारोपीय भाषाओं की एक नवीन विशेषता उद्‌घाटित हुई और नव्यवैयाकरणों के प्रयत्नों से ग्रीक और लेटिन के कुछ इने-गिने ऐसे रूप भी सामने आए, जिनके समक्ष संस्कृत के रूप कुछ विकसित प्रतीत होते हैं, किन्तु इससे संस्कृत के महत्व में रत्ती भर भी फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि बॉप आदि प्रत्न जर्मन विद्वानों ने संस्कृत को यदि मातृभाषा माना था तो नव्य वैयाकरणों ने उसे भारोपीय भाषाओं की ऐसी अग्रजा Elder Sister स्वीकार किया जो माता तो नहीं, किन्तु मातृकल्पा अवश्य है। अंग्रेजी हो या जर्मन, रूसी हो या फ्रेंच, हिन्दी हो या फारसी, किसी भी नई या पुरानी भारोपीय भाषा का विकास और उसका भाषा शास्त्रीय स्वरूप संस्कृत के बिना समझा जा ही नहीं सकता, यह तथ्य आज भी उतना ही स्वीकार्य है, जितना कि आज से २०० वर्ष पूर्व था।

सर्वनामों का विकास

इसमें कोई सन्देह नहीं कि संस्कृत, ग्रीक, लेटिन, हिंदी, अंग्रेजी, रूसी आदि सभी भारोपीय भाषाएँ एक ही परिवार की हैं। फिर भी इस सम्बन्ध में विज्ञजनों के मन कभी-कभी दुविधा-ग्रस्त हो जाया करते हैं। जैसे कि हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् डा० रामविलास शर्मा ने इस आधार पर भाषा और समाज विषयक अपने एक बड़े ग्रन्थ में भारोपीय भाषाओं को एक ही परिवार की मानने से इन्कार कर दिया था कि सं० एकविंशतिः और अं० Twentyone जैसे संख्या-वाचक शब्दों में इकाई और दहाई की संख्याओं का क्रम एकसा नहीं है। यह तो खैर छोटी सी बात थी और आचार्य कार्ल ब्रुग्मान ने अपने ग्रन्थ में इकाई की संख्या के इस पौर्वापर्य सम्बन्धी शङ्का का समाधान भी भली-भाँति कर दिया था।

भारोपीय भाषाओं में प्रयुक्त सर्वनामों के नानाविध वर्णों, आकार-प्रकारों और अर्थभेदों को देखकर भी इन भाषाओं की सजातीयता में किसी को अविश्वास होने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं। उदाहरण के लिए उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम प्रथमा (कर्ता) बहुवचन के रूप को देखिए—हि० हम, अं० we बंगला आमि, पंजाबी असि, अस् ग्री० hamme, गॉ० weis, फा० मा, ज० wir, और रूसी मी, तथा ले० Nos में कहीं कोई सम्बन्ध या साम्य प्रतीत ही नहीं होता। इनमें से संस्कृत, गॉथिक, जर्मन और अंग्रेजी में रूपों की प्रकृति एक ही वि अवश्य दिखाई देती है, किन्तु इसमें भी सन्देह तब उत्पन्न होता है जबकि रूसी में इसी वि का अर्थ हम न हो कर तुम दिखाई देता है। कितना अन्तर है? अंग्रेजी में जो वी we 'हम' के लिए प्रयुक्त है रूसी में उसीका अर्थ [illegible]नस् [illegible] गया। इसी प्रकार अंग्रेजी अस् us का अर्थ है हमें या हमको और पंजाबी में [illegible] ननंत का अर्थ हो गया हम। अंग्रेजी के इस us के लिए हिन्दी में हमें है तो पंजाबी

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

में सानु, जर्मन में uns अन्ज और रूसी में नास् है तो फारसी में मा। सभी भाषाओं में अपने-अपने अलग-अलग रूप हैं। कोई भी तो एक दूसरे से मेल खाता शब्द दिखाई नहीं देता।

और यहीं संस्कृत का महत्त्व तथा वैशिष्ट्य ही क्यों महनीय मातृरूप भी प्रतिष्ठित हो जाता है। संस्कृत में एक ऐसी अद्भुत क्षमता है जिसके सहारे नानाविध भारोपीय भाषाओं का भेदभाव स्वतः समाप्त हो कर आपाततः प्रतीत होने वाला पार्थक्य दृढ़मूल ऐक्य में परिणत हो जाता है।

हमारे यहाँ प्रभु में निरवयव, कूटस्थ तथा सावयव श्रीविग्रह-सम्पन्न द्विभुज, चतुर्भुज, एकमुख, चतुर्मुख, पञ्चमुख आदि, दोनों रूपों की उपासना विहित है। ॐ कार अथवा कुशीय, कूटस्थ ब्रह्मा, स्वस्तिक और सुपारी के रूप में कूटस्थ गणेश, शिवलिंग के रूप में भगवान् शंकर और शालग्राम के रूप में भगवान् विष्णु के कूटस्थ अथवा निरवयव रूपों की उपासना होती है। हमारी प्रक्रिया एकांगी नहीं, सर्वांगीण है। और सुरभारती में भी यह वैशिष्ट्य अक्षुण्ण है, क्योंकि संस्कृत के सिवा अन्य सभी भाषाएँ एकांगी अथच अपूर्ण हैं। किसी ने शब्द-ब्रह्म के श्रीविग्रह-सम्पन्न सावयव रूप के भी पाणि,पाद, मुख, वक्ष आदि किसी एक ही अवयव को पूर्ण मानकर अपना लिया है। ठीक वैसे ही जैसे अपने यहाँ विभिन्न शक्तिपीठों में भगवती आद्या शक्ति सती के चरण आदि किसी एक ही अंग की विद्यमानता में भी पूर्ण स्वरूप की पूजा-प्रतिष्ठा होती है। इतना ही क्यों, कहीं-२ तो ऐसा भी हुआ है कि शब्द के कूटस्थ रूप के साथ भी मुख, चरण आदि अंगों का पृथक् से समायोजन कर दिया गया है जैसे शिवलिंग में एकमुख, चतुर्मुख और अष्टमुख दिखा दिए जाते हैं।

हाँ तो संस्कृत में उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष वाचक सर्वनामों के सावयव और कूटस्थ ये दो-२ रूप हैं। १. अह, २. वि, ३. वि, ४. अस्म और आव प्रकृति से निष्पन्न होनेवाले अस्मद् शब्द के रूप सावयव अथवा सविभक्तिक होते हैं जबकि वचन में मा और मे तथा बहुवचन में नस्—ये कूटस्थ रूप हैं। इनके सिवा वेद में एक और कूटस्थ सार्वविभक्तिक रूप अस्मे भी सुप्रयुक्त है। इस अस्मे के बारे में निरुक्त में कहा गया है कि—

अस्म इति सार्वविभक्तिकम् अतोऽनेकार्थकम्। 'अस्मे ते बन्धुः' वयमित्यर्थः। यहाँ अस्मे हि० हम और बं० आमि तथा प० असि, लहन्दा अम् की प्रकृति है तो—'अस्मे यातं नासत्या सजोषा' में अस्मे कर्म ब० व० अं० अस् us के रूप में है।

यही स्थिति युष्मद् शब्द की है। यहाँ भी त्व, यु और युष्म प्रकृति से ति

...vami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

वाले रूप सविभक्तिक हैं, जबकि एकवचन में ते और बहुवचन में व: कूटस्थ रूप हैं। हिन्दी, अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, फारसी, फ्रेंच अथवा ग्रीक और लेटिन आदि के उत्तम तथा मध्यम पुरुष वाचक सबके सब रूप संस्कृत के कूटस्थ (वैकल्पिक) या सावयव (मुख्य) में से किसी एक रूप के ही कोई पूर्ण या घिसे हुए रूप मात्र हैं। जैसे कि—

अस्मद् शब्द के प्रथमा का बहुवचन गॉथिक में वेइस Veis बनता है। यह वी we के साथ बहुवचन की विभक्ति अस् के योग से निष्पन्न पूर्ण रूप है। अं० we में इसका विभक्त्यंश अस् is घिस गया। इधर संस्कृत वयम् अवे० वएम् Vaem में अस् के स्थान पर अम् विभक्ति प्रत्यय जुड़ गया। गॉथिक और संस्कृत दोनों ही में विभक्ति प्रत्ययांश स् रेफ में परिवर्तित हो गया। पं० असि, लहंदा अस् अस्मे का आद्यंश मात्र है, जबकि सं० आमि में मध्यवर्ती स् घिस गया। हिन्दी हम भी इसी से विकसित है। यहाँ आद्य अ घिस गया और, ह में परिवर्तित स के साथ अ आ बैठा। फारसी मा और रूसी मी me (हम) में अस्मे का अन्त्य म मात्र शेष रह गया। ग्रीक हम्मे hemme तो स्पष्टत: अस्मे है ही। लिथ्वानियन मेस mes और प्रत्न चर्च स्लाव मु my भी अस्मे के ही घिसे हुए रूप हैं।

लेटिन में प्रथमा बहुवचन का रूप लुप्त हो गया और वहाँ द्वितीया बहुवचन का कूटस्थ रूप नोस् Nos ही प्रथमा में भी चल निकला।

यही स्थिति युष्मद् शब्द के कर्ता बहुवचन की है। गॉथिक युस yus सविभक्तिक रूप है, ठीक वैसे ही जैसे सं० यूयम् और अवे० यूशेम् yushem अं० यू you में विभक्ति घिस गई। ग्रीक ह्यमेस hummes और लिथ् युस भी यही हैं। फा० शुमा (तुम) अपरिचित-सा लगता है। किन्तु यहाँ भी युष्मद् का आद्य यु घिस गया और ष्म में उ की स्वरभक्ति वैसे ही हो गई जैसे अस्मे से विकसित हिन्दी हम में आ बैठा।

हिन्दी में बहुवचन युष्म रूप सुरक्षित नहीं रह पाया। यहाँ एक वचन का त्व ही बहुवचन तुम का साधक बन गया।

लेटिन और रूसी में तुम के लिए प्रयुक्त क्रमश: वो Vo और वी Wi रूप इन सबसे भिन्न हैं। किन्तु संस्कृत में इनकी भी मूल प्रकृति विद्यमान हैं और वह है व:।

स्पष्ट है कि रूसी और लेटिन में संस्कृत के अनुलग्न वैकल्पिक कूटस्थ रूप नस् और वस् का बोलबाला है। लेटिन में तो नोबिस् Nobis (नोभिस्) जैसे रूप बनते हैं।

Swami Amritvagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यहाँ प्रमुख भारोपीय भाषाओं में सर्वनामों के विकास का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया जाता है।

उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामों की सातों विभक्तियों और तीनों वचनों के रूप केवल संस्कृत में पूर्णतया और किसी अंश तक अवेस्ता में भी सुरक्षित हैं। संस्कृत के सिवा शेष सभी भारतीय भाषाओं में इनके इक्के-दुक्के रूप ही बच पाए हैं। जैसे कि—

ग्रीक

ग्रीक में अस्मद् शब्द के प्रथमा एकवचन का रूप ईगो Eago सुरक्षित है। और द्वितीया में एमे Eeme या मे (मा), चतुर्थी में इमाई Eemoi या मोई Moi (सं० मयि, सप्तमी एकवचन) और सम्बन्ध में ईमू Eemou या मू (मे) रूप प्रयुक्त हैं। इनके बहुवचन प्रथमा में हेमेइस hemeis, द्वितीया में हिमास hemas, चतुर्थी में हेमिन hemin और षष्ठी में हेमोन hemon बनते हैं। बहुवचन के ये सब रूप सं० अस्मे से सम्बद्ध हैं। षष्ठी बहुवचन में यहाँ ओन् On संस्कृत आम् प्रत्यय का प्रतिरूप है।

मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम के एकवचन के रूप प्र० सु Su (तु) द्वि० से Se (ते), च० सोई Soi (त्वयि, सप्तमी एकवचन) और षष्ठी सू Sou (तव, ते) बनते हैं और इन्हीं के बहुवचन क्रमशः प्र० हुमेइस humeis, द्वि० हुमस humas च० हुमिन humin और षष्ठी हुमोन humon हैं।

स्पष्ट है कि ग्रीक में वयम्, यूयम् और वः तथा नः से सम्बद्ध रूप सर्वथा लुप्त हो गए। यहाँ एकवचन में म तथा तु प्रकृतिक तथा बहुवचन में अस्मे और युष्मे प्रकृतिक रूप ही बचे हुए हैं।

लेटिन

यही स्थिति लेटिन की है। यहाँ युष्मद् और अस्मद् के एकवचन और बहुवचन के रूप क्रमशः इस प्रकार बनते हैं—

एकवचन

	अस्मद	युष्मद्
प्रथमा (कर्ता)	ईगो Eego (अहम्)	तु Tu (तु, त्वम्),
द्वितीया (कर्म)	मे Me (मा)	ते Te (त्वा)
सम्प्रदान	मिहि Mihi (मह्यम्)	तिबि Tibi (तुभ्यम्)
सम्बन्ध	मेई Mei (मे)	तुइ Tui (ते)

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

बहुवचन

	अस्मद्	युष्मद्
प्रथमा (कर्ता)	नोस् Nos (नः)	वोस् Vos (वः)
द्वितीया (कर्म)	" " "	"
सम्प्रदान	नोबिस Nobis (नोभ्यः)	वोबिस Vobis (वोभ्यः)
सम्बन्ध	नोस्त्रम Nostrum (नः)	वोस्त्रम Vostrum (वः)

स्पष्ट है कि यहाँ भी वयम्, यूयस् और अस्मे तथा युष्मे से सम्बद्ध रूप लुप्त हो गए हैं, केवल म और त तथा अनुलग्न नः और वः रूप ही शेष बचे हैं और इन्हीं के साथ विभिन्न विभक्ति-प्रत्यय जोड़कर काम चला लिया गया है।

अंग्रेजी

ट्यूटानिकवर्ग की गॉथिक, जर्मन, अंग्रेजी आदि भाषाओं का साहित्य उतना पुराना नहीं है। इस परिवार की सबसे बड़ी बहन गॉथिक में पादरी उलफिला द्वारा चौथी शताब्दी में किया गया बाइबल का अनुवाद मिलता है। इस प्रकार ट्यूटानिक वर्ग की भाषाओं का चौथी शताब्दी-पूर्व का इतिहास अनुपलब्ध है, फिर भी उत्तम-पुरुषवाचक तथा मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामों की विभिन्न प्रकृतियों को अंग्रेजी और जर्मन आदि भाषाओं ने ग्रीक और लेटिन जैसी पुरानी भाषाओं की अपेक्षा कहीं अधिक सुरक्षित रखा हुआ है। जैसे कि—

उत्तम पुरुषवाचक अस्मद् तथा मध्यम पुरुषवाचक युष्मद् शब्द

एकवचन

	गॉथिक	जर्मन	अंग्रेजी
प्रथमा (कर्ता)	इक Ik	इख Ich	I आई (ईगो, अहम्)
	थु Thu	डु Du	दाउ Thou (त्वम्)
द्वितीया (कर्म)	मिक् Mik	मिख् Mich	मी Me (मा)
	थुक Thuk	डिख् Dich	दी Thee (त्वा)
सम्बन्ध	मेइना Meina	मिर Mir	माइ My माइन Mine(मे)
	डिर् Dir	दाइन् Thine (ते)	

Swami ... n, New Delhi. Digitization eGango...

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अस्मद् तथा युष्मद् शब्द

बहुवचन

	गॉथिक	जर्मन	अंग्रेजी
प्रथमा (कर्ता)	वेइस् Veis	विर् Wir	वी We (वयम्)
	युस् Yus	इर Ihr	यू You (यूयम्)
द्वितीया (कर्म)	अन्सिस् Unsis	उन्स् Uns	Us अस्मे (नः)
	लुप्त ...	...	... ...
सम्बन्ध	अन्जर Unsara	अन्जेर Unser	अवर Our (नस्)
	इज्वेरा Izvara	यूख Euch	योर Your (युष्मे) ,,

स्पष्ट है कि गॉथिक, जर्मन और अंग्रेजी में—कर्ता, कर्म और सम्बन्ध के एक वचन और बहुवचन में उत्तमपुरुष म तथा वि, अस्मे और नस् तथा मध्यम पुरुष की त्व, ते तथा यु और युष्म प्रकृतियाँ न्यूनाधिक रूप में सुरक्षित हैं।

रूसी

रूसी भाषा में उत्तम पुरुष कर्ता एकवचन या बहुवचन मी (अस्मे) तथा सम्बन्ध के एकवचन में मोया (मे) रूप हैं। कर्म तथा सम्बन्ध आदि कारकों में क्रमशः नास्, नाशा (नस्) और वास्, वाशा (वस्-तुम्हारा) आदि रूप हैं। मध्यम पुरुष अथवा एकवचन ती, हिन्दी तू का प्रतिरूप है जो त्वम् से विकसित है। इसका बहुवचन वी (सं० अनुलग्न रूप वः) से सम्बद्ध है। और षष्ठी एकवचन तोया और तेन्या सं० (त्वा और) ते से सम्बन्ध हैं।

फारसी

फारसी में पुरुषवाचक सर्वनामों के केवल निम्न रूप बचे हैं—

प्रथमा एकवचन मन्, मैं (अस्मे) और तू (त्वम्)

तथा

बहुवचन मा, हम (अस्मे) और शुमा, तुम (युष्मा)

इनके सिवा सम्बन्ध में मरा (मेरा) और तुरा (तेरा) रूप भी सं० मे और त्व से ही सम्बद्ध हैं।

...i Amrit Vagbhav Acharya Colle...

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

लेटिन में तद् शब्द

अन्य सर्वनामों की भाँति लेटिन में तद् Iste शब्द के रूप भी बहुत कुछ सुरक्षित हैं। यहाँ स्त्रीलिंग, पुंलिंग और नपुंसकलिंग इन तीनों के रूप एकवचन तथा बहुवचन में बहुत कुछ सुरक्षित हैं। जैसे कि—

एकवचन

	पुंलिग	स्त्रीलिंग
कर्ता	इस-ते is-te (ते, सः),	इस-ता is-ta (ता, सा)
कर्म	इस-तुम् Is-tum (तम्),	इस-ताम is-tam (ताम्)
सम्प्रदान	इस-ती Is-ti (तस्मै)	×
अपादान	इस-तो(द्) Is-to(D)(तस्माद्)	इस्ताद Is-ta(D) (तस्याः)
सम्बन्ध	इस-तीउस Is-tius (तस्य),	×

बहुवचन

कर्ता	इस-ती is-ti (ते),	is-tos इस-तॉस् (ताः)
कर्म	इस-तोस is-tos (तान्),	इस-तास is-tas (ताः)
सम्प्रदान	इस-तीस Is-tis (तेभ्यः),	×
अपादान	×	×
सम्बन्ध	इस-तोरुम Is-torum (तेषाम्),	इस्तारुम Istarum (तासाम्)

लेटिन में तद् शब्द के नपुंसकलिंग के प्रथमा द्वितीया रूप भी संस्कृत की भाँति ही बनते हैं। एकवचन में इस-तुद् Is-tud (तद्) और बहुवचन में इस-ता is-ta (तानि)।

विशेष—लेटिन में तद् शब्द के साथ पूर्वपद इस् Is जुड़ा हुआ है यह और कुछ नहीं अस्, is धातु ही है। इस प्रकार 'इस-ते' का अर्थ हुआ 'वह है'। लेटिन में इसका अर्थ "वह जो तुम्हारे पास में है" होता है।

स्पष्ट है कि संस्कृत और अवेस्ता के पश्चात् सभी प्रकार के सर्वनामों के तीनों लिंगों और पांचों विभक्तियों के एकवचन और बहुवचन के रूप लेटिन में काफी हद तक सुरक्षित हैं और यह भी कि विभक्ति-प्रत्यय भी लेटिन में लगभग ज्यों के त्यों [illegible]मान हैं। जैसे कि—

Swami Amrit Vageesh Acharya ... Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

लेटिन और संस्कृत की विभक्तियां

	एकवचन		बहुवचन	
	संस्कृत	लेटिन	संस्कृत	लेटिन
कर्ता	(विभिन्न प्रत्यय)		अस्	es एस्
कर्म	अम्	em एम्	अस्	es एस्
सम्प्रदान	ए	i इ (सप्तमी विभक्ति)	ऐभ्यः	ibus इबुस्
अपादान	अस	e ए (चतुर्थी विभक्ति)	एभ्यः	ibus इबुस्
सम्बन्ध	अस्	is इस्	आम्	um उम्

निर्देशकार्थक is, ia और id (वह) इदम् (यह) शब्द

संस्कृत की भांति लेटिन में भी इ प्रकृतिक 'इदम्' शब्द की रूपावली पुंलिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग तीनों में पृथक्-पृथक् हैं। जैसे कि—

एकवचन

कर्ता	इस is (पु०) इद् id (नपुं०) es एस (स्त्री)
कर्म	एउम् Eeum (पु० इमम्) Eam एअम् (स्त्री)
सम्प्रदान	एइ Eei
अपादान	एओ (पु०) इआ ea (स्त्री)
सम्बन्ध	एइउस् Eius (अस्य)

बहुवचन

कर्ता	एइ Eei (पु०) एअए eae (स्त्री) इआ ea (नपुं०)
कर्म	इओस eos (पु०) इआ ea (नपुं०), एआस eas (स्त्री०)
सम्प्रदान	एइस Eeis (तीनों लिंगों में)
अपादान	एइस Eis (तीनों लिंगों में)
सम्बन्ध	एओरम Eorum (एषाम्) पु० इआरम earum (स्त्री) (आसाम्)

विशेष—लेटिन के इस इ प्रकृतिक 'इदम्' शब्द के सम्बन्ध में कुछ विशेषताएँ द्रष्टव्य हैं जैसे कि —

Swami Amrit Vagbhav Acharya Co... New De...

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

(क) संस्कृत में इदम् का अर्थ यह है जबकि लेटिन में वह।

(ख) संस्कृत की भांति लेटिन में भी इ प्रकृतिक इस शब्द के नपुंसकलिंग प्रथमा और द्वितीया एकवचन में इद् रूप सर्वथा समान है।

(ग) संस्कृत 'इदम्' शब्द के पुंलिग प्रथमा एकवचन में नपुंसक प्रथमा एकवचन अथवा पु० द्वितीया एकवचन की अम् विभक्ति ने आकर मूल स विभक्ति पर अधिकार जमा लिया और इ+अम्=इयम् रूप बन गया जो वास्तव में अनियमित है। जबकि लेटिन प्रथमा एकवचन रूप इस् is सर्वथा नियमित।

(घ) यही स्थिति संस्कृत कर्म एकवचन इमम् की है। यहां मध्यवर्ती म 'रामम्' के अनुकरण पर जबरदस्ती आ घुसा है। जबकि लेटिन एउम् Eeum रूप स्वाभाविक है। यहाँ अम् के अ ने इ को गुणित ए में परिवर्तित कर दिया है। यही स्थिति सम्प्रदान, अपादान और सम्बन्ध की है। सम्प्रदान (वास्तव में अधिकरण) की इ विभक्ति के कारण प्रकृति इ को गुण हो गया और रूप एइ ei बन गया जो उचित ही है।

(ङ) सम्बन्ध एकवचन में लेटिन मूल प्रत्यय ङस् (अस्-उस्) विद्यमान है, क्योंकि संस्कृत के सिवा अन्य सभी भारोपीय भाषाओं में अकारान्त और इकारान्त दोनों प्रकार के शब्दों में केवल अस् ही है। जबकि संस्कृत में अकारान्त शब्दों में अस् के स्थान पर स्य आ जमा है।

स्पष्ट है कि इ+अस से निष्पन्न लेटिन रूप एइउस Eius स्वाभाविक है। यहाँ अस् के कारण प्रकृति इ को वृद्धि होकर एइ—ए रूप बन गया।

(च) कर्म बहुवचन में स्त्रीलिंग और पुंलिंग दोनों में लेटिन अस् विभक्ति सुरक्षित है, जबकि संस्कृत में स्त्रीलिंग के रूप इमाः में तो अस् बचा रह गया, पर पुंलिंग में उसके स्थान पर आन् आ बैठा।

(छ) षष्ठी बहुवचन की विभक्ति आम् संस्कृत और लेटिन दोनों में समान है और इ प्रकृति भी। स्त्रीलिंग रूप लेटिन इआरुम earum और सं० आसाम् दोनों में स्त्रीवाचक आ एकसा ही है।

CC-0. Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwan Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वास्तव में संस्कृत और लेटिन एक ही भाषा की दो विभाषाएँ मात्र हैं। यह बात दूसरी है कि संस्कृत में अधिकांश प्राचीन रूप सुरक्षित हैं जबकि लेटिन बहुत विकसित हो गई।

'क' प्रकृतिक qui, quae, quad (जो) शब्द

एकवचन

प्रथमा कर्ता	क्वइ qui (कः) पु० क्वोद् quod न०
कर्म	क्वेम् quem (कम्) पु० क्वाम् quam (काम्) स्त्री०
सम्प्रदान	कुइ cui (तीनों लिंगों में)
अपादान	क्वुओ quo पु० क्वुआ qua स्त्री०
सम्बन्ध	कुयुस cujus (तीनों लिगों में)

बहुवचन

कर्ता	क्वी qui (के) पु० क्वाए quae (काः) स्त्री०
कर्म	क्वुओस quos (काः) पु० क्वुआस quas (काः) स्त्री०
सम्प्रदान	क्विबुस quibus (केभ्यः) तीनों लिंगों में
अपादान	क्विबुस quibus (केभ्यः)
सम्बन्ध	क्वओरुम quorum पु० क्वारुम quarum स्त्री०

विशेष—'क' प्रकृतिक इस किम् qvi शब्द की रूपावली पांचों विभक्तियों में इतनी समान है कि लेटिन तथा संस्कृत में अन्तर किया ही नहीं जा सकता। जैसे कि—

(क) सम्प्रदान और अपादान बहुवचन की विभक्ति भ्यस् से निष्पन्न रूप संस्कृत केभ्यः और लेटिन quibus सर्वथा एक ही है।

(ख) स्त्रीलिंग कर्म बहुवचन संस्कृत रूप काः और लेटिन quae भी एक ही हैं।

(ग) कर्म एकवचन के पुंलिंग और स्त्रीलिंग दोनों के रूप दोनों भाषाओं में अम् विभक्ति प्रत्यय के योग से निष्पन्न होकर क्रमश सं० कम् लेटिन quem क्वेम (पु०) तथा सं० काम् लेटिन quam क्वाम् (स्त्री०) निष्पन्न हुए हैं।

Swami Amrit Vagbhav Achar... Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

-सत्यम्—

एषा वेदकथा नूनमद्भुता सरसा नवा।
श्रावं-श्रावं वेदवृत्तं जायते पुलकोद्गमः ॥६॥

अनेन मम स्वामिना तु लोकमान्य तिलकायापि ऋग्वेदस्य खण्डषट्कमुपहाररूपेण प्रेषितम्।

मूलरः—अद्भुतं खलु तिलकस्य पाण्डित्यम्। तस्य वेदकाल निर्णायिकां ओरायन मृगशीर्ष (orian) इति नाम्ना विख्यातां लघीयसीं पुस्तिकामवलोक्य जाता मे मनसि श्रद्धा तस्मै विद्वद्वराय।

जार्जिना—अथ च पत्रपत्रिकासु लेखजातं लिखित्वा इल्वर्ट विधेयकस्यापि भूयसा प्रयत्नेन समर्थनं विहितमनेन मे स्वामिना। यद्यपि सर्वैरांग्लैर्विधेयकस्यास्य प्रबलो विरोधः कृतः।

मूलरः—भारते स्थितवतामांग्लाधिकारिणामभियोगश्रवणाधिकारोऽधिगतो भारतीयन्यायाधीशैरनेनेल्वर्ट विधेयकेन।

विवेकानन्दः—विद्वद्वर ! भारतमस्मान् किमुपदिशतीति पुस्तकं भवतो भारतभक्त्याद्यन्तमाप्लावितं वर्तते। तदधुना भवान् भारतं कदागमिष्यति ?

मूलरः—स्वामिमहोदय ! अत्र विषये एतदेवास्मिवक्तुकामः—

वाराणस्यां निवासश्च गङ्गाम्भसि निमज्जनम्।
वेदवेदान्तपाठश्च त्रयमेतत् प्रियं मम ॥

अथ च (सगद्गदम्)

भूयो नात्रागमिष्यामि यास्यामि यदि भारतम्।
तत्रैव दाहसंस्कारः कर्तव्यो मे भवादृशैः ॥११॥

स्यान्नाम यावत् कानिचिन्नवीनानि पुस्तकानि कक्षान्तरात् समादायागच्छामि, तावदेतत्पुस्तकजातमवलोकनीयमत्रभवद्भ्याम्। (इति प्रस्थितः)

स्टर्डी—पुस्तकप्रचय एषो मोक्षमूलरविरचितः सम्पादितो वा। यथाहि—एतदस्ति मोक्षमूलरसम्पादितं ऋग्वेदखण्डषट्कम्। अयञ्चास्यैव द्वितीयसंस्करणस्य प्रथमः खण्डः। एषः पुरातन संस्कृत साहित्येतिहास एतच्च संस्कृतव्याकरणम्। एतत्सानुवादं

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सटिप्पणञ्च ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्। एतानि च
आफ ईस्ट इत्याख्यग्रन्थमालाया पञ्चाशतखण्ड
चिप्स फ्राम जर्मन वर्कशॉप इत्याख्यं लेख संकलन
ग्लासगो विश्वविद्यालये गिफ्फोर्ड व्याख्यान माल
भाषणानां पुस्तकरूपेणमुद्रितं एन्थ्रापोलोजिकल रिल
फिज़ीकल रिलीजन खण्ड त्रयम् एषा च अस्य महानुभाव-
स्यात्मकथा। एतच्च आई० सी० एस० पदेनियुक्तानां
भारतीयशासकपदं गृहीतुं जिगमिषुणामांग्लाधिकारिणां
प्रबोधनाय भारतस्य वास्तविकरूपस्य परिचयप्रदानाय
प्रदत्तानां व्याख्यानानां। इण्डिया ह्वाट इट केन टीच अस इति
नाम्ना प्रकाशितं संकलनम्। एतच्च दी वेदान्त फिलॉसफी
नामकं विख्यातं पुस्तकम्।

विवेकानन्दः—मोक्षमूलरस्य तु समस्तमेव जीवनं संस्कृतानुरागमनु-करणीयाञ्च भारतभक्ति व्यनक्ति। यादृशेन भारतप्रेरणा-प्लावितोऽयं तस्य शतांशमप्यस्माभिर्लब्धं स्यात्। अपरा विद्यया परां विद्यामधिजिगमिषतोऽस्योपनिषत्तत्त्वज्ञस्य वेदविदुष आवासं प्राप्यैवमनुभवामि यद् वसिष्ठस्यारुन्धतेश्चाश्रमपद-मेवागतोऽहमधुना।

स्टर्डी—मयाप्येवमेवानुभूयते।

विवेकानन्दः—स्टर्डीमहाभाग! दृष्टं भवद्भिर्भारतागमनस्य चर्चायामु-पस्थितायां मोक्षमूलरस्य नेत्रद्वयमश्रुसिक्तंजातम्। नूनमनेन पूर्वजन्मनि केनापि पण्डितेन भाव्यम्:—

"तच्चेतसा स्मरति नूनमबोधपूर्वं
भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि।"

मूलरः—(प्रविश्य) अहो! कालिदासः स्मर्यते—

"रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्
पर्युत्सुको भवति यत्सुखितोऽपि जन्तुः।"

स्टर्डीमोक्षमूलरौ—तच्चेतसा स्मरतिनूनमबोधपूर्वं
भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि।

जार्जिना—स्टर्डीमहोदयोऽपि संस्कृते प्राविण्यं भजते?

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मोनारायणाय । कल्याणमस्तु । पुण्यशीले !
प्तं भवत्या पूर्वजन्मनि ।

—महात्मन् ! न केवलं पूर्वजन्मन्यपित्वस्मिञ्जन्मन्यपि षड् वर्षाणि प्रतीक्षाजनित तापं तप्त्वैव···

मूलरः—(सस्मितम्) आवयोरुद्वाहेनैकसूत्रता जातेति वाक्यशेषः ।

(सर्वे हसन्ति)

विवेकानन्दः—वेदज्ञवर ! भवता स्वयौवनारम्भे त्रयोविंशतितमे वर्षे सायणभाष्यसहितस्य ऋग्वेदस्य सम्पादनं मुद्रापणञ्चारब्धम् । तच्च एकोनपञ्चाशत्तमे वर्षे समाप्तिमगात् । इत्यहं जानामि ।

मूलरः—स्वामिपादा अपि च चरमे वयसिविद्यमानस्य मेऽधुना नास्ति तथाविधा शक्तिस्तथापि—

प्रकाशनाय वेदस्य रम्यं संस्करणं नवम् ।
विजयनगराधीशः प्रायच्छत्पुष्कलं धनम् ।।६।।

अतएवाधुना सम्यक् सम्पाद्य संशोध्य च विशालाकारपृष्ठानां खण्डचतुष्टयेन ससायणभाष्यस्य ऋग्वेदस्य द्वितीयसंस्करणस्य प्रकाशनमारब्धम् ।

विवेकानन्दः—पूर्वं विजयनगरस्यैव सम्राजा कृष्णराजद्वितीयेनाचार्य सायणः ऋग्वेदस्य भाष्यनिर्माणायाधुना च तस्यैव विजयनगर-स्यमहाराजेन सायणभाष्यस्य सुरम्यरूपेण पुनः प्रकाशनाय भवांश्च प्रेरित इति तु युज्यत एव ।

मूलरः—अथ चानेन विजयनगरमहाराजानुदानेन—

उदाराः कर्मशूराश्च वाक्शूरा न हि केवलम् ।
विद्यन्ते भारतीया हि ज्ञातं सर्वैर्जनैरिह ।७।

स्टर्डी—सायणभाष्यसहितस्य ऋग्वेदस्य द्वितीयसंस्करणस्य प्रकाशनायै-केन भारतीयेन विजयनगरमहाराजेन द्रव्यं दत्तमिति तु युज्यते । परमस्य प्रथमसंस्करणस्य प्रकाशनायेस्टेण्डिया कम्पनी कथं प्रावर्तत ? इत्यस्तिजिज्ञासितम् ।

wami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मूलरः —सम्यक् पृष्टम्।

सायणभाष्यस्य प्रकाशनाय श्रीवर्नूफमहो[illegible] प्रयतितम्। श्रीमताचार्यब्रॉथलिंगकमहोदयेन [illegible] पिटर्सबर्ग अकादमीतः ससायण-भाष्यं ऋग्वेदं प्रकाशयितु[illegible] परन्तु मम नाम्ना सह तस्यापि नाम सम्पादकरूपेण प्रकाशयिष्यते। तच्च मया न स्वीकृतम्। श्रीमता वॉप्पमहोदयेनापि बर्लिनतः सायणभाष्यप्रकाशनायोत्साहः प्रदर्शितः। परं तेन लिखितं यत् 'सम्पूर्णोभाष्यस्तु बृहदाकारोऽस्ति'। तस्य संक्षेपो विधातव्यः। मयैतदपि न स्वीकृतम्। तदैवाहमिण्डिया-हाउस-स्थितानां भाष्यपाण्डुलिपिनामध्ययनाय लन्दनमगच्छम्। तत्रांग्लदेशस्थः प्रशियाराजदूतः परमप्रभविष्णुः सुगृहीतनामधेयो मम पितुमित्रः तेनैव क्रमेण च ममापि परिचितः बुन्शेन महाभागस्तदा लन्दन एवासीत्।

स्टर्डी —एवमेवम्।

मूलरः —सायणभाष्यस्य प्रकाशनस्य मम योजनां श्रुत्वासौ महाभागो मुमुदेतराम्। 'कम्पनी व्यतिरिक्तं केनचिदन्यदेशीयेन सर्वकारेण भारतस्यायं गौरवग्रन्थश्चेत् प्रकाशितः स्यात्तदा कम्पनीकृते लज्जाया एव विषयोऽभविष्यदिति' कृत्वा प्रेरिताः श्रीबुन्शेन महाभागेन कम्पनीनिदेशकाः योजनां मे कार्यरूपे परिणमयितुम्। समारब्धे भाष्य प्रकाशन कार्ये च केवलं द्विवारं वर्षद्वयस्याभूद्व्यवधानम्।

स्टर्डी —को व्याघातो जातः?

मूलरः —प्रथमं भारते सैन्यविद्रोहवशादीस्टेण्डियाकम्पन्यधिकारिणो भाष्यप्रतिलिपिनां प्रेषणेऽसमर्था अभवन्। एकदा च जाते पोतभंगे भारतादानीयमानाः पाण्डुलिपयः सागरे सञ्जाताः।

जार्जिना —तदेवम्—

> पञ्चविंशतिभिर्वर्षैस्तद्गतेनान्तरात्मना।
> अतन्द्रितेन मे भर्त्रा ऋग्वेदोऽभूत् प्रकाशितः॥८॥

स्टर्डी —रुचिरा साहसिका सुदीर्घकालव्यापिनी चैषा वेदकथा।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGang

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

पहला अंक

विद्या-वेदवाणी ब्राह्मण अर्थात् वेदज्ञ विद्वान् के पास आयी और बोली— निरन्तर स्वाध्याय व कुल परम्परा में पठन-पाठन के द्वारा तू मेरी सदा रक्षा करते रहना, क्योंकि तेरी निधि तो मैं ही हूं। तू मुझे कामी, कुटिल, कदाचारी और ईर्ष्यालु के हाथ में मत पड़ने देना ताकि मेरी शक्ति और सामर्थ्य सदा बनी रहे।

(मन्त्र के उत्तरार्ध की ध्वनि धीरे-धीरे मद्धिम पड़ती है और ये श्लोक सुनाई देने लगते हैं)

वाक् और अर्थ का वर देने वाली, रम्य इसीलिए नित्य नवीन तथा वाणी और अर्थ में ही जिसका प्रत्यक्ष रूप प्रटक हो रहा है अथवा जो वाक् और अर्थ या शब्दार्थ की जीती-जागती मूर्ति है, जो प्रकाशस्वरूप है, या भारोपीय भाषाएं ही जिसका स्वरूप हैं वह भव्य भारती सज्जनों के लिए सदा श्रेयस्करी हो ॥ १ ॥

जिसने यूरोप के लोगों को, वहां के सम्राटों-सम्राज्ञियों, राजाओं-राजपरिवारों तथा राज्याधिकारियों को भारत के (उदात्त) चरित्र और यहां की प्रज्ञा से परिचित करवाया ॥ २ ॥

जिसने सायण भाष्य के साथ सम्पूर्ण ऋग्वेद प्रकाशित किया,आज सारे विश्व में उस मोक्षमूलर भट्ट का यश फैल रहा है ॥ ३ ॥

(इस नान्दी—मंगलाचरण के बाद सूत्रधार और नटी का प्रवेश)

सूत्रधार—आर्ये ! सुप्रभातम्।

नटी—सुप्रभातम्, नाट्यविशारद ! यह क्या पुस्तक है ? **(पुस्तक को देखकर)** वाह, आजकल महात्माजी की आत्मकथा पढ़ी जा रही है।

सूत्रधार—क्यों नहीं, पूज्य बापू ने अपनी इस आत्मकथा में मैक्समूलर की एक पुस्तक की विशेषरूप से चर्चा की है। महात्माजी ने लिखा है कि अफ्रीका में रहते हुए उन दिनों मैंने "भारत हमें क्या सिखा सकता है' नामक मैक्समूलर की पुस्तक बड़े चाव और उल्लास के साथ पढ़ी थी।

नटी—और हां—

मैंने भी 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मेरे उस अधिकार को कोई नहीं छीन सकता', इस महामन्त्र के उद्घोषक लोक-

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मान्य तिलक के जीवन में पढ़ा है कि मेक्समूलर के
सम्राज्ञी विक्टोरिया ने उन्हें (लोकमान्य तिलक को,
आज्ञा प्रचारित की थी।

सूत्रधार—हां, याद आया, उसी महाप्राण मोक्षमूलर भट्ट के जीवन की
'मोक्षमूलर वैदुष्य' नामक भवानीशंकर त्रिवेदी का रचा हुआ नया नाटक हम आज प्रस्तुत करने जा रहे हैं। तो सब कलाकार तैयार हो जाएं।

(सभा की कानाफूसी के बीच वेदमन्त्र की-सी ध्वनि सुनाई देती है।)

हैं, यह क्या, मेरे निवेदन करते-करते ही यह कैसी ध्वनि सुनायी देने लगी। **(कान लगाकर)** हां, समझ गया—यह तो ग्रामोफोन बनाने वाली कंपनी की इस प्रार्थना पर कि एडीसन के इस नये आविष्कार के द्वारा हम सबसे पहले आपके वचनों को ही रिकार्ड करना चाहते हैं, स्वयं मोक्षमूलर वेदमन्त्र पढ़ रहे हैं।

(इति प्रस्तावना)

पहला दृश्य

स्थान—ग्रामोफोन कम्पनी की ओर से लन्दन में आयोजित सभा। रेकार्डिंग उपकरण भी दिखायी पड़ते हैं।

(यन्त्र के सामने मोक्षमूलर—ॐ अग्निमीड़े इत्यादि मन्त्र पढ़ रहे हैं।)

आयोजक—वेदज्ञवर, आज आपने हमारे ग्रामोफोन के लिए सर्वप्रथम वेदवाणी रिकार्ड करवायी। आपसे वेदमन्त्र सुनकर हम कृतकृत्य हुए।

मोक्ष : यह तो स्वाभाविक ही था, क्योंकि मेरा तो जीवन हीं वेद के लिए सर्मपित है और वेदमय है। इसीलिए मैंने आपके लिए सर्वप्रथम ऋग्वेद का यह प्रथम मन्त्र ही रिकार्ड करवाया।

आयोजक—किन्तु हम चकित हैं कि आपने यूरोप में रहते हुए ही संस्कृत का ऐसा ज्ञान कैसे प्राप्त कर लिया।

मोक्ष—मैंने संस्कृत कैसे पढ़ी, यह तो प्रायः सभी लोग जानना चाहते हैं। वास्तव में लाइपजिग विश्वविद्यालय में स्नातक परीक्षा के त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम में

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

किम्। मया भारत एवाधीता संस्कृत भाषा । स्वामि-
दानां सान्निध्येन च समृद्धतरं जातं मे संस्कृतज्ञानम् ।

विवेकानन्दः—महाभाग ! अद्यत्वे खलु विश्वस्मिन्नपि विश्वे पूज्यन्ते मे गुरुवः श्रीपरमहंसपादाः ।

मूलरः—युज्यत एवेतद्। यतो हि—

रामकृष्णं महात्मानं प्रत्यक्षं धर्मविग्रहम्।
विहाय कोऽन्यः पुरुषः पूजनीयो भवेदिह ॥१२॥

एतदस्ति मे नवीनं प्रियञ्च पुस्तकम् पश्यन्तु स्वामिपादाः ।

विवेकानन्दः—(**विलोक्य**) अहो ! एतत्तु मम गुरुवर्य पूज्य परमहंस पादानां भवता लिखितं जीवनचरितम् । सुतरां प्रीतोऽस्म्य-नेनाहम्, महानुभाव ! किमत्रभवते प्रत्युपकरोमि ?

मूलरः—स्वामिन् ! लब्धं महामहिम्ना जर्मनसम्राजा महामान्यया सम्राज्ञीविक्टोरियया च सर्वोच्चमलंकरणम् । अधिगता प्रीवीकौंसिलस्य सदस्यता । अर्जितं प्रभूतं यशः। प्राप्तश्च भारतीयविदुषां भवादृशाणां महात्मनाञ्चानिन्द्यः प्रेम । सर्वमेवाधिगतं भगवत्प्रसादात् । किमतः परं स्यात् । तथापि यदि वाग्देवता प्रसीदति तदा कालिदासानुगामि मे वचनमस्तु—

भरतवाक्यम्

प्रवर्धतां भरतभुवोऽत्र गौरवं सरस्वती श्रुतिमहती महीयताम् ।
बुधोत्तमो गुणगणगौरवादृतः समग्रविश्वहितकरः प्रमोदताम् ॥

(**इति निष्क्रान्ताः सर्वे**)

इति तृतीयोऽङ्कः

(समाप्तञ्चेदं मोक्षमूलरवैदुष्यं नाम नाटकम्)

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

और हां, मैं तो यह भी समझता हूं कि एक दिन तुम्हारे कारण इस लाइपज़िग विश्वविद्यालय का नाम रोशन होगा।

सब—गुरुजी, हम भी आप से संस्कृत पढ़ेंगे। अब तो संस्कृत जरूर पढ़ेंगे।

(कक्षा की समाप्ति के साथ
सभी चले जाते हैं।)

तीसरा दृश्य

स्थान—जर्मनी के डेस्साउ नगर में मैक्समूलर की गृह-वाटिका।

(मूलर त्वामालिख्य···आदि श्लोक सस्वर पढ़ता है।)

अग्रजा—भैय्या, तुम क्या गा रहे हो?

मूलर—दीदी, आसमान में घिरी घटाएं देखकर मेरा मन मेघदूत पढ़ने को हो आया। देखो तो हमारे यहां ये कैसे ठिठुरे-से एक सरीखे बादल हैं। सूरज की किरणें जिस पर छितरा रही हों, ऐसे सुरमे के पहाड़ से लगने वाले नीलकमल-मनोहर कालिदास के बादलों का तो कहना ही क्या! ठीक तो है—

जिस पर सूरज की तिरछी किरणें पड़ रही हों ऐसे सजल बादल, या कालिदास के शब्दों में 'वल्मीक' के विना भला रत्नों के ढेर के जैसा जगमगाता इन्द्रधनुष कैसे दिख सकता है।

अग्रजा—सचमुच, संस्कृत बड़ी प्यारी भाषा है। एक बार फिर सुना तो···

मूलर—दीदी, तुम कहो तो एक बार क्या दस बार सुना दूं। (त्वामालिख्य··· आदि श्लोक फिर पढ़ता है।)

अग्रजा—काश! मैं इसका अर्थ भी समझ पाती।

मूलर—दीदी, यही सोचकर तो मैंने कालिदास के इस गीतिकाव्य 'मेघदूत' का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद करना प्रारम्भ कर दिया है।

अग्रजा—बहुत खूब, तुमने मेघदूत का पद्यानुवाद करना शुरू कर दिया, यह बहुत अच्छा किया। यूं संस्कृत और जर्मन ये दोनों भाषाएं मिलती-जुलती सी हैं।

मूलर—तुम ठीक कह रही हो। इन दोनों भाषाओं में समानता ही नहीं

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

एकात्मता भी है। (यहां मूलर संस्कृत और जर्मन भाषा के कु बताता है। और कहता है कि इस प्रकार संस्कृत और जर्मन भाषाओं की इस एकरूपता के कारण ही है इतना जल्दी संस्कृत पढ़ गया।)

अग्रजा—अब तो मेरे मन में भी संस्कृत सीखने की ललक जाग उठी है।

मूलर—एक बात और सुन···

अग्रजा—मैं क्या सुनूं, तू मेरी बात सुन और सुनकर उस पर कुछ ध्यान दे।

मूलर—बता क्या कहना चाहती है।

अग्रजा—भैया, तुमसे क्या छिपा है। वैधव्य के असह्य दुःख को सहकर भी हमारी मां ने बचपन से लेकर आज तक हमें खूब पढ़ाया-लिखाया और सब तरह से सुखी रखा। और यह भी कि यहां के ड्यूक से जो नाम मात्र की पेंशन मिल रही है, उससे और हमेशा प्रथम रहने के कारण तुम्हें मिलने वाली छात्र-वृत्ति से अपना अब तक गुजारा चलता रहा। लेकिन अब ा सोचती है···(**देखकर**) लो, वह तो इधर ही आ रही है।

मूलर—(**गद्गद् होकर**) मां ! देख, मेरी यह पुस्तक !

माता—बेटे, तेरी एक पुस्तक को क्या देखूं ? तेरी तो बहुत-सी पुस्तकें हैं।

मूलर—भगवान् करे तेरी बात सच हो, मां। यह तो संस्कृत के हितोपदेश का मेरा लिखा जर्मन अनुवाद है। यह आज ही छपकर आया है। इसका यह श्लोक मुझे बहुत अच्छा लगता है। सुन मां, सुन—

जिसका मन सन्तोषी है, समझ लो कि उसे सब कुछ मिल गया। पांव में जूता पहने हुए व्यक्ति के लिए तो सारी धरती पर चमड़ा मढ़ा हुआ है। (**खुशामद के लहजे में**) मेरी मीठी-मीठी मां ! अब मैं चाहता हूं···

माता—तू जो चाहता है सो मैं नहीं जानती बेटे ! पर मैं जो चाहती हूं सो सुन। अब तू पढ़-लिखकर लायक और जवान हो गया है। इसलिए कहीं अध्यापक लग जा ताकि अपने घर की गरीबी मिटे।

मूलर—मां तेरी बात तो ठीक है, मैं कहीं अध्यापक बनकर आना और तुम दोनों का पेट पाल लूंगा, पर मां, तब मेरी संस्कृत का क्या होगा ?

माता—तेरी संस्कृत से मुझे क्या ! अब तुझे चाहिए···

मूलर—मां, तुझे तो मालूम ही है कि लाइपज़िग विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की स्नातक उपाधि मिलने के बाद मैं संस्कृत और तुलनात्मक भाषा-विज्ञान के आचार्य श्री फ्रान्त्स बॉप्प से आगे और संस्कृत पढ़ने के लिए उनके पास बर्लिन चला गया था। वहीं मैंने सोचा कि अब मुझे पेरिस

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्रवेश लेते ही मेरे संस्कृत-अध्ययन का श्रीगणेश बड़े मजेदार ढंग से हुआ था।

दूसरा दृश्य

स्थान—लाइपजिग विश्वविद्यालय परिसर।

(छात्र-छात्राएं बातचीत करते हुए घूम रहे हैं।)

एक—यह नया भाषाध्यापक ब्रोकहाउस हमेशा कोई न कोई बेतुकी बात कर देता है।

दो—देखें, आज क्या अनोखी बात बताता है।

तीन—**(देखकर)** अरे वह तो आ भी गया।

एक—खूब रही, इस तीस साल के प्रोफेसर की शक्ल-सूरत और कपड़े तो देखो।

दो—क्या देखना है, सब भाषाध्यापक ऐसे ही होते हैं।

सब—नमस्ते !

ब्रोकहाउस—नमस्कार। चलो भई, क्लास में चलें।

एक—**(धीरे-धीरे)** इसकी क्लास में जाकर क्या होगा ?

दो—क्यों नहीं, आज भी कुछ जरूर कोई अनोखी बात कहेगा।

(ब्रोकहाउस के साथ विद्यार्थी कक्षा में आते हैं।)

ब्रोकहाउस—प्यारे छात्रो, आपको मालूम होना चाहिए कि भारत की एक भाषा है······

एक—वाह ! क्या कहने, भारत और उसकी भी कोई भाषा ?

ब्रोकहाउस—और उस भाषा का नाम है संस्कृत······

दो—हमें क्या, हुआ करे उसका कोई नाम !

ब्रोकहाउस—और वह संस्कृत भाषा हमारी ग्रीक लेटिन और गॉथिक जैसी भाषाओं से बिल्कुल मिलती-जुलती है। वास्तव में संस्कृत इनकी बड़ी बहिन है।

एक—**(धीरे-धीरे)** लगता है आज तो इसने कुछ ज्यादा ही पी रखी है।

ब्रोकहाउस—**(स्वगत)** ठीक ही तो कह रहा है यह क्योंकि मैंने अमर भारती का ऐसा मधुपान कर लिया है जिसे चखकर इस धरती पर रहते हुए भी मनुष्य निर्जर अजर और अमर हो जाते हैं।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मूलर—**(धीरे-धीरे)** रुको, मैं पूछता हूं। **(जोर से)** महाशय, सुना जाता है भारत तो सपेरों का देश है, तो भला भारत की कोई भाषा हमारी ग्री और लेटिन के बराबर है, ऐसा कैसे हो सकता है।

ब्रोकहाउस—हाथ कंगन को आरसी क्या ! यह देखो, बर्लिन विश्वविद्यालय के संस्कृत के आचार्य फ्रान्त्स बॉप्प का लिखा भारत जर्मन भाषाओं का यह तुलनात्मक व्याकरण मेरे हाथ में ही है। इसे जरा पढ़ो तो सही।

मूलर—कौन पढ़े इस पोथे को !

ब्रोकहाउस—तो लो, मैं संस्कृत और ग्रीक के एक जैसे रूप लिखे देता हूं।

(ब्लैकबोर्ड पर लिखता है।)

संस्कृत—अस्तिः स्त सन्ति
ग्रीक— ... ...

एक—(हंसते हुए) जरा देखो तो, जिसकी लिपि ही ऐसी है वह भाषा कैसी होगी।

मूलर—सचमुच, बड़े तमाशे की बात है। ठीक भी तो है—

'जैसे भारत के लोग वैसी उनकी लिपि' ऐसी अनोखी लिपि तो हमने पहले कभी नहीं देखी। देखो न, इन अक्षरों के सींग और पूंछ भी हैं।

दो—अक्षर और वे भी सींग-पूंछवाले। यह भी खूब रही।

(सब हंसते हैं।)

ब्रोकहाउस—**(कुछ चकित होकर)** विद्यार्थियो इसमें हंसने की क्या बात है। हां समझ गया, यह तुम्हारा दोष नहीं है। मैंने ही जल्दी में पहले-पहल देवनागरी में लिख दिया। तो लो, अब मैं रोमन में अस् धातु के रूप लिखे देता हूं। देखो—

(चारों भाषाओं के रूप रोमन में लिखता है।)

ब्रोकहाउस—तो आप लोगों ने देख लिया। हैं न ? चारों भाषाओं में एक जैसे रूप। अब तो हुआ भरोसा ? मूलर तुम्हीं बताओ।

मूलर—सचमुच, संस्कृत तो ग्रीक और लेटिन से बिल्कुल मिलती-जुलती है। तब तो मैं भी संस्कृत पढूंगा।

ब्रोकहाउस—अवश्य, अवश्य। प्रिय मूलर, मैं जानता हूं कि तुम गरीब हो लेकिन परिश्रमी और मेधावी भी हो। ग्रीक और लेटिन तो तुमने पहले से ही पढ़ रखी है। और मैं इन भाषाओं के साथ तुलना करते हुए संस्कृत ऐसे पढ़ाऊंगा कि तुम कुछ ही दिनों में सीख जाओगे।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthe...

प्राचीन ईरानी सम्राटों के दुर्बोध कीलाक्षर लिपि में लिखे गए प्राचीन अभिलेखों को भी पढ़ डाला। इससे आज यह भलीभांति सिद्ध हो गया है कि पुरानी फारसी भी संस्कृत का ही एक रूप है।

मूलर—सच कह रहे हो। मेरा तो कहना है—हमारे आचार्य बर्नूफ ने जो कुछ और जितना कुछ पढ़ लिया और वे जिस तरह रात-दिन काम में जुटे रहते हैं, हमें भी उनका अनुकरण करना चाहिए। (देखकर) लो, गोल्ड-स्टुकर भी आ पहुंचा। तो आओ आचार्यजी के पास सब साथ-साथ चलें।

दूसरा दृश्य

(भोज-पत्र, ताड़-पत्र और नये-पुराने कागजों पर हस्तलिखित ग्रंथों के ढेर से घिरे आचार्य बर्नूफ कुछ लिख रहे हैं। उनकी तीन बेटियां पुस्तकों और कागज-पत्रों को ठीक-ठाक करने के काम में जुटी हुई हैं।)

तीनों—प्रणाम आचार्यवर !

बर्नूफ—विद्वान् बनो। प्यारे छात्रो ! आप लोग तो जानते ही हो कि तप और स्वाध्याय में लीन भारत के वेदज्ञों ने हजारों वर्षों से वेद सुरक्षित रखे हुए हैं।

मूलर—गुरुवर ! पुस्तक या दूसरे किसी लिखित रूप के बिना ही, एक-दूसरे से सुनकर कण्ठस्थ करते हुए वेदों को अब तक बचाए रखना सचमुच आश्चर्यजनक है। भारतीयों की श्रवण और स्मरण-शक्ति अपूर्व है।

बर्नूफ—तुम ठीक कह रहे हो, किन्तु वेदों की पाण्डुलिपियां तो भारत में भी दुर्लभ हैं। फिर भी यूरोपीय संस्कृतज्ञों के प्रयत्नों से इंगलैण्ड और फ्रांस की सरकारों ने भाष्य सहित वेदों की हस्तलिखित प्रतियां किसी न किसी तरह जुटा लीं और उन्हें अपने ग्रन्थालयों में रख छोड़ा। लेकिन यहां उनका उपयोग कौन करे। मुझे डर है कि ऐसी दशा में यहां भी वे दुर्लभ ग्रन्थ कहीं कीट-भोजन न बन जाएं।

मूलर—तो क्या इस मामले में हम कुछ नहीं कर सकते ?

बर्नूफ—क्यों नहीं, क्यों नहीं। अब हमें ऐसा करना चाहिए कि भाष्यसहित वेद छपकर फिर भारतीयों के हाथों में जा पहुंचे। और इसीलिए यह रूडोल्फ

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

रॉथ अथर्ववेद और यजुर्वेद के काम में जुटा हुआ है। यह गोल्ड स्टुकर भी काम कर रहा है। (उन दोनों की ओर देखकर) अच्छा, तुम अपने काम में लग जाओ।

रॉथ और स्टुकर—जैसी गुरुजी की आज्ञा।

बर्नूफ—बेटे मूलर, तुम यहां सबसे छोटे और नये विद्यार्थी हो, इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम्हारा जीवन वेद के लिए समर्पित हो जाए। इससे तुम मेरे बहुत बड़े सहायक बन जाओगे।

मूलर—आपकी आज्ञा को शिरोधार्य कर मैं अपना जीवन वेद के लिए समर्पित करता हूं।

बर्नूफ—वत्स, तेरा देवनागरी लेख बहुत सुन्दर है, इसलिए सबसे पहले तू मेरे द्वारा सम्पादित ऋग्वेद-सायण-भाष्य की एक प्रतिलिपि तैयार करना शुरू कर दे। इसके लिए कुछ पारिश्रमिक भी तुझे मिलेगा। उससे तेरे नाश्ते का खर्च तो निकल ही जाएगा।

मूलर—गुरुजी, मैं तैयार हूं।

बर्नूफ—किन्तु वेदभाष्य की प्रतिलिपि का काम शुरू करने से पहले तुम्हें दो प्रतिज्ञाएं करनी होंगी।

मूलर—बताइये, गुरुजी!

बर्नूफ—पहले तो यह कि सायण भाष्य का सम्पादन करते हुए तुम कभी उसकी कोई एक पंक्ति भी—एक अक्षर भी छोड़ोगे नहीं। दूसरे यह कि मेरे द्वारा सम्पादित वेदभाष्य की नकल करते समय तुम धूम्रपान नहीं करोगे।

मूलर—मुझे गुरुजी की आज्ञा स्वीकार है। सायणभाष्य का सम्पादन करते हुए उसका एक अक्षर भी छूटने नहीं पाएगा। और आपके वेदभाष्य की प्रतिलिपि करते समय धूम्रपान नहीं करूंगा।

बर्नूफ—तो फिर मैं भी चाहूंगा कि यथाशीघ्र तुम अपने आप वेदभाष्य का सम्पादन करने के योग्य बन जाओ। और हां, उसके बाद तुम्हें लन्दन जाना होगा। वहां इण्डिया हाउस के ग्रन्थालय में भी सायण-भाष्य की पाण्डुलिपियां हैं। शुद्ध और प्रामाणिक पाठ के निर्धारण के लिए तुम्हें वे भी पढ़नी पड़ेंगी।

मूलर—आचार्यवर, यह तो ठीक है। पर क्षमा करें गुरुदेव, यह तो बहुत बड़ा काम है। इसके लिए जितना परिश्रम और समय चाहिए उससे कहीं अधिक धन की भी आवश्यकता पड़ेगी उसे छपवाने के लिए।

बर्नूफ—तुम ठीक कह रहे हो, पर मुझे आशा है कि तुम्हारे सभाष्य सम्पूर्ण

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

विश्वविद्यालय के विख्यात वेद-विद्वान् श्री बर्नूफ के पास जाकर अपने संस्कृत ज्ञान को और बढ़ाना चाहिये। तेरा आशीर्वाद लेने के लिए ही मैं हां आया हूं। अब तू आज्ञा दे दे तो मैं पेरिस चला जाऊं।

पुत्र, यदि तेरी यही अभिलाषा है तो मेरा भी निर्णय सुन—

—(**स्वगत**) देखें मां क्या कहती है। (**प्रकट**) बता मां, बता। तेरी आज्ञा मेरे सिर माथे।

माता—तेरा ऐसा उत्कट संस्कृत-प्रेम देखकर मैंने भी फैसला कर लिया है। सुन बेटा, तेरी संस्कृत पढ़ाई में मैं रुकावट नहीं बनूंगी। ले, यह थोड़ा-सा धन। भगवान् करे तेरी इच्छा पूरी हो ॥११॥

(धन की पोटली उसे सौंपना चाहती है)

मूलर—(**खुशी से**) सचमुच मां! रूप की तरह तेरा हृदय भी बहुत सुन्दर और कोमल है। पर यह तो बता कि तुझे यह धन मिला कहां से?

माता—यह छोटी-सी धनराशि तेरे पिताजी छोड़ गये थे। इसे मैंने आज तक बचाये रखा। आज इसके सदुपयोग का मौका आ गया है, यही सोचकर यह धरोहर अब तुझे सौंप रही हूं। ले रख, इससे तेरा कुछ काम चल जाएगा।

मूलर—(**गद्गद् होकर**) अहा, मेरी कृपालु स्नेहमयी माता! (**कहते-कहते उसके पैरों में गिर पड़ता है।**)

माता—उठ बेटे! उठ (**उसे उठाकर गले लगा लेती है**) पुत्र, मेरे जीवन का सहारा तू ही है, इसलिए तुझे परदेस भेजने को मन मानता नहीं, तो भी अब तू पेरिस जाने की तैयारी में जुट जा। और हां, सुन, वहां जाकर आचार्य बर्नूफ की विधिवत् सेवा करना और यह भी कि अपना लक्ष्य सदा ध्यान में रहे। बेटा, तुझे खूब यश मिले और प्रेय (सांसारिक सुख) तथा श्रेय (पारलौकिक कल्याण) भी तुझे सुलभ हों। यही तुझे मेरा आशीर्वाद है ॥१२॥

मूलर—भगवान् करे तेरा यह आशीर्वाद सफल हो, क्योंकि—
तेरा यह आशीर्वाद मेरे जीवन का सदा पाथेय बना रहेगा ॥१३॥
तो मां अब मुझे पेरिस के लिए प्रस्थान करने की अनुमति दे। तेरे चरणों में प्रणाम करता हूं और दीदी तुझे भी।

दोनों—बेटे, तेरा (जीवन का) मार्ग कल्याणकारी हो।

(सबका प्रस्थान)

पहला अङ्क समाप्त

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—पेरिस में आचार्य बर्नूफ के घर का आंगन।

(मैक्समूलर और रुडोल्फ रॉथ का प्रवेश)

रॉथ—मूलर, आज तुम बहुत खुश दिखते हो।

मूलर—मित्र, ऋग्वेद पर आचार्य महोदय का प्रवचन सुन-सुनकर मैं इतना आनन्दमग्न हो गया हूं कि अब मुझे पैसे की कमी या भूख-प्यास की कुछ परवाह नहीं रही।

रॉथ—अच्छा, तो यह बात है।

मूलर—ईश, कठ और केन ये तीन उपनिषदें मैंने पढ़ ली थीं। प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक शिलर के लिए केनोपनिषद् का जर्मन अनुवाद भी किया था। इसलिए कल जब आचार्य ने उपनिषदों के बारे में दो घण्टे तक प्रवचन किया तो उसे सुनकर मैं बहुत खुश हुआ। किन्तु प्रवचन की समाप्ति पर आचार्य के 'किन्तु' कहने पर मेरे मन में आया कि क्रिश्चियन होने के नाते अब कहीं बर्नूफ किसी यूनानी या दूसरे यूरोपियन दार्शनिक के निष्कर्षों को उपनिषदों से भी बढ़कर न बता दें। तब आचार्य कई क्षणों तक ध्यानमग्न रहने के बाद बोले—

'वेद, अहा ! वेद सचमुच अनिवर्चनीय हैं'

मैंने तो स्नातक कक्षाओं में ऋग्वेद और अथर्ववेद के कुछ सूक्त पढ़ने के सिवाय आज तक वेद के दर्शन भी कहीं नहीं किए। तो मैं वेद की महिमा क्या समझता। पर, गुरुजी तो ठीक ही कहेंगे।

रॉथ—प्यारे मूलर, वेद तू कहां से देखेगा। ऋग्वेद के कुछ मण्डलों के सिवा वेद कहीं छपे हैं, जो तुझे देखने को मिल जाएंगे। हां, हमारे इस पेरिस विश्व विद्यालय में वेदों की पाण्डुलिपियां अवश्य हैं। और श्री बर्नूफ उनकी प्रतिलिपि तथा सम्पादन के काम में जुटे हुए हैं।

मूलर—हां, भई हमारे वेदज्ञ आचार्य बर्नूफ तो अवेस्ता के भी मर्मज्ञ हैं।

रॉथ—तुम ठीक कह रहे हो। जानते हो बर्नूफ ने दारा प्रथम, द्वितीय आदि

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan

विश्व-व्याप्तं संस्कृत-तत्त्वम्

□
—डॉ० भवानीशङ्कर त्रिवेदा
□

व्याप्तं हि संस्कृतं तत्त्वमाद्यन्तमवलोक्यते।
यूरोपेरानभाषासु द्वीप-द्वीपान्तरेषु[1] च ॥

संज्ञा-सर्वनाम-क्रियापदानां संस्कृत-समानत्वम्

संस्कृतमनुरुद्ध्य प्रवृत्तायां भाषाविचारणायां भारतं केन्द्रीकृत्य भाषासमूहो भागद्वये आपतति —

(क) भारतात् पश्चिमोत्तरीयाः संस्कृतसजातीयाः फारसीग्रीकांग्लशर्मण्यसदृशा भारोपीया भाषाः

(ख) भारतस्य आग्नेय्या दक्षिणद्वीया वा सिंहलथाईदेश—इन्डोनेशियादिदेशानां तमिल-तेलगु-सिंहली,-थाई-इण्डोनेशियन-सदृशाः संस्कृतसम्बद्धा भाषाः।

एतदस्त्यनयोर्वैशिष्ट्यम्— फारस्यांग्लशर्मण्य-ग्रीकादि-संस्कृत-सजातीय(भारोपीय)-भाषाणां शब्दावल्या सह व्याकरणमपि संस्कृतमनुसरति । तत्र तमिलतेलगुकन्नड़-मलयालम्सिंहलीथाईइण्डोनेशियनादिसंस्कृतसम्बद्धभाषाणां शब्दावली तु संस्कृतबहुलास्ति परं तासां व्याकरणं संस्कृतं नानुसरति, अत एव ताः 'संस्कृतसजातीया' इति व्यपदेष्टुं न शक्यन्ते, अपि तु 'संस्कृतसम्बद्धा' इत्येव व्यपदिश्यन्ते।

संस्कृतसजातीयासु प्रत्नासु भाषासु ईरानदेशीय-पारसीकानां धर्मग्रन्थस्यावेस्ताया भाषा वैदिकभाषां सर्वथानुसरति। 'गाथा' इत्याख्यावेस्तामन्त्राणामनायासमेव संस्कृतच्छाया

१– पुराणेषु 'द्वीपशब्दः' भारताय, 'द्वीपान्तरशब्दश्च' स्याम (Thighland) जावा,-सुमात्रा-आदि इण्डोनेशिया-द्वीपसमूहाय सुप्रयुक्तः ।

wami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGang

विधातुं शक्यते । सा च संस्कृतच्छाया वेदमन्त्रवत् प्रतीयते । अथ च दारा दार[illegible] (धारयद् वसुः)प्रभृति-प्रत्नेरानीयसम्राजां प्रत्नपारस्यां लिखितानां शिलालेखानां भाषा लौकि[illegible]कसंस्कृतभाषां सर्वथानुहरति । एतेषां पारसीकशिलालेखानां संस्कृतच्छाया विहितचरा प्रकाशितचरा च ।

यूरोपीयप्रत्नभाषासु ग्रीकभाषाया व्याकरणं संस्कृतस्य च व्याकरणमेकमेवास्ति । ग्रीक्यां न केवलं धातूनां 'ति' 'अन्ति' मि, मः, इत्यादयः परस्मैपदप्रत्यया एव सन्ति, अपि तु 'ते' 'अन्ते' इत्यादयः आत्मनेपदप्रत्यया अपि तथैव प्रयुज्यन्ते । यथा हि--

सं०	ग्रीक०	सं०	ग्री०
शेते	केइते Keite	शेरते (शेन्ते)	केइन्ते Keinte

ग्रीक्यामपि संस्कृतवल्लिट्लकारोऽस्ति । तत्र च धातोर्द्वित्वमभ्यासलोपश्चत्वादिकञ्च जायते । दृश् भारो० Dorke दोर्क्वे, लिटि प्रथमपुरुषैकवचने संस्कृत-'ददर्श'-वद् ग्रीक्यामपि 'देदोर्के' Dedorke इति रूपं जायते । लङ्, लुङ् च संस्कृतवद् ग्रीक्यामपि अडागमो जायते । परं ग्रीक्यां जातेन महता ध्वनिविकरणेन तस्याः पदजातमनायासं परिचेतुमपि न शक्यते । यथा— सं० 'नर' शब्दस्य anthros इति एण्डोरे इति वा रूपं जायते । एवमेव सं० 'दधाति' ग्रीक्यां 'तिथेइति' titheiti इति जायते ।

एवमेव लेटिनभाषापि सर्वथा संस्कृतमनुहरति । तत्र भारोपीया ध्वनयोऽपि सुरक्षितास्सन्ति । अथ च प्रथमा, द्वितीया, चतुर्थीषष्ठ्योः, स्त्री० पुं० नपुंसकैकवचन-बहुवचन-विभक्तयोऽपि लेटिन्यां संस्कृते च समाना एव ।

ट्यूटानिक (जर्मन) वर्गस्योपलब्धायाः प्रत्नतमाया गॉथिकभाषायाः संस्कृतेन सह एतादृशं घनिष्ठं साम्यं वर्तते यत् पादरी 'उल्फिल्ला' महोदयेन चतुर्थशताब्द्यां विहितस्य बाइबिलस्य गॉथिकमनुवादं पठता भाषाविज्ञानपितामहेनानुभूतं यत् स गॉथिकरूपेण बाइबिलस्य संस्कृतानुवादमेव पठन्नासीदिति ।

अद्यतनीनायाः फारसीभाषाया अपि न केवलं पदजातमपि तु व्याकरणमपि संस्कृतमनुसरति । तत्र अस् धातोः —

अस्त	(अस्ति)	अन्द	(सन्ति)
इ	(असि)	एद	(स्थ)
एम्	(अस्मि)	अएम	(स्मः)

इति रूपाणि प्रचलितानि सन्ति ।

फारसीमहाकवेर्महात्मनः शेखसादीमहोदयस्य गुलिस्तानादेतत् पद्यमस्ति —

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi
mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अब्रऽगर बारद् आबे जिन्दगी ।
हरगिज शाखे वेद बर न खुरी[1] ॥

अस्य संस्कृतच्छाया एवं भवितुमर्हति-अभ्रं चेत् ब्रीयात्, (वर्षेद्वा) आपः जीवितस्य (जीवनस्य वा) । कदापि शाखाया वेतसः वरं (फलं) न स्वर्दिष्यसि । (फारस्यां सं स्वर्द्, 'खुर्दन्' इति जायते ।)

एवमेव 'शाहनामा' इत्याख्यस्य फारसी-महाकाव्यस्य समग्रापि भाषा मया (लेखकेन) संस्कृते परिवर्तितचराऽस्तीत्यप्यवगन्तव्यम् ।

यूरोपीयाद्यतनासु भाषासु लिथ्वान्या इत्याख्यस्य रूसस्यान्यतमपश्चिमप्रदेशस्य पूर्वीयूरोपस्य वा भाषा सर्वथा संस्कृतसमानैवेति सर्वे जानन्ति । रूस्यां बुल्गार्यां च प्रभूतं संस्कृततत्त्वं स्पष्टमवलोक्यते । आंग्लशर्मण्यादिट्यूटानिक्यो भाषा अपि प्रभूतं संस्कृततत्त्वं वहन्ति । तद् यथा—

सं० अस् अं० is धातोः शर्मण्यां एवं रूपाणि जायन्ते —

	ए० व०	ब० व०
प्र० पु०	इस्ट (ist)	ज़िन्ट (sind)
म० पु०	विस्ट (bist)	ज़ीट (seid) (स्थ)
उ० पु०	बिन (bin)	ज़िन्ट (sind)

अत्र 'विस्ट', 'बिन' इति रूपद्वयं भूधातोः । एवमेव सं० भू अं० be, सं० अद् अं० eat, सं० विद् अं० wit, witness, सं० दा, दानम् अं० donate, सं० धा अं० do, सं० वच् वाक्, अं० vocal, सं० वम्, अं० vomit, सं० स्तृ, स्तारः अं० star, सं० वै० स्पश् दर्शने, ते० spectare अं० spectacle, spy inspector; सं० गा(ङ्)गतौ, अं० go; सं० गम् अं० come; सं० पृच्छ, ज० fragen फ्रागेने; सं० पा, पिब, ग्री० पिनेरे, सं० ना, म्ना अभ्यासे अ० meaning; सं० स्मृ अं० memory, memorendum; सं० स्मि अं० smile; सं० सो अवखण्डने, स्यति, विदारयति अं० saw; सं० सीव अं० sew, sewing, सं० ज्ञा अं० know; सं० भृ अं० bear सं० बुध् अं० bid, सं० बध् अं bind, सं० भिद् अं० bite, सं० वल्ग अं० walk, सं० स्पर्ध् अं० sport, —

सदृशाः शतश आंग्लशर्मण्याश्च धातवः संस्कृते विद्यन्ते । अत एवोक्तम्—

१- फूलहिं फलहिं न बेंत, जदपि सुधा बरसहीं जलद' इत्यादिना महाकविगोस्वामितुलसीदास–महात्मना एष एव भावो व्यक्तः ।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGang

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

धातवः पाणिनिप्रोक्तास्तज्जाः शब्दाश्च भूरिशः ।
व्याप्ता यूरोपभाषासु देहेऽस्मिन् धातवो यथा[1] ॥

न केवलं धातव एवापि तु संज्ञा-सर्वनामसंख्यावाचकोपसर्गनिपातादयोऽपि समग्रासु यूरोपीयेरानीयभाषासु संस्कृतसमाना एव । यूरोपे प्रचलितानि संस्कृतस्य च सर्वनामानि समानान्येव विद्यन्ते[2] ।

सर्वनामस्वपि पुरुषवाचकसर्वनाम्नां वैशिष्ट्यं सुविदितमेव । तेष्वपि उत्तमपुरुषवाचकः 'अस्मत्' मध्यमपुरुषवाचको युष्मच्च प्रामुख्यं भजेते । अत एव समग्रासु संस्कृतसजातीयभाषासु सर्वनाम्नां समानत्वप्रतिपादनावसरे प्रथमम् उत्तममध्यमपुरुषयोर्ग्रहणं समुचितं भाति । संस्कृते उत्तमपुरुषवाचकास्मच्छब्दस्य प्रथमैकवचने 'अहम्' द्विवचने 'आवाम्' बहुवचने च 'वय'मिति रूपाणि सन्ति । एवमेव युष्मच्छब्दस्य 'त्वम्' 'युवाम्' 'यूय'मिति रूपाणि निष्पद्यन्ते । परं द्वितीया-चतुर्थी-षष्ठीति-विभक्तित्रये 'मा', 'नौ', 'नः', 'त्वा', 'वाम्,' 'व' इति वैकल्पिकानि अनुलग्नानि लघु (Inclitic) रूपाण्यपि संस्कृते सुप्रयुक्तानि सन्ति । ग्रीकलेटिनजर्मनांग्लरूसीफारस्यादिसंस्कृतेतरासु भारोपीयभाषासु क्वचिद् लघुरूपाणि, क्वचिच्च पूर्णरूपाणि एवावलोक्यन्ते । परं संस्कृतस्यैतद्वैशिष्ट्यं यदत्रोभयविधान्यपि रूपाणि सुरक्षितानि सन्ति ।

अपि च, नानाभारोपीयासु भाषासु अस्मद्युष्मदोरेतादृशान्यपि रूपाणि प्रचलितानि सन्ति, येषां मूलं लौकिकसंस्कृतस्य प्रचलिते रूपजाते क्वचिदपि न दृश्यते, परं ते सर्वे वैदिक 'अस्मे' 'युष्मे' इति अस्मद्युष्मद्वाचका न्निपातादुद्भूताः सन्ति ।

अपि च, संस्कृतस्यैतदपि वैशिष्ट्यं यदस्यामेव वाचि सर्वासु विभक्तिषु सर्वेषु वचनेषु च रूपाणि विद्यन्ते । अन्यासु भाषासु च कानिचिदेव रूपाणि अवशिष्टानि । तद्यथा—

ग्रीक्याम् —अस्मच्छब्दस्य ग्रीक्यां प्रथमैकवचने ईगो (Ego), द्वितीयैकवचने ईमे (Eeme) मा चतुर्थ्यां ईमोइ (Eemoi), मोइ (Moi) (सं० मयि सप्तमी-एकवचनम्) षष्ठ्यां ईमू (Eemou) मू (मे)रूपाणि विद्यन्ते । बहुवचने च प्रथमायां हेमेइस् (Hamais) द्वितीयायां हेमास् (Hemas) चतुर्थ्यां हेमिन् (Hemin) षष्ठ्यां च हेमोन् (Hemon) इति रूपाणि जायन्ते ।

बहुवचनस्यैतानि सर्वाणि रूपाणि वै. 'अस्मे' इत्यस्मादुद्भूतानि इति तु सुस्पष्टमेव ।

१– द्रष्टव्यं-मदीये 'भारूप-भाषाशास्त्र'मित्याख्ये ग्रन्थे ।
२– अवलोक्यतां मदीयो लेखः-ये संस्कृतसजातीयभारोपीय भाषाएँ और इनके सर्वनामों का विकास, "अन्वेषणा" [पृ० २०६]

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Sa...

सं. द्वि' वचन विभक्तिः औ- (आ+उ अपि) द्विवचनस्य परिचायकं उकारं धत्ते।

III सं. युगम् युग्मम्, युगलम्, अं. yoke, हि, जुग, जुगल, जुआ, जोड़ा (युक्तः)

iv सं. यमः यमलः अं. gemini मिथुनम्, युग्मम्, हि. जोड़ा, ।

v ले. secundus अ. second सं. सक्तः इत्यस्यैव प्रतिरूपं विद्यते

सं. त्रि, पुं. ब. व. त्रयः। अवे० थ्रय, थ्रायो, पु. फा. से ग्री. treis त्रेइस ले. tres आयर tri त्री, गॉ. threis थ्रेइस, अं. three जं. dri लिथ. trys त्र्यस स्लाव. trij-e, यास्केन 'तीर्णतमा संख्या भवति'[1] इत्युक्तवता स्पष्टमेव प्रतिपादितं यत् तॄ इति धातुप्रकृत्या सह इ—प्रत्यययोगेन तॄ+इ = त्रि इति जायते। पाश्चात्यैरप्येषा व्युत्पत्तिः स्वीकृता। त्रिशब्दस्य स्त्रियां सृप्रत्ययान्तः तिसृ कर्ता ब. व, तिस्रः इति रूपं जायते। एष 'तिसृ' शब्दः संस्कृतवत् अवेस्तायां केल्टिक्यां च अपि च सुरक्षितः। तद् यथा—

सं. तिस्रः, अवे. तिशरो, आयर teoir, सिमरिक, teir,

सं 'स्वसृ'शब्देऽपि एषः स्त्रीवाचकः 'सृ'प्रत्ययो दृश्यते। एष 'तिसृ'शब्दश्च सं. 'त्रि-स्र' शब्दात् विषमीकरणेन जातः इत्यनुमीयते। तद् यथा—तिस्रः<त्रि-स्रः।

स्त्रीवाचकः सं. चतसृ कर्ता ब. व. चतस्रः अपि अनेनैव व्युत्पादितः।

हि० तीन सं. त्रीणि, नपुं. क. ब. व. स तः मागतः, लहन्दा आदि पश्चिमोत्तरीय-भारतीयभाषासु तु' त्रय इति पुं. रूपमद्यापि प्रचलितं वर्तते।

क्रमवाचकः तृतीयः, अवे. थ्रि-त्य, पु. फा. सि-तिय, ग्री. tri-to-s त्रितोस, ले. trit-avo-s, त्रितवोस सिमरिक trydyda, लिथ, treczia-s स्लाव tretiji त्रेतियी, गॉ. thridja, ज. dritto, अं. third<सं तृतीयः (आंग्ल्यां जार्मण्यां च अन्त्यः यः लुप्तः स च गौथिक्यां सुरक्षितः।)

४ सं चत्वारः प्र. ब. व., अवे. चत्वारो, फा. चहार<Qetvor-es>ले० quattour,>ग्री. tetore, बोएटिक pettares गॉ. fidvor>fior, पु. सैक. fiwar, ए सैक. feower अं. four, लिथ. keturi, स्लाव०cetyr चेत्यरे। अत्र भारोपीयः ककारः शतं भाषासु वकारे ग्रीक्यां तकारे, गाथिकजर्मनांग्लादि- ट्यूटानिक-वर्गे

१- निरुक्त ३-२

...Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwa[...] Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

पकारो भूत्वा फकारे परिणतः।

हि. चार, फा चहारवत् अयं ग्रीक-पँतेरेस-शब्दात् अं. four इत्यत्रापि मध्यग तकारः लुप्तः। स च गाँथिक fidvor फिड्वोर इत्यत्र सुरक्षितः। 'चत्वारः' चलिततमा संख्या[1] इति यास्केन प्रतिपादितम्।

क्रमवाचकः I सं. चतुर्थः ग्री. tetar-to-s

बोएटिक petra-to-s ले. quartvs

पु. उ. ज. fior-do, अं fourth, quarter

II सं. तुरीयः, तुर्यः अवे तूइर्यं ktur

५. सं. पञ्च penqe>ग्री. pent ले. quinque ज. गॉ. fimf अं. five, लिथ penki, स्लाव. penti संस्कृतादि शतमूवर्गे अन्तिमः ककारः चकारे ग्रीक्यां च तकारे परिणतः, एवमेव लेटिन्यां आद्यः पकारः ककारे परिणतः।

गॉ. fimf ज. fimf,-गॉथिकजर्मण्ययो fimf, fimf, funf इत्यत्र मध्यगो ऽनुनासिकः सुरक्षितः स च अं. fiveइत्यत्र लुप्तः, अपि च सं. 'वृकात्' 'वृक्' अं. wolf वत् अत्रापि अन्त्यः भारोपीयः ककारः फकारे परिणतः। स च आंग्ल्यां व भूत्वा वकारो जातः।

क्रमवाचकः

सं. पञ्चमः पञ्चथः वेदे, अवे. पुख्थ, फा. पंजम (हि पांचवां) पञ्चक्तञहे, म पंचमांशः, ग्री. pemp-to-s पैम्पतोस, ले. quintu-s penqto सिम. pimphet, गॉ. fimfta जं. funfte, अं. fifth, लिथ. pentka-s पेंक्तस, स्लाव pentu पेंतु।

विशेषः — चतुर्थ, पञ्चथ, षष्ठ इत्यत्र क्रमवाचकः त-थ प्रत्ययः एव स्वाभाविकः लौकिक संस्कृतस्य ,पञ्चम' स्य म प्रत्ययस्तु 'सप्तम'स्य अनुकरणवशादागतः इति ज्ञायते।

भाववाचकः— सं. पंक्तिः (पञ्चानां समूहः) इत्यत्र भारोपीयः ककारः सुरक्षितः। यतो हि स्वरयुक्तककार एव चकारे परिणमति। अं. first मुष्टिः फा. मुश्त हि. मुट्ठी, मुक्का हि. पञ्जा (पञ्चांगुली युक्तःहस्तः,) अं. finger वस्तुतः पञ्चांगुलयः, अपि एतस्मादेव सं. पंक्ति, अं. finger उभयत्र प्रकृतिः सं पंक penq पेंक्व समाना एव प्रत्ययौ च एकत्र 'तिः' अन्यत्र च अर er इति भेदेन उभयोरपि शब्दयोर्मूलार्थस्तु

१– निरुक्त ३-२

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

'पञ्चानां समूह' इत्येवास्ति ।

लिथवान्यां स्लावोनिक्यां च penki, penti, सदृशाः गणनावाचकाः शब्दाः सं. पंक्ति इत्येतस्माद् भाववाचकशब्दादेव सम्बद्धाः।

पञ्चशब्दस्य व्युत्पत्तिः प्रदर्शयता यास्केन उक्तं 'पञ्च पृक्ता संख्या'[1] । वस्तुतः पचि समवायार्थकः पञ्चशब्दो निष्पन्नः। समूहार्थकः 'पंक्ति'शब्दः इत्येतस्य विनिगमकम् ।

६. सं. षट् षष्, यथा षष्ठः < seks, sveks, अवे. खशव्श xshvash, फा० शश, ग्री. fex, वैक्स hex हेक्स < sveks, ले. sex, आयर. se गॉ. saish, ज. sedhs अ. six, हि. छह, लिथ, szvrzi, स्लाव shesti

क्रमवाचकः— सं. षष्ठः, ग्री. shekto-s पु. उ. ज. sehto, अं. sixth, ले. sextu-s फा. शशम् हि. छठा, लिथ. szészta-s गॉ. saihsta.

षट् 'पुनः सहतेः'[2] इत्युक्तवता यास्केन सह मर्षणे इत्यस्माद् षट्शब्दस्योत्पत्तिः प्रदर्शिता ।

सं. सप्त, सप्तम, मूलतः मकारान्तः सप्तमशब्दो नव दश इत्यस्य अनुकरणवशात् 'सप्त' इति जातः । अवे. हप्त, फा. हफ्त, पं. सत हि सात, ग्रीक hepta, अल्बा sta-te ले. septem गॉ. sıbun, पु. उ. ज. sibin, लिथ. septyn-i स्लाव. sedmi.

क्रमवाचकः सं. सप्तमः ग्री. hebdomo-s स्लाव. sedmu, ले. septimu-s, पु. उ. ज sibunto फा. हफ्तन् अं. seventh.

यास्केन 'सप्त सृप्ता'[3] इति व्युपत्तिः प्रदर्शिता ।

संख्या—

विशेषः I. septembar सेप्टेम्बर इति आंग्लशब्दो वस्तुतः लेटिन मासनाम्नि सप्तम् इति संख्यावाचकः पूर्वपदः भृ धातोः निष्पन्नः भर् च उत्तरपदे स्थितः एव सप्तमं (मासं) बिभर्ति इति सेप्तेम्बरः इति व्युत्पत्तिर्जायते । एवमेव अक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर इति विशिष्टानां मासत्रयाणामपि संस्कृतमूलका व्युत्पत्तिः लेटिनमहाकोशे[4] एव प्रदत्ता ।

II– यथा हि. सात इत्यत्र मध्यगः पकारः लुप्तः तथैव जार्मन सैबुन इत्यस्मात् मध्यगस्तकारः लुप्तः ।

सं. अष्टा, अष्टौ < okto-, okatov, अवे. अश्त, फा. हश्त, आर्ये. ut. ग्री' okto, ले. octo, पु. आयर ocht लिथ. asztu-n-i, स्लाव. osmi, गॉ. ahtau, अं., eight हि. आठ ।

१- निरुक्त ३-२ २-तदेव ४-४ ३- निरुक्त-४-४ ४- लेटिन डिक्शनरी

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Va[...]na Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

क्रमवाचकः— सं. अष्टमः, अवे. अश्तम, फा. हश्शम ग्री. agdoo-s, ले. octav-o-s ओक्तावोस हि. आठवां वत् लेटिन्यां octa-vos इति रूपेऽपि मकारस्थाने व-प्रत्ययः दृश्यते । आंग्ल eighth इत्यत्र च चतुर्थवत् क्रमवाचकः थ-प्रत्ययः अवलोक्यते ।

विशेषः सं. अष्टा (वेद) अष्टौ इति रूपाभ्याम् प्रतीयते यदस्यार्थः चतुर्था द्विगुणिता संख्या, हि. दो चौक्के इत्यासीत्. एते रूपे द्विवचनान्ते स्तः । अष्टसु इत्यस्मादनुकरणवशाज्जातम् । यास्केन अष्टशब्दस्य अष्टावश्नोते[1] इति व्युत्पत्तिः प्रदर्शिता । सप्तसंख्यातोपि एषा संख्या अग्रे गतास्ति अत एव 'अष्टौ' इत्युच्यते ।

९ सं. नव, अवे. नव, फा. नौह, हि. नौ, ग्री. ena, आर्मे. inn, ले. novem, आयर. noin, गॉ. niun अं. nine लिथ. devyn-i, स्लाव. denenti देनेन्ति[?]navyni, nouenti, अत्र आद्यः दकारः दश संख्यातः आगतः । अन्त्यप्रत्ययश्च भाववाचकः एव ।

क्रमवाचकः— सं. नवम्, नवे, नओम, पु. फा. नवम्, ग्री. eina-to-s, ले non-u-s लिथ. devin-ta-s स्लाव. deven-tu, आयर. no-mad, गॉ. niun-da तु. ज. niunto, अं, ninth, फा, नोहुय, हि. नवां नव एषा संख्या, अभिनवास्ति ।

१० सं. दश, अवे. दस, फा. दह dekm, ग्री. deka, ले. decem डेसेम्, आर्ये tesn आयर. deich गॉ. taihun, जं. zehan लिथ deszim-t-, स्लाव. dese-n-t देजेन्त, सं. दशत् ।

क्रमवाचकः सं. दशमः, अवे. दसेम, फा दहय ग्री. dıkato-s डेक्टोस, ले. decimu-s आयर. dechm-ad, स्लाव, desentu गॉ. taihunda, अं. tenth ।

'दश' दस्ता संख्या भवति इति निर्वचनं कृतवता यास्केन प्रदर्शितं यत् दसु उपक्षये इत्यस्यात् धातोः निष्पन्ना 'दश' इति संख्या अन्तिमा उपक्षीणा वा संख्या अस्ति[3] इति । यतो हि अग्रिमा सर्वास्संख्या अनया सह एव हि त्रि-इत्यादिसंख्यानां योगेनैव निष्पद्यन्ते ।

एवमेव विंशतिः शतम्, सहस्रम् सदृशाः शब्दा अपि समग्रासु भरोपीयभाषासु समाना एव सन्ति । सं. 'स-हस्र'शब्दो भारोपीय 'घस्लो'–शब्दाज्जातः । तस्मादेव ग्रीक-'खिलिओ' इति जातः । तद्यथा—

सं. स-हस्र भारो घस्रो ग्रीक-खिलिओ । संस्कृत'सहस्र'शब्दे 'स' एकार्थको निपातोऽस्ति सं. सकृत् (एकधा कृतं कृतं वा) सदृशेषु शब्देष्वपि एकार्थकः 'स' निपातः सुरक्षितः । अथ च भारोपस्य घेस्लो शब्दान्निष्पन्नाद् ग्रीक'खिलिओ'शब्दादेव अं. kilo हिन्द्यामपि ज्ञात एवाधुना । फा. हज़् हिन्दी हज़ार शब्दे च एकार्थकः सकारो न विद्यते ।

संस्कृतस्य दिदृक्षन्ति स्वरूपं विश्वव्यापृतम् ।
एतद्विषयकं ग्रन्थमाद्यन्तं ते पठन्तु मे ॥

१- निरुक्त ३-२ २- निरुक्त ३-२ ३- निरुक्त ३-२

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

एवमेव मध्यमपुरुषस्य प्रथमैकवचने सु (Su) (तु), द्वितीयायां से (Se) (ते), चतुर्थ्यां सोइ (Soi), (त्वयि), षष्ठ्यां सोउ (Sou) (तव, ते) इति रूपाणि सन्ति। बहुवचने च प्रथमायां हुमेइस् Humais, द्वितीयायां हुमास् Humas चतुर्थ्यां हुमिन् Humin षष्ठ्यां च हुमोन् Humon इति रूपाणि जायन्ते।

अत्र हि एकवचने भारोपोयस्य संस्कृतस्य च 'त्व' इत्यस्य तकारः सकारे परिणतः। ग्रीकबहुवचनरूपाणि च वै० 'युष्मे' इत्यस्मान्निष्पन्नानि।

अथ च, षष्ठीबहुवचनस्य आन् इति प्रत्यय उभयत्र सुरक्षितो वर्तते।

लेटिन्याम् —

लेटिन्यामपि अस्मद्युष्मदोः रूपाणि संस्कृतसमानान्येव सन्ति। तद्यथा —

एकवचनम्

	अस्मद्	युष्मद्
प्रथमा (कर्ता)	ईगो Eego (अहम्)	तु Tu (तु त्वम्)
द्वितीया (कर्म)	मे Me (मा)	ते Te (त्वा)
सम्प्रदानम्	मिहि Mihi (मह्यम्)	तिबि Tibi (तुभ्यम्)
सम्बन्धः	मेई Mei (मे)	तुइ Tui (ते)

बहुवचनम्

	अस्मद्	युष्मद्
प्रथमा	नोस् Nos (नः)	वोस् Vos (वः)
द्वितीया	" " "	" " "
सम्प्रदानम्	नोबिस् Nobis (नोभ्यः)	वोबिस् Vobis (वोभ्यः)
सम्बन्धः	नोस्त्रम् Nostrum (नः)	वोस्त्रम् Vostrum (वः)

अत्रापि वयम्, यूयम् इत्येताभ्यां सम्बद्धानि रूपाणि विलुप्तानि केवलं नस्, वस् इति अनुलग्नानि लघुरूपाणि एव प्रयुज्यन्ते।

अथ च, नोबिस् Nobis (नोभ्यः) सदृशेषु वस्नसोः परतः 'भ्य' इति विभक्तिः प्रयुज्यते।

जार्मण्यां—

ट्यूटानिक(जर्मन)वर्गस्य गॉथिक- जर्मनांग्लभाषास्वपि अस्मद्युष्मदोः एतादृशान्येव रूपाणि जायन्ते —

...i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

विभक्ति	एकवचनम् (भारो० सं० गॉथिक जर्मन अंग्रेजी)	बहुवचनम् (सं. गॉथिक जर्मन अंग्रेजी)
प्रथमा (कर्ता) egho,	अहम्, इक Ik, इस Ich आई I त्वम् थु thu, डु du, दाउ thou,	वयम्, वेइस Veis, विर wir, वी we यूयम्, युस yus, इर Ihr, यू you.
द्वितीया (कर्म)	मा, मिक mik, मिख mich, मी me, त्वा, थुक thuk, डिख् dich दी thee.	नः, अन्सिस unsis, उन्स uns us. लुप्तः·········
सम्बन्ध	मे, मेइना meina, मिर mir, my, mim ते डिर dir, दाइन thine	नस्, अन्जर unsara, अन्जेर unser, अवर our. यूष्मे, इज्वेरा izvara, यूस euch, योर your.

एवमेव तद् शब्दः लेटिन्यां इस-ते इति जायते। इदं शब्दश्च पुंसि इस Is स्त्रियां एस Es इति रूपमापद्यते। नपुंसके च इद् इत्येवास्ति। किम् शब्दस्य लेटिन्यां que, quae, quad क्वेद इति रूपाणि जायन्ते। अस्यार्थश्च यः, यत् इत्यस्ति।

लेटिनस्य संस्कृतस्य विभक्ति-प्रत्यया अपि संस्कृतसदृशा एव सन्ति। तद्यथा —

	एकवचनम् [संस्कृतम्]	लेटिन०	बहुवचनम् [संस्कृतम्]	लेटिन०	
प्रथमा	विभिन्नप्रत्ययाः		अस्	es	एस्
द्वितीया	अम्	em एम सं.	अस्	es	एस्
चतुर्थी	ए	i इ (सप्तमीविभक्तौ)	एभ्यः	ibus	इबुस्
पंचमी	अस्	e ए (चतुर्थीविभक्तौ)	एभ्यः	ibus	इबुस्
षष्ठी	अस्	is इस्	आम्	um	उम्

एवं स्पष्टं प्रतीयते यद् यूरोपीयासु प्रत्नासु नवासु च भाषासु पारसीकावेस्त-योश्च संज्ञासर्वनामक्रियापदानि सर्वथा संस्कृतसमानान्येव सन्ति[1]।

---

१ विशेषेणैतद्विषयेऽवलोकनीयम् — मदीये "भारत-भाषाशास्त्रे"।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsth... ...hi

संख्यावाचकशब्दानां संस्कृतसमानत्वम्

सर्वासु सजातीयभाषासु संख्यावाचकाः शब्दाः संस्कृतसदृशा एव विद्यन्ते। अपि च 'एकद्वित्रि-पञ्चदश-शतम्' इत्यादि आपाततः अव्युत्पन्नवत्-प्रतीयमानानां संख्यावाचकशब्दानां व्युत्पत्तयोऽपि आचार्ययास्केन प्रदर्शिताः। ता एवानुसरद्भिर्वाकरनेगलादिभिः शार्मण्यैः आचार्यैः एषां शब्दानां व्युत्पत्तयः तुलनात्मक-पद्धत्या वैज्ञानिकरूपेण निर्धारिताः। यथा —

(१.) क एकवाचकः सं० एकः, अवे० अएं-व, ओइव, पु. फा० अइव, लेटिन तथा ग्रीक ओइनोस oi-no-s, aces, ले. oinos, unu-s, oeno-s पु. आयर oe-n, गॉ. ainas, लिथ. o-e na-s पु. उ. ज. ein, वल्ग. i-nu, अं. one, फा. यक इत्यादि सर्वेषां शब्दानां एतदर्थिका प्रकृतिः ए oe, oi, ae,, ai एव विद्यते।

प्रत्ययास्तु 'न' 'व' 'क' इति त्रयः। अनेन प्रतीयते यत् यूरोपीयभाषासु सर्वत्र न प्रत्ययः विद्यते। अवेस्तायां पु० पारस्यां च व तथा संस्कृते फारस्यां च क प्रत्ययः।[1]

एतदर्थकाः एषा ए (oe, ae.) प्रकृतिः संस्कृतस्य 'एतद्' शब्दे अथ च 'एनम्' सदृशेषु अनुलग्नेषु प्रत्यक्षतयाऽवलोक्यते।

अनेन सुस्पष्टं ज्ञायते यत् सं एकः अथ च अं. one सदृशा सर्वथा भिन्नाः प्रतीयमाना अपि शब्दा मूलतः एकस्या एव प्रकृतेः प्रत्ययभेदेन निष्पन्नानि नानारूपाणि सन्ति।

(१. ख.) सं. सम् = sem।

सहार्थकः सम्, (स) निपातोऽपि नानाभाषासु एकार्थे प्रयुज्यते। यथा - सं. स-कृत् (एकधा कृत्तं, छिन्नम्) स-हस्रसदृशेषु शब्देषु एकार्थकः स निपातः प्रत्यक्षतो दृश्यते। एवमेव ग्रीक hen < hem, monux मोनुक्ज (एकनखः) ले. अ. simple, simplex, sin-gule (एकदा, एकवारम्) अं. single, गॉ० simdle

क्रमवाचकः

फा. यकम् (प्रथमः) एज. गुज. एकम् (प्रतिपत्तिथिः) इत्यपवादं विहाय संस्कृतसजातीयभाषासु कुत्रापि एकशब्दानिष्पन्नः 'एकमः' इति क्रमवाचको शब्दो नावलोक्यते, अस्य स्थाने सर्वत्र सं. प्रथमः (पूर्वः) अं. first, ग्री. protos, सदृशाः शब्दा विद्यन्ते। एतेषां सर्वेषां शब्दानां प्रकृतिः पृ, प्र पेर per विद्यते। अनया व प्रत्यययोगेन सं. पूर्वः,

---

१- एतद् शब्दस्य निर्धारणार्थक 'एकारोऽपि यास्केन आ+इ इति रूपेण व्युत्पादयतोक्तं— 'एकः इता (आ-इता) संख्या' — निरुक्त ३-२, एषा संख्या सर्वासु संख्यासुसमन्वितास्ति इति।

...ami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Digitized by Sarayu Trust Foundation Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

पूर्वीयः, स्लाव० pri-ou अवे. पोउरविय, ग्री. प्रोतोस pro-to-s<prof-atos प्रोवतोस् (पूर्ववर्ती) शब्दाः निष्पाद्यन्ते। गॉ. frauj (अधिपतिः), उ. ज. fro, (अधिपतिः।)ज. frau (स्वामिनी महिला lady)<pro-vo सदृशाः शब्दा अपि अनेनैव सम्बद्धाः। गा. fruma ओ. सैक. forma, ले. primu-s अं. primo, prime ग्री. promo-s (अग्रणी, नेता, राजा, राजकुमारः, राजकुमारी) शब्दाः पृ, प्र इति प्रकृत्या सम्प्रसारणितेन गुणितेन वा रूपेण सह मप्रत्यययोगेन सं. प्रथम, अवे. फ्रतेम, पु. फा. फ्रतम सदृशाः शब्दाः तमप्रत्यययोगेन पु. उ. ज. fuirst, अं. first सदृशाः शब्दाश्च इष्टप्रत्यययोगेन निष्पाद्यन्ते। आंग्ल्यां एकार्थकः a निपातोऽपि वर्तते।

२. सं. द्वा द्वौ (पुं.) द्वे (स्त्री-नपुं०) अवे० द्व दुइएं (स्त्री) ले; ग्रीक duo, दुओ, लिथ. du दु, ले. duae स्त्री. आयर dau, do दौ, गॉ. tvai त्वइ, tva त्व (नपुं) tvos (स्त्री.), उ. ज. zwene, अं. two, ले. du-plu-s du-plex, अं. duplicate, double, doubt, पु. उ. ज. zweho,, सदृशानां शब्दानां प्रकृतिः du दु एव विद्यते।

सं. द्विकः (द्वि सहितः consisting of two), अं. twig (शाख) ए. सैक. twi-z.

I सं. द्वि dvi स. द्विपद् ग्री. dipous, ले. di-pes, ए. सैक. twi- fete, उ. ज. zwi- valt, अं. twilight twin (युग्म) सदृशेषु शब्देषु समस्तेषु ताद्धितेषु शब्देषु द्वा द्वं, द्वौ इत्यस्य स्थाने 'द्वि' शब्दो दृश्यते। तत्र आकारस्थाने इकारस्तु त्रि इत्यस्य अनुकरणवशाद आगतः इत्यनुमीयते।[1]

यास्केन द्वौ द्रुततरा संख्या[2] इत्युक्तं परं आधुनिकाः दूरङ्गता संख्या इति व्युत्पादयन्ति'

क्रमवाचकः सं द्वितीयः, अवे. बित्य, गाथा. दबित्य पु. फा. दुबीतिय, ग्री. deuteros देउतेरोस, दूरंगतः एषः ग्रीक देउओमइ deuomai, सं. दूर इत्यनेन सम्बद्धः अनेनापि यास्कप्रतिपादिता 'दूरंगता' इति व्युत्पत्तिः समर्थ्यते।

II सं. उभ. ले. emphos ? गॉ. an-thār पु. उ. ज. andar लिथ. antra-s स्लाव. vuto-u. सं. उभा, उभौ इत्यत्र 'उ' उभयार्थका प्रकृतिः भश्च प्रत्ययः। सदृशेषु शब्देषु उ-प्रकृतिरेव अन्, अम् रूपं भजते।

१- अं. two इत्यस्योच्चारणं 'टू' इति क्रियते परं वर्तनीतः 'द्वा' इत्यस्य प्रतिरूपा एव विद्यते।

२- निरुक्त० ३-२

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

(घ) षष्ठी बहुवचन में आम् प्रत्यय भी उभयत्र समान है।

(ङ) शेष विभक्तियों में संस्कृत के मूल प्रत्ययों के स्थान पर दूसरे प्रत्यय आ बैठे हैं। जैसे कि पुंलिंग कर्म बहुवचन में अस् के स्थान पर संस्कृत में आन् आ गया।

यहाँ ध्यान में रखने की एक और बात यह भी है कि संस्कृत में 'क, प्रकृतिक शब्द का अर्थ प्रश्नवाचक कौन क्या है, जब कि लेटिन में यह संस्कृत क यत्—जो जिसके अर्थ में चलता है। अंग्रेजी who हू इसी लेटिन qui से विकसित है। इसी प्रकार संस्कृत सर्व लेटिन solus तथा संस्कृत अन्य लेटिन Alus और संस्कृत स्व लेटिन sese (पु० ए० व०) तथा suus (ष० ए० व०) एवं संस्कृत स प्रकृतिक (सः, सा) लेटिन में Hic (सः) और Hace (सा) की रूपावली भी संस्कृत के समान ही चलती है।

अं० इट् it (यह) सं० और ले० इद् से तथा देट् that (वह) सं० तद् से के ही प्रतिरूप हैं।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि धातुओं, उनके क्रिया रूपों संख्यावाचक शब्दों तथा संज्ञाओं की ही भाँति सर्वनाम भी सभी भारोपीय भाषाओं में लगभग एक से ही हैं। तथा यह भी कि उन सब में व्याप्त एक और अखण्ड तत्त्व की पहचान एक मात्र संस्कृत के सहारे ही की जा सकी है, और यही है संस्कृत का सर्वातिशायी वैशिष्ट्य, और इसी आधार पर संस्कृत का मातृकल्पा अग्रजा रूप स्थिर किया गया है और इसी से यह कथन भी सर्वथा सत्य सिद्ध हो जाता है कि—

आंग्लप्रभृतिभाषाणां संस्कृतज्ञानमन्तरा ।
असम्भवं हि व्याख्यानं निश्चप्रचमिदं मतम् ॥

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitized by ...

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

wami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

उर्ध्वचेता प्रतिष्ठान

२०/१४, शक्तिनगर, दिल्ली-११०००७

भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन व इतिहास तथा उससे सम्बद्ध विविध भाषायी साहित्य/वाङ्मय के शोध, अध्ययन एवं प्रकाशन की विविध प्रवृत्तियों में संलग्न अग्रणी संस्थान ।

क्रमांक.............. दिनांक 15-1-81.

परम श्रद्धेय
आचार्य अमृत वाग्भव

सादर प्रणाम।

हम 22.1.81 को 'तंत्र- विचार एवं प्रयोग' संगोष्ठी का आयोजन कान्सटीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली में कर रहे हैं। यह आयोजन हम आपके पावन सान्निध्य में करना चाहते हैं। अपना आशीर्वाद देकर कृतार्थ करें।

सादर,

भवदीय
अशोक कुमार जैन
सचिव

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ऊर्ध्वचेता प्रतिष्ठान - 20/14, शक्तिनगर, दिल्ली-110007

के तत्वावधान में आयोजित

गोविन्द शास्त्री कृत 'तंत्र-दर्शन' विमोचन समारोह

एवं

"तंत्र-विचार और साधना" संगोष्ठी उद्घाटन समारोह में आप

रविवार, 25 जनवरी 1981 को पूर्वान्ह 11-30 बजे

उपाध्यक्ष कक्ष, विठ्ठल भाई पटेल भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली में सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य अतिथि - **श्री केदार पांडे, रेल मंत्री, भारत सरकार**

संयोजक मंडल

श्री रत्नयधारी जैन, आचार्य सुमन्तभद्र
डॉ॰ दामोदर, शास्त्री डॉ॰ रूददेव त्रिपाठी
श्री आर॰ के॰ गर्ग, श्री गुर प्रकाश शर्मा

स्वागत समिति

श्री जी॰ एस॰ मायावाला, श्री भवानी शंकर
श्री प्रवेश साहनी, श्री जगदीश प्रसाद गर्ग
श्री सुशील गांधी, श्री प्रदीप बक्शी

सम्पर्क सूत्र :—अशोक कुमार जैन—दूरभाष : 713778, 514050

कृपया समय से 15 मिनट पूर्व पधार कर समारोह की शोभा बढ़ायें।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

કુછ હરે રામકા - સાહિત્ય
ભેજ દિયા ગયા હૈ।
દિ. ૨૯-૨-૬૮ તક ૧૨ કોટી
જપ સંખ્યા (સવા [illegible])
પૂર્ણ હો ચુકી હૈ। શેષ સંખ્યાઓં
[illegible] પૂર્ણ હોગી। આપ
વિસ્તાર ઔર પ્રચાર અવશ્ય
કરેંગે। પ્રીતિ [illegible] નામ.
[illegible] સત્સંગ પ્રેમ. [illegible]

V/9/3

Mrs. V[illegible] a[illegible]hi
33A, H[illegible]ndusta
Housing Facto
Quarters.
Jang Pura
New Delhi -14

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

वा. ग. वडनेरे,
ज्योतिष-विशारद,

४८६ अ, शुक्रवार पेठ,
शाहुपुरा, पुणें २.
(महाराष्ट्र)

क्रमांक V । ? । 3 दिनांक २७।३।१९६८

पू० भाईजी

सादर प्रणाम।

आपका दिनांक २१.३.६८ का पत्र मिला है। आप और देहली विद्यापीठ सज्जन लोग जो संख्या भेजते हैं वह मुझे मिलता है।

— पालनपूर सौ. कु. राजेश्वरी [illegible] से [illegible] नयी संख्या मिलती है। [illegible]

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

ॐ= पर ब्रह्म। भूर्भुवः स्वः= तीनों लोक ॐकाररूप पर ब्रह्मात्मक हैं। तत्= वह परब्रह्म जो सब की आत्मा है, अतः जिसे सभी स्वानुभव से ही जानते हैं (क्योंकि प्रत्येक जीव अपने आपको जानता ही है) सवितुः = समस्त ब्रह्मांड के उत्पादक। वरेण्यं= निरतिशय आनन्द रूप होने के कारण सब के द्वारा वरण करने के योग्य। भर्गः= अविद्या आदि दोषों को जला डालने वाले तेजो रूप। देवस्य = दान शील, द्योतन शील परमेश्वर का। धीमहि= हम ध्यान करते हैं। धियः=बुद्धियां को। यो=जो नः=हमारी। प्रचोदयात्=प्रेरणा करे, सन्मार्ग की ओर अग्रसर करे।

भूः भुवः और स्वः ये तीनों लोक ॐकाररूप परब्रह्म ही हैं। हम उस परब्रह्म का ध्यान कर रहे हैं, जो सभी की आत्मा होता हुआ सभी के द्वारा आत्म अनुभव-प्रमाण से जाना हुआ है, जो इस अखिल ब्रह्माण्ड रूपी प्रपंच को सृष्टि आदि कृत्यों द्वारा विकास में लाता है, जो आनन्दमय होने के कारण सभी के द्वारा वरण करने योग्य है, जो अविद्या को जला देने वाला ज्ञानमय तेज है तथा जिसे हम प्रार्थना कर रहे हैं कि वह हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रवृत्त करे।

—×:❀:×—

The three worlds consisting of Earth, Atmosphere and sky are the forms of Absolute God called OM. We are meditating on that Absolute God who, being the self of all, is known to all through their 'self experiance; who, through the activities of Creation, preservation etc. Makes this whole universe evolve; who being bliss and bliss alone, is worthy to be liked by all. Who is the fire of knowledge which burns all ignorance and to whom we pray that he may guide and lead our intellects on the right path.

नोटः— १. हम इस मंत्र के अनुवादार्थ प्रो० बलजिन्नाथ जी पण्डित के अत्यन्त आभारी हैं।
२. निःशुल्क प्राप्तिस्थानः-

चमन लाल सप्रू द्वारा कश्मीर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, श्रीनगर

Bansi Art Press Srinagar.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

—※—

ॐ= पर ब्रह्म। भूर्भुवः स्वः= तीनों लोक ॐकाररूप पर ब्रह्मात्मक हैं। तत्= वह परब्रह्म जो सब की आत्मा है, अतः जिसे सभी स्वानुभव से ही जानते हैं (क्योंकि प्रत्येक जीव अपने आपको जानता ही है) सवितुः = समस्त ब्रह्मॉड के उत्पादक। वरेण्यं= निरतिशय आनन्द रूप होने के कारण सब के द्वारा वरण करने के योग्य। भर्गः= अविद्या आदि दोषों को जला डालने वाले तेजो रूप। देवस्य = दान शील, द्योतन शील परमेश्वर का। धीमहि= हम ध्यान करते हैं। धियः=बुद्धियों को। यो=जो नः=हमारी। प्रचोदयात्=प्रेरणा करे, सन्मार्ग की ओर अग्रसर करे।

भूः भुवः और स्वः ये तीनों लोक ॐकाररूप परब्रह्म ही हैं। हम उस परब्रह्म का ध्यान कर रहे हैं, जो सभी की आत्मा होता हुआ सभी के द्वारा आत्म अनुभव-प्रमाण से जाना हुआ है, जो इस अखिल ब्रह्माण्ड रूपी प्रपंच को सृष्टि आदि कृत्यों द्वारा विकास में लाता है, जो आनन्दमय होने के कारण सभी के द्वारा वरण करने योग्य है, जो अविद्या को जला देने वाला ज्ञानमय तेज है तथा जिसे हम प्रार्थना कर रहे हैं कि वह हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रवृत्त करे।

—×:※:×—

The three worlds consisting of Earth, Atmosphere and sky are the forms of Absolute God called OM. We are meditating on that Absolute God who, being the self of all, is known to all through their self experiance; who, through the activities of Creation, preservation etc. Makes this whole universe evolve; who being bliss and bliss alone, is worthy to be liked by all. Who is the fire of knowledge which burns all ignorance and to whom we pray that he may guide and lead our intellects on the right path.

नोट:— १. हम इस मंत्र के अनुवादार्थ प्रो० बलजिन्नाथ जी पण्डित के अत्यन्त आभारी हैं।
२. निःशुल्क प्राप्तिस्थानः-
चमन लाल सप्रू द्वारा कश्मीर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, श्रीनगर

Bansi Art Press Srinagar.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अग्निहोत्र

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अग्निहोत्र

सृष्टीके उत्पत्तीके साथही परमपिता परमात्माने वेदवाणीद्वारा अखिल मानवसमाजके कल्याणका मार्ग उपदिष्ट किया, जो यज्ञ–दान–तप–कर्म और स्वाध्याय इन पाँच शब्दोंसे निर्दिष्ट पंचसाधन मार्ग कहलाता है।

वेद किसीं विशेष प्रदेश या मानवी वंशकी बपौती नहीं है।

वेदोंकी भाषा संस्कृत, यह सभी भाषाओंकी जननी है। संस्कृत भाषाके माध्यमसे परमात्माने अखिल जगतको ज्ञानका प्रकाश दिया है।

आज वायुमण्डल दूषित होनेके कारण सर्वत्र दुःख, दौर्मनस्य तथा अशांती दिखाई दे रहे हैं। अग्निहोत्रके आचरणसे वायुमण्डल शुद्ध हो जाता है। वायुमण्डलशुद्धीके कारण प्राणशुद्धी होती हैं, और इसका कल्याणकारी परिणाम अपने आप मनकी कक्ष्यामें संक्रमित हो जाता है। सुखी जीवनके लिये मनकी शुद्धी आवश्यक है अतः अग्निहोत्र प्रत्येक मनुष्यके लिए परमावश्य है। आप चाहें हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, पारसी, यहूदी, सिख, जैन, इत्यादी किसीभी मतमे विश्वास करें, मनःशुद्धी आपको अपने अपने मतका एक अच्छा सदस्य बनायेगी।

वेदोंद्वारा उपादिष्ट पंचसाधनमार्ग यह मूलधर्म है। सभी अवतार, पैगम्बर, नबी, और सन्त इसी पंचसाधनमार्गका संदेश देतें आये हैं।

निम्नलिखित तीन घटकोंद्वारा अग्निहोत्रका असर होता है।

(१) सूर्योदय तथा सूर्यास्तके समय उच्चारित मंत्रोंके कंपनोंका असर.

(२) अग्निमें विशिष्ट पदार्थोंका ज्वलन, और उससे उत्पन्न होनेवाले वायू.

(३) 'न मम' इन शब्दोंमे सूचित शरणागतवृत्तीका अभ्यास.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अग्निहोत्रकी कार्यपद्धती

प्रत्यक्ष विधि

सूर्योदय : सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदं न मम ।

(प्रथम आहुति)

प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम ।

(दूसरी आहुति)

प्रात:कालका अग्निहोत्र समाप्त

सूर्यास्त : अग्नये स्वाहा, अग्नये इदं न मम ।

(प्रथम आहुति)

प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम ।

(दूसरी आहुति)

सायंकालका अग्निहोत्र समाप्त ।

अग्नि : अग्नि सिर्फ गोवंशके गोबरसे बने कंडलोंसे निर्माण करना चाहिये। गोवंशका गोबर यहाँ केवल गाय तथा इसके वंशके ही गोबरका निर्देश करता है, उसमें अन्य किसीभी प्राणिओं के गोबरका प्रयोग नहीं करना चाहिये। गोमयमें वो गुण विहित है जो वातावरणके शुद्धीमें प्रकर्षसे काम आते हैं।

आहुति देनेके समय आग्निको पूर्ण प्रज्वलित रखना चाहिये। अग्नि निर्माण करनेके लिये घीका दीपक, गुग्गुल (गूगल), या कर्पूर इनका प्रयोग करें, क्योंकी इससे वातावरणमें प्रदूषण बढ़ेगा नहीं। इनके उपलब्ध न होनेपर यदि गॅस या तेलके स्टोवका प्रयोग करना पड़े तो गोबरके कंडलोंको चिमटे में पकड़कर स्टोव की ज्वालामें जलाईये। अग्निका निर्माण समिधाओंसेभी किया जा सकता है।

समय : आपके रहनेके स्थानका ठीक सूर्योदय और सूर्यास्तका समय अग्निहोत्रके लिये निर्धारित समय है। दिनके ये दो महत्त्वपूर्ण संधिकाल है, और इस समय प्रकृतिमें बहुत महत्त्वके परिवर्तन

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

होते हैं। इन दो समय वैश्विक किरनोंके (Cosmic-Rays) पृथ्वीपर होनेवाले आघातमें असाधारण परिवर्तन हो जाते हैं। अग्निहोत्रकी आहुति ठीक इसी समयपर देनी चाहिये। सूर्योदय और सूर्यास्तका ठीक समय पंचांगसे या स्थानिक समाचार पत्रोंसे या ऑबझरवेटरी (वेधशाला) से आसानीसे जाना जा सकता है। यदि इस समय का उल्लंघन हुआ तो वो अग्निहोत्र नही होगा।

मंत्र : मन्त्रोच्चार अर्धविराम आदि चिह्नोंके अनुकूल उचित विरामके साथ करना चाहिये। मन्त्रोच्चार न अत्यन्त मन्दगतिसे और न ही अत्यन्त शीघ्र गतिसे करना है। उच्चार न तो अधिक ऊँचे स्वर से हो न तो मन ही मन। ये शब्द सद्भावना निर्माण करनेवालें हैं। मन्त्रोके उचित उच्चारसे उत्पन्न होनेवाले कंपन मनपर गहरा असर करते हैं।

आहुति:प्रत्येक आहुतिके लिये जितने पाँचो उंगलियोंके अग्रभाग मे पकडे जा सके उतने चाँवल काफी हैं। चाँवल रखने के लिये छोटी थाली लिजिये, अथवा चाँवल बाये हाँथ की हथेलीमें रखिये। चाँवलोंको ठीक तरीकेसे घी लगाईये। **अग्निहोत्र के लिये सिर्फ गायके घीका प्रयोग करना आवश्यक है।** प्रत्येक मन्त्रके उच्चारण के बाद एक एक आहुति दीजिये।

आहुति पूर्ण जलने तक मन एकाग्र करनेका प्रयास कीजिये। संभव हो तो प्रत्येक अग्निहोत्रके बाद अधिकसे अधिक समय ध्यानके लिये देनेका प्रयास करें।

परिवारमें एक व्यक्ति आहुति दे। सभीको आहुति देनेकी जरूरत नहीं। अग्निहोत्रके समय दूसरे व्यक्तीभी उपस्थीत रहनेका निश्चय करें तो उन्हें भी अग्निहोत्रसे लाभ होगा। यदी परिवारमें आहुति देनेवाला व्यक्ति, या अग्निहोत्र के पास

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

बैठनेवाले व्यक्ति कही सफर पर जायें तो वे अग्निहोत्र का सामान अपने साथ ले जाकर, उस जगह के निर्धारित समयपर आहुति दे सकते हैं। आहुति देनेवाले व्यक्तिके अनुपस्थितिमें परिवार का अन्य कोई सदस्य आहुति दे सकता है। यदि परिवारके सभी लोगोंको अन्यत्र जाना हो तो अपने घरपर आहुति देनेके लिये मित्र या पडोसीकोभी कहा जा सकता है, यदि संभव है। कृपया अग्निहोत्रके स्थानको साफ और पवित्र रखनेका प्रयास करें। अग्निहोत्रके पहले स्नान इत्यादीसे शरीरको बाह्यरूपसे शुद्ध करनेका प्रयत्न करें। यदि सायंकालमें स्नान करनेका अभ्यास नहीं हो तो अग्निहोत्रसे पहले हाँथ, पैर और मुँह धोना ठीक है।

आग्निहोत्रके अग्निको स्वयं ही शांत होने दे, इसे बुझाने का प्रयत्न न करे। भस्मको अग्नि-होत्रके पात्रसे निकालकर दूसरें डिब्बमें या थैलिमें रखे। उसे पौधें और वृक्षोंमें खादके रूपमें डालें। भस्मको निरर्थक समझकर कुडादानमें न डाले।

हमारा सुख बाह्यपारीस्थितियोंके प्रति हमारी मानसिक प्रतिक्रियाओंपर निर्भर है। अग्निहोत्र मान-सिक उद्वेग और बूरी प्रवृत्तियोंको नष्ट करता है, और उससें मन:शांतीका लाभ होता है। अग्नि-होत्रसे मन एकाग्र करनेमें मदत होती है। अतएव अग्निहोत्रसे ऐहिक तथा पारलौकिक कल्याण होना संभव है। कई सालोंके प्रयत्नोंके बादभी जो प्राप्त नहीं होते ऐसे सुपरिणाम आग्निहोत्रके आचरणसे जल्दही अनुभव आते हैं।

कोईभी व्यक्ति थोडेसे निश्चयसे अग्निहोत्रका आचरण कर सकता है।
आजही अग्निहोत्रका प्रारंभ करें और सृष्टिचक्र सुचारूपसे चलानेके कार्यमे ईश्वरसेवा करके अपना जीवन आनंदमय करे।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्राप्तिस्थान - विद्या विलास,
११८३ शिवाजीनगर, पुणें ४११००५.

HINDI.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri